पुस्तक मिलने का पताः—

(१) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल।

मु० बलुन्दा (मारवाड़)।

(२) बाबू कोठारी जवानमल चान्दमल।

मु० सिराजगंज (पबना)।

विषय पृष्ठा

विषय		पृष्ठ

विषय पृष्ठा

उपदेशिक ढालाँ—

निवेदन ।

मातार्जी की उत्कट इच्छा थी कि एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जाय जो आत्मार्थी जनोंके स्वाध्याय और ज्ञानवृद्धिमें सहायक हों। उन्हीं की सद्प्रेरणा से यह प्रस्तुत पुस्तक आप लोगों की सेवा में उपस्थित की गयी है। संग्रह कैसा हुआ है? इसके निर्णायक आप लोग हैं। पुस्तक प्रकाशित करना मेरा प्रथम प्रयास है। ऐसी अवस्था में अनेकों त्रुटियें रह जानी सम्भव हैं। आशा है उदार सज्जनवृन्द सुधार कर पढ़ेंगे एवं मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे, ताकि द्वितीयावृत्ति में संशोधन कर दी जाय।

भवदीय—

कोठारी चान्दमल ।

चान्दमल कोठारी।

वलुन्दा, (मारवाड़)।

॥ मंगलाचरण ॥

दोहा ।

सिद्धश्री परमातमा, अरिगंजन अरिहन्त ।
इष्ट देव वन्दूं सदा, भय भंजन भगवंत ॥१॥
अरिहन्त सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवझाय ।
साधु सकल के चरणकुं, वन्दूं शीश नमाय ॥२॥
शासन नायक समरिये, भगवन्त वीर जिनन्द ।
अलिय बिघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥३॥
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भण्डार ।
श्री गुरु गौतम समरिये, वंछित फल दातार ॥४॥
श्री गुरुदेव प्रसाद सें, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यूं घन बरसत बेलितरु, फूल फलन की वृद्ध ॥५॥

पंच परमेष्ठी देव को, भजनपुर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सबी, होवे परम कल्याण ॥६॥

श्रीजिन युगपद् कमल में, मुझ मन भमर वसाय ।
कब उगे वो दिनकरु, श्रीमुख दरशन पाय ॥ ७ ॥

नवकार मंत्र १०८ गुण सहित ।

॥ णमो अरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवन्तने

ते अरिहन्त भगवन्त केहवा छै १२ बारे गुणे करी सहित छै ते कहै छै—अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भामण्डल ६ फटिक सिंहासण ७ आशोक वृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९ देव दुन्दुभी १० चमरबीजै ११ छत्र धारे १२

॥ णमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवन्तने ।

ते सिद्ध भगवन्त केहवा छै आठ गुणे करी सहित छै ते कहै छै-केवल ज्ञान १ केवल दर्शण २

आत्मिक सुख ३ क्षायक समकित ४ अटल अव-गाहणा ५ अमुर्त्तिभाव ६ अगुरु लघु भाव ७ अन्त-राय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ षटत्रीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै—आरजदेश ना उपना १ आरज कुल ना उपना २ जातिवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोवणा दूसरा पासे कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल ना जाण होवे १३ तिक्षण बुद्धि होवे १४ घणा देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८ सूत्र अर्थ दोना रा जाण होवे १९ कपट करी पूछै तो छलावै नहीं २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा

जाण होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीखने समर्थ २५ प्रायश्चित्तना जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज बचन बोले २८ परीषह जीते २६ समय परसमय ना जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोम चन्द्रमा जिसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६।

पुनः

५ पांच इन्द्री जीते च्यार कषाय टाले, नव-बाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५, ५ पंच सुमति पाले इर्या १ भाषा २ ऐषणा ३ अयाण भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५, ३ तीन गुप्ति मन १ बचन २ काय गुप्ति ३।

इति षटत्रीस गुण सम्पूर्ण।

॥ णमो उवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस

गुणे करी सहित छै ते कहै छै—१४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावे।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे।

॥ णमो लोए सव्व साहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषै सर्व साधु मुनिराजोंने

ते साधु मुनिराज केहवा छै सत्तवीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै—५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचय १५ करण संचय १६ जोग संचय १७ त्नमावंत १८ वैराग्यवंत १६ मन समा धारणिया २० वचन समा धारणिया २१ काय समाधारणिया २२ नाण संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां समो अहियासे २७

२४ तीर्थंकरों के नाम।

१ पहला श्री ऋषभनाथजी।

२ दूजा श्री अजितनाथ स्वामीजी।

३ तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीजी।

४ चौथा श्री अभिनन्दननाथ स्वामीजी।

५ पांचवां श्री सुमतिनाथ स्वामीजी।

६ छट्ठा श्री पद्मप्रभु स्वामीजी।

७ सातवां श्री सुपारसनाथ स्वामीजी।

८ आठवां श्री चन्द्रप्रभ स्वामीजी।

९ नवमां श्री सुविधनाथ स्वामीजी।

१० दशवां श्री शीतलनाथ स्वामीजी।

११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी।

१२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी।

१३ तेरमां श्री विमलनाथ स्वामीजी।

१४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी।

१५ पन्दरमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी।

१६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी।

१७ सतरमां श्री कुंथुनाथ स्वामीजी।

१८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी।

१९ उगणीसमां श्री मल्लिनाथ स्वामीजी।

२० बीसमां श्री मुनिसुब्रतनाथ स्वामीजी।

२१ इक्कवीसमां श्री नमिनाथ स्वामीजी।

२२ बावीसमां श्री अरिष्ठनेमनाथ स्वामीजी।

२३ तेवीसमां श्री पार्श्वनाथ स्वामीजी।

२४ चौवीसमां श्री वर्द्धमान स्वामीजी।

११ गणधरों के नाम।

१ इन्द्रभूति
२ अग्निभूति
३ वायुभूति
४ व्यक्त
५ सुधर्मा
६ मण्डित
७ मौर्यपुत्र
८ अकम्पित
९ अचलभ्राता
१० मेतार्य
११ प्रभास

१६ सतियों के नाम।

१ ब्राह्मी
२ सुन्दरी
३ चन्दनबाला
४ राजेमती
५ द्रोपदी
६ कौशल्या
७ मृगावती
८ सुलसा
९ सीता
१० सुभद्रा

११ शैव्या	१४ चेलणा
१२ कुन्ती	१५ प्रभावती
१३ दमयन्ती	१६ पद्मावती

चत्तारि मंगलं की पाटी।

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहुमंगलं, केवलि पन्नन्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपन्नन्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि, सिद्धासरणं पवज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नन्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ए चार शरणा सगा और सगा नहीं कोय।
जो नर नारी आदरे अक्षय अमर पद होय॥

अथ श्री साधु वन्दना।

नमूं अनंत चौवीसी, ऋषभादिक महावीर। आर्य क्षेत्र मां घाली धर्म नी सीर॥१॥ महा अतुल्य बली नर, शूरवीर ने धीर। तीरथ प्रवर्त्तावी; पहोंता

भवजल तीर ॥ २ ॥ सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर बीस। छे अढीद्वीपमां, जयवन्ता जगदीश ॥ ३ ॥ एक सौ ने सितर, उत्कृष्टा पद जगीश। धन्य मोटा प्रभुजी, जेहने नमावूं शीश ॥ ४ ॥ केवली दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव क्रोड़। मुनि दोय सहस्र कोड़ी, उत्कृष्ट नव सहस्र कोड़ ॥ ५ ॥ विचरै विदेह में, मोटा तपस्वी घोर। भावे करी वन्दू, टाले भव नी खोड़ ॥ ६ ॥ चौवीसे जिन ना सघला ए गणधार। चवदेसे ने बावन, ते प्रणमूं सुखकार ॥ ७ ॥ जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिणन्द। गौतमादिक गणधर, वर्त्ताव्यो आणन्द ॥ ८ ॥ श्री ऋषभदेव ना भरतादिक सौ पूत। वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भुत ॥ ९ ॥ केवल उपराजी, करि करणी करतूत। जिनमत दीपावी, सघला मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वर ना, हुआ पाटोधर आठ। आदित्य जशादिक पहोंता शिवपुर वाट ॥ ११ ॥ श्री जिन अन्तर ना, हुवा पाट असंख्य। मुनि मुक्ति पहोंता

टाली कर्म नो वंक ॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमि नमूं अणगार। जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र रमणि परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर हरकेशी, चित्त मुनीश्वर सार। शुद्ध संयम पाली, पाम्या भव नो पार ॥ १४ ॥ वली इखुकार राजा, घर कमलावती नार। भृगु ने जशा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥ छये छति ऋद्धि छांड़ी ने, लीधो संयम भार। इम अल्प कालमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥ वली संजती राजा, हिरण आहिड़े जाय। मुनिवर गद्भाली, आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारित्र लेई ने, भेट्या गुरु ना पाय। क्षत्री राजऋषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥ १८ ॥ वली दश चक्रवर्त्ति राज्य रमणी ऋद्धि छोड़। दश मुक्ति पहोंता, कुल कुल ने शोभा चोड़ ॥ १९ ॥ इण अवसर्प्पिणी मां, आठ राम गया मोक्ष। बलभद्र मुनीश्वर गया, पंचमें देवलोक ॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान। पछे इन्द्र हटायो, दियो छः काय अभय दान ॥ २१ ॥ करकंडू प्रमुख, चारे प्रत्येक

बोध। मुनि मुक्ति पहोंता, जीता कर्म महा जोध ॥ २२ ॥ धन्य मोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश। मुनिवर अनाथी, जीता राग ने रीश ॥ २३ ॥ वली समुद्रपाल मुनि, राजेमति रहनेम। केशी ने गौतम पाम्या शिवपुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजय घोष मुनि, जयघोष वली जाण। श्रीगर्गाचार्य, पहोंता छै निर्वाण ॥ २५ ॥ श्री उत्तराध्ययन माँ, जिनवर किया बखाण। शुद्ध मन से ध्यावो, मन में धीरज आण ॥ २६ ॥ वली खन्धक सन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह। महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठिन करीने, झोंसी अपणी देह। गया अच्युत देवलोके, चवी लेसे भव छेह ॥ २८ ॥ वली ऋषभदत्त मुनि, सेठ सुदर्शण सार। शिवराज ऋषिश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार। ए चारे मुनिवर, पहोंता मोक्ष मझार ॥ ३० ॥ भगवन्तनी माता, धन्य धन्य सती देवानन्दा। वली सती जयन्ति, छोड़ दिया घर फन्दा ॥ ३१ ॥ सती मुक्ति पहोंती,

बली ते वीरनी नन्द। महा सती सुदर्शना घणी सतियांना वृन्द ॥३२॥ वली कार्तिक शेठे, पड़िमां वही शूरवीर। जिम्यो मोरां ऊपर, तापस बलती खीर ॥ ३३ ॥ पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र आठ धीर। मरी हुआ सकेंद्र, चवी लेसे भव तीर ॥ ३४ ॥ वली राय उदाई, दियो भाणेजने राज। पछी चारित्र लेई ने, सार्या आतम काज ॥ गंगदत्त मुनि आनन्द, तरणतारण जिहाज। कुशल मुनि रोहो, दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुन-क्षत्र मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार। आराधक हुइने, गया देवलोक मझार ॥ ३७ ॥ चवि मुक्ति जासे, वलि सिंह मुनीश्वर सार। बीजा पण मुनिवर, भगवतीमां अधिकार ॥३८॥ श्रेणिकना बेटा, मोटा मुनिवर मेघ। तजी आठ अन्तेउरी, आण्यो मन संवेगी ॥ ३९ ॥ वीर पै व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग। गया विजय विमाणे, चवि लेसे शिव वेग ॥ ४० ॥ धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रिसे नार। तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ॥४१॥ सुखदेव

संन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार। पञ्चशयसुं सेलक, लीधो संयम भार ॥४२॥ सर्व सहस्र अढ़ाई, घणा जीवांने तार। पुंडरगिरि ऊपर, कियो पादो गमण संथार ॥४३॥ आराधक थईने, कीधो खेवो पार। हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥४४॥ धन्य जिन-पाल मुनिवर, दोय धनावा साध। गया प्रथम देव-लोके, मोक्ष जासे आराध ॥४५॥ श्रीमल्लिनाथना छः मित्र मयाबल प्रमुख मुनिराय। सर्वे मुक्ति सिधाव्या मोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ बलि जितशत्रु राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान। पोते चारित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य तेतलि मुनिवर, दियो छः काय अभयदान। पोटिला प्रति बोध्या, पाम्या केवल ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पाण्डव, तजी द्रौपदी नार। स्थविरानी पासे, लीधो संयम भार ॥ ४९ ॥ श्री नेमि वंदणनो, एहवो अभिग्रह कीध। मास मासखमण तप, शेत्रुञ्जय जई सिद्ध ॥ ५० ॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार। किड़ियानी करुणा, आणी दया रस सार ॥ ५१ ॥

कडुआ तुंबानो, कीधो सघलो आहार। सर्वार्थ सिद्ध पहोंता, चवि लेसे भवपार॥ ५२॥ वली पुंडरिक राजा, कुंडरिक डिगियो जान। पोते चारित्र लेई ने, न घाली धर्ममां हाण॥ ५३॥ सर्वार्थ सिद्ध पहोंता, चवि लेसे भव पार। श्री ज्ञाता सूत्र में, जिनवर कह्या बखाण॥ ५४॥ गौतमादिक कुमर, सगा अढारे भ्रात। सर्व अंधक विष्णु सुत, धारणी ज्यांरी मात॥ ५५॥ तजी आठ अंतेउरी, काढी दीक्षानी वात। चारित्र लेइने, कीधी मुक्ति नो साथ॥ ५६॥ श्री अनेक सेनादिक, छऊं सहोदर भाय। वसुदेव ना नन्दन, देवकी ज्यांरी माय॥ ५७॥ भद्दीलपुर नगरी, नाग गहावए जाण। सुलसां घर वधिया, सांभली नेमिनी वाण॥ ५८॥ तजी बत्रीस अंतेउरी, निकलिया छिटकाय। नल कुबेर समाणा, भेट्या श्री नेमिना पाय॥ ५९॥ करी छठ २ पारणा, मन में वैराग्य लाय। एक मास संथारे, मुक्ति विराज्या जाय॥ ६०॥ वली दारुण सारण, सुमुख दुमुख मुनि-

राय। बली कुमर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ़ मांय ॥ ६१ ॥ बसुदेवना नंदन, धन्य २ गजसुकुमाल। रूपे अति सुन्दर, कलावंत वय बाल ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जंजाल। भिक्षुनी पड़िमा, गया मशाण महाकाल ॥ ६३ ॥ देखी सोमिल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल। खेरना खीरा, शिर ठविया असराल ॥ ६४ ॥ मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी झाल। परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ॥ ६५ ॥ धन्य जाली मयाली, उवयाला-दिक साध। संव ने प्रद्युमन, अनिरुद्ध साधु अगाध ॥ ६६ ॥ बली सचनेमी दृढ़नेमी, करणी कीधी वाध। दश मुक्ते पहुंता, जिनवर वचन आराध ॥ ६७ ॥ धन्य अर्जुन माली, कस्रो कदाग्रह दूर। वीर पै व्रत लेई ने, सत्यवादी हुआ शूर ॥ ६८ ॥ करी छठ २ पारणां, क्षमा करी भरपूर। छःमासे मांही, कर्म किया चकचूर ॥ ६९ ॥ कुमर अइमुत्ते दीठा, गौतम स्वाम। सुणी वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥ ७० ॥ चारित्र लेई ने पहोंता

शिवपुर ठाम। धूर आदि मकाइ, अंत अलक्ष मुनि नाम ॥ ७१ ॥ वली कृष्णरायनी, अग्रमहिषी आठ। पुत्र बहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥७२॥ यादवकुल सतियां, टाली दुःख उचाट। पहोंता शिवपुर में, ए छै सूत्र नो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिक नी राणी, कालियादिक दश जाण। दश पुत्र वियोगे, सांभली वीरनी बाण ॥ ७४ ॥ चंदनवाला पै संजम लेई हुआ जाण। तप करी देह झोंसी, पहोंता छै निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृपनी नार। सघली चंदनवाला पै, लीधो संयम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहोंता मुक्ति मझार। ए नवूं जणानो, अंतगड़मां अधिकार ॥७७॥ श्रेणिकना वेटा, जालियादिक तेवीस। वीर पै व्रत लेई ने, पाल्यो विश्वावीस ॥ ७८ ॥ तप कठन करी ने, पूरी मन जगीश। देवलोके पहोंता, मोक्ष जासे तज रीश ॥ ७९ ॥ काकंदीनो धन्नो, तजी बत्रीसे नार। महावीर समीपे, लीधो संयम भार ॥८१॥ करी छठ छठ पारणो, आंबिल

उछित्त आहार। श्री वीर वखाण्यो, धन्य धन्नो अणगार॥ ८१॥ एक मास संथारे, सर्वार्थसिद्ध पहोंत। महाविदेह क्षेत्रमां, करसे भवनो अन्त॥ ८२॥ धन्ना नी रीते, हुवा नवूं संत। श्री अनुत्तरोववाईमां, भाख गया भगवंत॥ ८३॥ सुबाहु प्रमुख, पांच पांचसे नार। तजि वीर पै लीधा, पंच महाव्रत सार॥ ८४॥ चारित्र लेई ने, पाल्यो निरतिचार। देवलोके पहोंता, सुखविपाक अधिकार॥ ८५॥ श्रेणिकना पौत्रा, पोमादिक हुवा दश। वीर पै व्रत लेई ने, काढ्यो देहीनो कस॥ ८६॥ संजम आराधी, देवलोकमां जई वस। महाविदेह क्षेत्र मां, मोक्ष जासे लेई जश॥ ८७॥ बलभद्रना नन्दन, निषधादिक हुवा बार। तजी पचास अंतेउरी, त्याग दियो संसार॥ ८८॥ सहु नेमि समिपे, चार महाव्रत लीध। सवार्थसिद्धि पहोंता, होसे विदेह में सिद्ध॥ ८९॥ धन्नो ने सालिभद्र, मुनीश्वरां री जोड़। नारीना बन्धन, तत्क्षण न्हाख्या तोड़॥ ९०॥ घर कुटुम्ब कबीलो,

धन कंचननी कोड़। मास मासखमण तप, टालसे भवनी खोड़ ॥६१॥ श्रीसुधर्मा स्वामीना शिष्य, धन्य धन्य जम्बू स्वाम। तजी आठ अन्तेउरी, मातपिता धन धाम ॥ ६२ ॥ प्रभवादिक तारी, पहोंता शिव-पूर ठाम। सूत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥ ६३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नन्द। शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फन्द ॥६४॥ बली खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल। परीषह सहीने भव, फेरा दिया टाल ॥६५॥ बली खंधक ऋषिना हुआ पांचसे शिष्य। घाणीमां पिल्यां, मुक्ति गया तज रीश ॥ ६६ ॥ संभुति विजय शिष्य, भद्र-वाहु मुनिराय। चवदे पूरवधारी, चन्द्रगुप्त आण्यो ठाय ॥ ६७ ॥ बली आद्रकुमार मुनि, स्थूलिभद्र नंदिषेण। अरणक अइमुत्तो, मुनीश्वरांनी श्रेण ॥ ६८ ॥ चौबीसे जिनना मुनिवर, संख्या अठा-वीस लाख। ऊपर सहस्र अड़तालीस, सूत्र पर-परा भाख ॥६९॥ कोई उत्तम बांचो, मोंढे जयणा राख। उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लागे इम भाख

॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यावो निर्मल ध्यान। गज हौदे पायुं, निर्मल केवल ज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदेश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय। चारित्र लेई ने, मुक्ति गयी सिद्ध होय ॥ १०२ ॥ चौवीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौवीस। सती मुक्ति पहोंती, पूरी मन जगीश ॥ १०३ ॥ चौवीसे जिननी, सर्व साधवी सार। अड़तालीस लाख ने, आठसे सितर हजार ॥ १०४ ॥ चेड़ानी पुत्री, राखी धर्मसूं प्रीत। राजेमती विजया, मृगावती सुविनीत ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरैहा, द्रौपदी दमयन्ती सीत। इत्यादि सतियां, गई जमारो जीत ॥ १०६ ॥ चौवीसे जिनना, साधु साध्वी सार। गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार ॥ १०७ ॥ इण अढीद्वीपमां, घरड़ा तपस्वी बाल। शुद्ध पञ्च महाव्रतधारी, नमो नमो तिण काल ॥ १०८ ॥ ए जतियां सतियां ना, लीजे नितप्रते नाम। शुद्धे मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम ॥ १०९ ॥ ए जतियां सतियांसूं, राखो उज्ज्वल

भाव। एम कहै जयमलजी, एहिज तरणनो दाव ॥ ११० ॥ संवत अठारने, वर्ष साते सिरदार। गढ़ झालोरामां, एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥

❀ अथ चौबीसी पद ❀

१-श्री आदिनाथजी का स्तवन।

॥ उमादे भटियाणी ॥ एदेशी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमूं शिरनामी तुम भणी। प्रभु अन्तरजामी आप। मोपर महर करीजै हो, मेटीजै चिन्ता मन तणी। म्हारा काटो पुरङ्कित पाप ॥ श्री आदीश्वर स्वामी हो ॥टेर॥१॥ आदि धरमकी कीधी हो, भर्तक्षेत्र सर्पणी काल में। प्रभु जुगलिया धरम निवार। पहिला नरवर १ मुनिवर हो २, तीर्थङ्कर ३ जिनहुवा ४ केवली ५। प्रभु तीरथ थाप्या चार ॥ श्री ॥ २ ॥ मा मरुदेव्या थारी हो, गज हौदे मुक्ति पधारिया। तुम जनम्यां

ही परमाण। पिता नाभ महाराजा हो, भव देव तणो कर नर थया। प्रभु पाम्या पद निरवाण॥ श्री०॥ ३॥ भरतादिक सौ नंदन हो, वे पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी। प्रभु ए थारा अंग जात। सगला केवल पाया हो, समाया अविचल जोत में। कांइ त्रिभुवन में विख्यात॥ श्री०॥ ४॥ इत्यादिक बहु ताख्या हो, जिन कुल में प्रभु तुम ऊपना। कांइ आगम में अधिकार। और असंख्या ताख्या हो, ऊधाख्या सेवक आपरा। प्रभु शरणा ही आधार॥ श्री०॥ ५॥ अशरण शरण कहीजै हो, प्रभु विरद विचारो सायवा। अहो गरीब निवाज। शरण तुम्हारी आयो हो, हूं चाकर निज चरना तणो। म्हारी सुणिये अरज अवाज॥ श्री०॥६॥ तू करुणा कर ठाकुर हो, प्रभु धरम दिवाकर जग गुरु। कांइ भव दुख दुकृत टाल। विनयचन्दने आपो हो, प्रभु निज गुण संपत सास्वती। प्रभू दीनानाथ दयाल॥ श्री०॥ ७॥

२-श्री अजितनाथजी का स्तवन।

॥ कुविसन मारग माथे रे धिग ॥ एदेशी ॥

श्री जिन अजित नमो जयकारी, तुम देवनको देवजी। जय शत्रु राजाने विजिया राणी को, आतम जात तुमेवजी। श्री जिन अजित नमो जयकारी ॥ टेर ॥ १ ॥ दूजा देव अनेरा जगमें, ते मुझ दाय न आवेजी। तह मन तह चित्त हमने एक, तुहिज अधिक सुहावैजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेव्या देव घणा भव २ में, तो पिण गरज न सारी जी। अबकै श्री जिनराज मिल्यो तूं, पूरण पर उपकारीजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्रिभुवन में जश उज्वल तेरो, फैल रह्यो जग जानेंजी। बंदनीक पूजनीक सकल लोकको, आगम एम बखानें जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तू जग जीवन अंतरजामी, प्राण आधार पियारो जी। सब विधिलायक संत सहायक, भक्त बछल बृद थारो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि को दाता, तो सम अवर न कोई जी। बधै तेज सेवक को दिन दिन, जेथ तेथ

जिम होई जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ अनन्त ज्ञान दर्शण संपति ले, ईश भयो अविकारी जी। अविचल भक्ति विनयचंद कुं देवो, तो जाणूं रिझवारी जी ॥ श्री० ॥ ७ ॥

३-श्री सम्भवनाथजी का स्तवन।

॥ आज म्हारा पारसजी नै चालो वन्दन जइए ॥ एदेशी ॥

आज म्हारा संभव जिनके, हित चितसूं गुण गास्यां। मधुर २ स्वर राग अलापी, गहरे शब्द गुंजास्यां राज। आज म्हारा संभव जिनके, हित चितसूं गुण गास्यां ॥ आ० ॥ १ ॥ नृप जितारथ सेन्या राणी, ता सुत सेवक थास्यां। नवधा भक्त भाव सों करने, प्रेम मगन हुई जास्यां राज ॥ आ० ॥ २ ॥ मन बच काय लाय प्रभु सेती, निशदिन श्वास उश्वास्यां। संभव जिनकी मोहनी मूरति, हिये निरन्तर ध्यास्यां राज ॥ आ० ॥ ३ ॥ दीन दयाल दीन बंधव के, खाना जाद कहास्यां। तन धन प्राण समरपी प्रभु को, इन पर बेग रिझा-

स्यां राज ॥ आ० ॥४॥ अष्ट कर्म दल अति जोरा-
वर, ते जीत्यां सुख पास्यां। जालम मोह मार कै
जगसे, साहस करी भगास्यां राज ॥ आ० ॥ ५ ॥
ऊबट पंथ तजी दुरगति को, शुभगति पंथ समा-
स्यां। आगम अरथ तणे अनुसारे, अनुभव दशा
अभ्यास्यां राज ॥ आ० ॥६॥ काम क्रोध मद लोभ
कपट तजि, निज गुण सूं लवलास्यां। विनैचन्द
संभव जिन तूठौ, आवा गमन मिटास्यां राज
॥ आ० ॥ ७ ॥

४-श्री अभिनन्दन स्वामीजी का स्तवन।

॥ आदर जीव क्षिम्यां गुण आदर ॥ एदेशी ॥

श्री अभिनन्दन, दुःख निकन्दन, वन्दन पूजन
योगजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ संबर राय सिद्धारथ राणी,
जेहनों आतम जात जी। प्राण पियारो साहिब
सांचो, तुही जो मातनें तातजी ॥ श्री० ॥ २ ॥
कैइयक सेव करै शङ्कर की, कैइयक भजै मुरारी

जी। गणपति सूर्य उमा कैई सुमरै, हूं सुमरूं अवि-
कारजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दैव कृपा सूं पामें लक्ष्मी,
सो इन भवको सुक्ख जी। तो तूठां इन भव पर
भवमें, कदी न व्यापै दुःखजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥
जदपी इन्द्र नरिन्द्र निवाजें, तदपी करत निहाल
जी। तूं पूजनीक नरिन्द्र इन्द्र को, दीन दयाल
कृपाल जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जब लग आवागमन न
छूटे, तब लग करूं अरदासजी। सम्पति सहित
ज्ञान समकित गुण, पाऊं दृढ़ विसवासजी ॥ श्री०
॥ ६ ॥ अधम उद्धारण विरुद तिहारो, जोवो इण
संसारजी। लाज विनयचन्दकी अब तोनें, भव
निधि पार उतारजी ॥ श्री० ॥ ७ ॥

५-श्री सुमतिनाथजी का स्तवन।

॥ श्रीशीतल जिन साहिबाजी ॥ पदेशी ॥

सुमति जिणेसर साहिबाजी, मगरथ नृप नों
नन्द। सुमङ्गला माता तणो जी, तनय सदा सुख-
कन्द, प्रभु त्रिभुवन तिलो जी ॥ १ ॥ सुमति

सुमति दातार, महा महिमा निलोजी। प्रणमूं बार हजार, प्रभु त्रिभुवन तिलोजी॥ २॥ मधुकर नो मन मोहियोजी, मालती कुसुम सुवास। त्यूं मुझ-मन मोह्यो सही, जिन महिमा कहि न जाय॥ प्रभु० ३॥ ज्यूं पङ्कज सूरज मुखी जी, बिकसै सूर्य्य प्रकाश। त्यूं मुझ मनड़ो गह गहै, कवि जिन चरित हुलास॥ प्रभु०॥ ४॥ पपइयो पीउ पीउ करेजी, जान वर्षाऋतु जेह। त्यूं मो मन निश दिन रहै, जिन सुमरन सूं नेह॥ प्रभु०॥ ५॥ काम भोगनी लालसा जी, थिरता न धरे मन्न। पिण तुम भजन प्रताप थी, दाझे दुरमति बन्न॥ प्रभु०॥ ६॥ भवनिधि पार उतारिये जी, भक्त बच्छल भगवान। विनैचन्द की विनती, मानो कृपा निधान॥ प्रभु०॥ ७॥

६-श्रीपद्मप्रभु स्वामीजीका स्तवन।

॥ श्याम कैसे गजको फन्द छुड़ायो॥ एदेशी॥

पदम प्रभु पावन नाम तिहारो, प्रभु पतित

उद्धारन हारो ॥ टेर ॥ जदपि धींवर भील कसाई, अति पापिष्ठ जमारो। तदपि जीव हिंसा तज प्रभु भज, पावै भवदधि पारो ॥ पदम० ॥ १ ॥ गौ ब्राह्मण प्रमदा बालक की, मोटी हित्या च्यारो। तेहनो करणहार प्रभु भजने, होत हित्या सूं न्यारो ॥ पदम० ॥ २ ॥ वेश्या चुगल चण्डाल जुवारी, चोर महा भट मारो। जो इत्यादि भजै प्रभु तोने, तो निवृतें संसारो ॥ पदम० ॥ ३ ॥ पाप परालको पुञ्ज बन्यो अति, मानो मेरू अकारो। ते तुम नाम हुताशन सेती, सहज्यां प्रजलत सारो ॥पदम०॥४॥ परम धर्मको मरम महारस, सो तुम नाम उचारो। या सम मन्त्र नहीं कोई दूजो, त्रिभुवन मोहन गारो ॥ पदम० ॥ ५ ॥ तो सुमरण बिन इण कलयुगमें, अवर न को आधारो। मैं बलिजाऊं तो सुमरन पर, दिन २ प्रीत बधारो ॥ पदम० ॥ ६ ॥ कुसमा राणीको अङ्गजात तूं, श्रीधर राय कुमारो। बिनैचन्द कहे नाथ निरञ्जन, जीवन प्राण हमारो ॥ पदम० ॥ ७ ॥

७-श्रीसुपार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन।

॥ प्रभुजी दीन दयाल सेवक शरण आयो ॥ एदेशी ॥

श्री जिनराज सुपास, पूरो आश हमारी ॥टेर॥
प्रतिष्ट सैन नरेश्वर को सुत, पृथवी तुम महतारी। सगुण सनेही साहिब सांचो, सेवकने सुखकारी ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक, मन बांछित सुखपूरो। बार बार मुझ बिनती यही, भव २ चिन्ता चूरो ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ जगत् शिरोमणि भगति तिहारी, कल्प वृक्ष सम जाणूं। पूरण ब्रह्म प्रभु परमेश्वर, भव भव तुम्हें पिछाणूं ॥ श्रीजिन० ॥३॥ हूं सेवक तुं साहिब मेरो, पावन पुरुष विज्ञानी। जनम २ जित तिथ जाऊं तो, पालो प्रीति पुरानी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ तारण तरण अरु अशरण शरणको, बिरद इसो तुम सोहे। तो सम दीनदयाल जगत में, इन्द्र नरिन्द्र न को है ॥ श्रीजिन० ॥५॥ स्वयम्भू रमण बड़ो समुद्रों में, शैल सुमेर बिराजै। तू ठाकुर त्रिभुवन में मोटो, भगत कियां दुख भाजै ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ अगम अगो-

चर तूं अविनाशी, अलप अखण्ड अरूपी। चाहत दरश विनैचन्द तेरो, सत चित आनन्द स्वरूपी ॥ श्रीजिन०॥ ७॥

८-श्री चन्द्र प्रभुजी का स्तवन।

॥ चौकनी ॥ परदेशी ॥

मुझ म्हेर करो, चन्द्र प्रभु जग-जीवन अंतरजामी। भव दुःख हरो, सुनिये अरज हमारी। त्रिभुवन स्वामी ॥ टेर ॥ जय जय जगत सिरोमणी, हूं सेवकने तूं धणी। अब तो सूं गाढ़ी बणी, प्रभु आशा पूरो हम तणी ॥ मुझ० ॥१॥ चन्द्पुरी नगरी हती, महासैन नामा नरपति। तसु राणी श्रीलखमा सती, तसु नन्दन तूं चढ़ती रती ॥मुझ० ॥ २ ॥ तूं सर्वज्ञ महाज्ञाता, आतम अनुभव को दाता। तो तूठां लहिये सुखसाता, धन २ जे जगमें तुम ध्याता ॥ मुझ० ॥ ३ ॥ शिव सुख प्रार्थना करसूं, उज्वल ध्यान हिये धरसूं। रसना तुम महिमा करसूं, प्रभु इम भवसागर से तिरसूं

॥ मुझ० ॥ ४ ॥ चन्द चकोरन के मनमें, गाज आवाज होवे घनमें। पिय अभिलाषा ज्यों त्रिय तनमें, त्यों वसियो तं मो चित्त मनमें ॥ मुझ० ॥ ५ ॥ जो सुनजर साहिब तेरी, तो मानो विनती मेरी। काटो भरम करम वेरी, प्रभु पुनरपि नहिं परूं भव फेरी ॥ मुझ० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी। अन्य देव भ्रमना भागी, बिनैचन्द तिहारो अनुरागी ॥ मुझ० ॥ ७ ॥

६-श्री सुविधनाथजी का स्तवन।

॥ वुढापो वेरी आवियो हो ॥ एदेशी ॥

श्री सुविध जिणेसर वंदिये हो ॥ टेर ॥ काकंदी नगरी भली हो, श्री सुग्रीव नृपाल। रामा तसु पट रागनी हो, तस सुत परम कृपाल ॥ श्रीसु० ॥१॥ त्यागी प्रभुता राजनी हो, लीधो संजम भार। निज आतम अनुभाव थी हो, पाम्या प्रभु पद अविकारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अष्ट कर्म नो राजवी हो,

मोह प्रथम क्षय कीन। सुध समकित चारित्र नो हो, परम क्षायक गुणलीन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो, अन्तरायके अन्त। ज्ञान दरशण बल ये त्रिहूं हो, प्रगट्या अनन्ता अनन्त ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अवा वाह सुख पामिया हो, आयु क्षय करनें श्री जिनराय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नाम करम नो क्षय करी हो, अमूर्त्तिक कहाय। अगुरु लघू पण अनुभव्यो हो, गोत्र करम मूकाय ॥ श्री० ॥ ६ ॥ आठ गुणा कर ओलख्या हो, जात रूप भगवन्त। धिनैचन्द के उर बसो हो, अह निश प्रभु पुष्पदंत ॥ श्री० ॥ ७ ॥

१०-श्री शीतलनाथजीकी स्तुति।

॥ जिद्वारो ॥ पदेशी ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री दृढ़रथ नृपति पिता, नन्दा थारी माय। रोम रोम प्रभु मो भणी शीतल नाम सुहाय ॥ जय० ॥ १ ॥ करुणा निध करतार, सेव्यां सुर

तरु जेहवो। वांछित सुख दातार ॥ जय० ॥ २ ॥ प्राण पियारो तूं प्रभु, पतिवरता पति जेम। लगन निरन्तर लग रही, दिन दिन अधिको प्रेम ॥ जय० ॥३॥ शीतल चन्दननी परें, जपता निश दिन जाप। विषय कषाय ना ऊपजै, मेटो भव दुःख ताप ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरत रुद्र प्रणाम थी, उपजै चिंता अनेक। ते दुःख काटो मानसी, आपो अचल विवेक ॥ जय० ॥ ५ ॥ रोगादिक क्षुधा तृषा, सब शस्त्र अस्त्र प्रहार। सकल शरीरी दुःख हरो, दिल सूं बिरुद विचार ॥ जय० ॥ ६ ॥ सुपरसन्न होय शीतल प्रभु, तूं आशा विसराम। विनैचन्द कहै मो भणी, दीजै मुक्ति मुकाम ॥ जय० ॥ ७ ॥

११-श्री श्रेयांसप्रभुकी स्तुति।

॥ राग काफी देशी होरी की ॥

श्रेयांस जिनन्द सुमर रे ॥ टेर ॥

चेतन जाण कल्याण करन को, आन मिल्यो अवसर रे। शास्त्र प्रमान पिछान प्रभु गुन, मन

चञ्चल थिर कर रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्वास उश्वास बिलास भजन को, दृढ़ विश्वास पकर रे। अजपा भ्यास प्रकाश हिये बिच, सो सुमरन जिनवर रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ कंद्रप क्रोध लोभ मद माया, ये सबही पर हर रे। सम्यक् दृष्टि सहज सुख प्रगटै, ज्ञान दशा अनुसर रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ झूंठ प्रपंच जीवन तन धन अरु, सजन सनेही घर रे। छिनमें छोड़ चले पर भवकूं, बान्ध शुभाशुभ थर रे ॥श्री० ॥ ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी, आशा करत अमर रे। ते पूरव सुकृत कर पायो, धरम मरम दिल भर रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ विश्वसैन नृप विला राणी को, नन्दन तूं न बिसर रे। सहज मिटै अज्ञान अविद्या, मुक्त पंथ पग धर रे ॥ श्री० ॥६॥ तूं अविकार बिचार आतम गुण, भ्रम जंजाल न पर रे। पुद्गल चाय मिटाय बिनैचन्द, तूं जिनते न अवर रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

१२-श्री वासुपूज्यजीकी स्तुति ।

॥ फूलसी देह पलकमें पलटै ॥ एदेशी ॥

प्रणमूं बास पूज्य जिन नायक, सदा सहायक तूं मेरो । विषमी वाट घाट भय थानक, परमासय शरणो तेरो ॥ प्रणमूं० ॥ १ ॥ खल दल प्रबल दुष्ट अति दारुण, चौतरफ दिये घेरो । तो पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी, अरियन भी प्रगटै चेरो ॥ प्रणमूं० ॥ २ ॥ बिकट पहार उजार विचालै, चोर कुपात्र करै हेरो । तिण बिरियां करिये तो सुमरण, कोई न छीन सकै डेरो ॥ प्रणमूं० ॥ ३ ॥ राजा बाद-शाह कोइ कोपै, अति तकरार करै छेरो । तदपी तूं अनुकूल हुवै तो, छिनमें छूट जाय केरो ॥ प्रणमूं० ॥ ४ ॥ राक्षस भूत पिशाच डांकिनी, सांकनी भय न आवै नेरो । दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागै, प्रभु तुम नाम भज्यां गहरो ॥ प्रणमूं० ॥५॥ बिष्फोटक कुष्टादिक सङ्कट, रोग असाध्य मिटै देहरो । विष प्यालो अमृत होय प्रगमें, जो विश्वास जिनन्द केरो ॥ प्रणमूं० ॥ ६ ॥ मात जया

वसु नृपके नन्दन, तत्व जथारथ बुध प्रेरो। बे कर जोरि विनैचन्द बिनवे, वेग मिटे मुझ भव फेरो ॥ प्रणमूं० ॥ ७ ॥

१३-श्री विमलनाथ स्वामीका स्तवन।

॥ धिग २ मोह विटम्बना ॥ एदेशी ॥

विमल जिनेश्वर सेविये। थारी वुध निर्मल हो जाय रे ॥ जीवा ॥ विषय विकार बिसार ने, तूं मोहनी करम खपाय रे ॥ जीवा ॥ विमल जिनेश्वर सेविये ॥ १ ॥ सूक्ष्म साधारण पणे। परतेक बनसपति मांय रे ॥ जीवा ॥ छेदन भेदन ते सही। मर मर उपज्यो तिण काय रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥२॥ काल अनन्त तिहागम्यो। तेहना दुःख आगम थी संभाल रे ॥ जीवा ॥ पृथ्वी अप्प तेउ वायु में। रह्यो असंख्या असंख्यातो कालरे ॥जीवा॥वि०॥३॥ एकेन्द्री सूं बेंद्री थयो। पुन्याई अनन्ती वृद्ध रे ॥ जीवा ॥ सन्नी पंचेन्द्री लगे पुन्य बंध्या। अनन्ता

अनन्ता प्रसिद्ध रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव नरक तिरयञ्च में। अथवा माणस भव नीच रे ॥ जीवा ॥ दीन पणे दुःख भोगव्या। इणपर चारों गति बीच रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ५ ॥ अबके उत्तम कुल मिल्यो। भेख्या उत्तम गुरु साधु रे ॥ जीवा ॥ सुण जिन बचन सनेह से। समकित व्रत शुद्ध आराध रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ६ ॥ पृथ्वी पति कीरति भानु को। सामाराणी को कुमार रे ॥जीवा॥ विनैचन्द कहे ते प्रभु। शिर सेहरो हिवड़ा रो हार रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ७ ॥

१४-श्री अनन्तनाथजी का स्तवन।

॥ वेग पधारोरे म्हेल थी ॥ एदेशी ॥

अनन्त जिनेश्वर नित नमो, अद्भुत जोत अलेख। ना कहिये ना देखिये, जाके रूप न रेख ॥ अनंत ॥ १ ॥ सूक्ष्म थी सूक्ष्म प्रभु, चिदानन्द चिद्रूप। पवन शब्द आकाश थी, सूक्ष्म ज्ञान सरूप ॥ अनन्त ॥ २ ॥ सकल पदारथ चिंतवूं, जे जे सूक्ष्म जोय। तिणथी तूं सूक्ष्म महा, तो सम

अवर न कोय ॥ अनन्त ॥ ३ ॥ कवि पण्डित कह कह थके, आगम अर्थ विचार। तो पिण तुम अनु-भव तिको, न सके रसना उचार ॥ अनन्त ॥ ४ ॥ प्रभुने श्रीमुख सरस्वती, देवी आपो आप। कहि न सकै प्रभु तुम स्तुति, अलख अजपा जाप ॥ अनन्त ॥ ५ ॥ मन बुध वाणी तो विषै, पहुंचें नहीं लगार। साक्षी लोकालोक नी, निरविकल्प निराकार ॥ अनन्त ॥ ६ ॥ मातु जसा सिंहरथ पिता, तसु सुत अनन्त जिनंद। बिनैचंद अब ओलख्यो, साहिब सहजानन्द ॥ अनन्त ॥ ७ ॥

१५-श्री धर्मनाथजी का स्तवन।

॥ आज नहैंजोरे दीसै नाहलो ॥ एदेशी ॥

धरम जिनेश्वर मुझ हिवड़ै बसो, प्यारो प्राण समान। कबहू न बिसरूं हो चितारूं सही, सदा अखण्डित ध्यान ॥ धरम० ॥ १ ॥ ज्यूं पनिहारी कुम्भ न विसरै, नटवो चरित्र निदान। पलक न बिसरै हो पदमिनी पिउ भणी, चकवी न बिसरै रे भान ॥ धरम० ॥ २ ॥ ज्यूं लोभी मन धनकी

लालसा, भोगी के मन भोग। रोगी के मन माने औषधि, जोगी के मन जोग ॥ धरम० ॥ ३ ॥ इणपर लागी हो पूरण प्रीतडी, जाव जीव पर्यन्त। भव भव चाहूं हो न पड़े आंतरो, भय भञ्जन भगवन्त ॥ धरम० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद् मच्छर लोभ थी, कपटी कुटिल कठोर। इत्यादिक अवगुण कर हूं भर्यो, उदै कर्म केरे जोर ॥ धरम० ॥ ५ ॥ तेज प्रताप तुमारो प्रगटै, मुझ हिवड़ामें रे आय। तो हूं आतम निज गुण संभालने, अनंत बली कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सुव्रता जननी तणो, अंगजात अभिराम। बिनैचंद ने रे बल्लभ तूं प्रभु, सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥

१६-श्री शान्तिनाथ स्वामी का स्तवन।

॥ प्रभुजी पधारो हो नगरी हम तणी ॥ एदेशी ॥

शान्ति जिनेश्वर साहिब सोलमों। शान्तिदायक तुम नाम हो ॥सौभागी॥ तन मन वचन सुध

कर ध्यावता। पूरै सघली आस हो ॥ सौभागी ॥ १ ॥ विश्व सैन नृप अचला पटराणी। तसु कुल शिणगार हो ॥ सौभागी ॥ जन मति शान्ति करी निज देश में। मरी मार निवार हो ॥ सौभागी ॥ २ ॥ बिघन न व्यापे तुम सुमरन कियां। न्हासै दारिद्र दुःख हो ॥ सौभागी ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि मिलै। प्रगटै सबला सुक्ख हो ॥ सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिनन्द तूं। तेहने कमीय न काय हो ॥ सौभागी ॥ जे जे कारज मनमें बढ़ै। ते ते सफला थाय हो ॥ सौभागी ॥ ४ ॥ दूर दिशावर देश प्रदेश में। भटके भोला लोक हो ॥ सौभागी ॥ सानिधकारी सुमरन आपरो। सहजे मिटै सहु शोक हो ॥ सौभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छै एहवी। जो जिण सेवक होय हो ॥ सौभागी ॥ तेहनी आशा पूरै देवता। चौसठ इन्द्रादिक सोय हो ॥ सौभागी ॥ ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तुम प्रभु। हमने छै आधार हो ॥ सौभागी ॥ बे कर जोड़

विनैचन्द विनवै। आपो सुख श्रीकार हो ॥ सौभागी ॥ ७ ॥

१७-श्रीकुंथुनाथ स्वामीका स्तवन।

॥ रेखता ॥

कुन्थ जिणराज तूं ऐसो, नहीं कोई देवतूं जैसो। त्रिलोकीनाथ तूं कहिये, हमारी बांह दृढ़ गहिये ॥ कुंथ० ॥ १ ॥ भवोदधि डूबतो तारो, कृपानिधि आसरो थारो। भरोसा आपका भारी, विचारो बिरद उपकारी ॥ कुंथ० ॥ २ ॥ उमाहुं मिलन को तोसे, न राखो आंतरा मोसे। जैसी सिद्ध अवस्था तेरी, तैसी चेतन्यता मेरी ॥ कुंथ ॥ ३ ॥ करम भ्रम जाल को दपट्यो, विषय सुख ममत में लपट्यो। भ्रम्यो हूं चिहूं गति माहीं, उदै कर्म भ्रम की छांही ॥ कुंथ ॥ ४ ॥ उदै को जोर है जौलूं; न छूटै विषय सुख तौलूं। कृपा गुरुदेवकी पाई, निजातम भावना आई ॥ कुंथ ॥ ५ ॥ अजब अनुभूति उर जागी, सुरति निज स्रूप में लागी।

तुम्हें हम एक तो जाणूं, द्वितीय भ्रम कल्पना मानूं ॥ कुंथ० ॥ ६ ॥ श्री देवी सुर नृप नन्दा, अहो सरवज्ञ सुख कन्दा। बिनैचन्द लीन तुम गुण में, न व्यापै अविद्या उनमें ॥ कुंथ० ॥ ७ ॥

१८-श्री अर्हन्नाथ स्वामीजी का स्तवन।

॥ अलगी गिरानी ॥ एदेशी ॥

अरह नाथ अविनासी, शिव सुख लीधो। विमल विज्ञान बिलासी ॥ साहिब सीधो० ॥ १ ॥ तू चेतन भज अरहनाथ ने, ते प्रभु त्रिभुवन राय। तात श्रीधर सुदर्शण देवीं माता, तेहनों पुत्र कहाय ॥ साहिब सीधो० ॥ २ ॥ क्रोड़ जतन करतां नहीं पामें, एहवी मोटी माम। ते जिन भक्ति करी नै लहिये, मुक्ति अमोलक ठाम ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ समकित सहित कियां जिन भगती, ज्ञान दरशन चारित्र। तप वीर्य उपयोग तिहारा, प्रगटै परम पवित्र ॥ साहिब० ॥ ४ ॥ सो

उपयोगी सरूप चिदानन्द, जिनवर ने तूं एक। द्वैत अविद्या विभ्रम मेटो, बाधै शुद्ध विवेक॥ साहिब० ॥ ५ ॥ अलख अरूप अखण्डित अविचल, अगम अगोचर आपै। निरविकल्प निकलंक निरञ्जन, अद्भुत जोति अमापै ॥ साहिब० ॥ ६ ॥ ओलख अनुभव अमृत याको, प्रेम सहित नित पीजै। हूं तूं छोड़ विनैचन्द अन्तस, आतम राम रमीजै ॥ साहिब० ॥ ७ ॥

१६-श्री मल्लिनाथ स्वामीजी का स्तवन।

॥ लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी, कुम्भ पिता परभावती मइया। तिनकी कुंवारी ॥ टेक ॥ मानी कूंख कन्दरा मांही, उपना अवतारी। मालती कुसुम मालनी बांछा, जननी उरधारी ॥ म० ॥१॥ तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो, त्रिभुवन प्रिय

कारी। अद्भुत चरित तुम्हारा प्रभुजी, वेद धर्यो नारी॥ म०॥ २॥ परणन काज जान सज आये, भूपति छः भारी। मिहिलापुरी घेरि चौतरफा, सेना विस्तारी॥ म०॥ ३॥ राजा कुम्भ प्रकाशी तुम पै, बीतक विधि सारी। छहुं नृप जान सजी तो परणन, आया अहंकारी॥ म०॥ ४॥ श्रीमुख धीरप दीधी पिताने, राख्यो हुंशियारी। पुतली एक रची निज आकृत, थोथी ढकवारी॥ म०॥५॥ भोजन सरस भरी सा पुतली, श्रीजिण शिण-गारी। भूपति छहूं बुलाया मन्दिर, बीच बहु दिना पारी॥ म०॥ ६॥ पुतली देख छहूं नृप मोह्या, अवसर विचारी। ढाक उघार लीनो पुतली को, भबक्यो अति भारी॥ म०॥ ७॥ दुसह दुर्गन्ध सही न जावे, ऊठ्या नृप हारी। तब उप-देश दियो श्रीमुख सूं, मोह दशा टारी॥ म० ॥ ८॥ महा असार उदारक देही, पुतली इव प्यारी। संग किया पटकै भव दुःख में, नारि नरक वारी॥ म०॥ ९॥ नृप छहूं प्रति बोधे मुनि होय,

सिद्ध गति संभारी। बिनैचन्द चाहत भव भवमें, भक्ति प्रभु थारी ॥ म० ॥ १० ॥

२०-श्री मुनि सुव्रत स्वामी का स्तवन।

॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ पदेशी ॥

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीन दयाल देवां तणा देव के। तारण तरण प्रभु तो भणी, उज्वल चित्त सुमरूं नितमेव कै॥ श्री मुनि सुव्रत साहिबा ॥ १ ॥ हूं अपराधी अनादि को, जनम जनम गुन्हा किया भरपूर कै। लूटिया प्रान छः कायना, सेविया पाप अठार करूंर कै॥ श्रीमुनि० ॥ २ ॥ पूरव अशुभ करतव्यता, ते हमना प्रभु तुम न विचार कै। अधम उधारण बिरुद छै, शरण आयो अब कीजिये सार कै॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किञ्चित पुन्य परभाव थी, इण भव ओलख्यो श्रीजिन धर्म कै। निबृतूं नरक निगोद थी, एहवी अनुग्रह करो परब्रह्म कै॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ साधुपणो नहिं

संग्रह्यो, श्रावक ब्रत न किया अङ्गीकार कै। आदर्‍यो तो न अराधिया, तेहथी रुलियो अनन्त संसार कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब समकित ब्रत आदर्‍यो; तदपि अराधकै उतरूं भव पार कै। जनम जीतब सफलो हुवै, इणपर विनवूं बार हजार कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तुम पिता, धन धन श्री पद्मावती माय कै। तसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं, वन्दत विनैचन्द शीश नवाय कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ७ ॥

२१-श्री नेमनाथजी का स्तवन।

॥ सुणियोरे बाबा कुटिल मझारी तोता ले गई ॥ एदेशी ॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इकबीसमों ॥ टेर ॥ विजयसेन नृप बिप्राराणी, नेमीनाथ जिन जायो। चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव, सुर नर आनन्द पायो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ भजन कियां भव भवना दुष्कृत, दुक्ख दुभाग मिट जावे। काम क्रोध मद मच्छर तृष्णा, दुरमत निकट न आवै रे

॥ सु० ॥ २ ॥ जीवादिक नव तत्व हिये धर, ज्ञेय हेय समुझीजै। तीजी उपादेय ओलखने, समकित निरमल कीजै रे ॥ सुज्ञा० ॥३॥ जीव अजीव बन्ध ये तीनूं, ज्ञेय पदारथ जानो। पुन्य पाप आस्रव परहरिये, हेय पदारथ मानो रे ॥ सुज्ञा० ॥ ४ ॥ संबर मोक्ष निर्जरा निज गुण, उपादेय आदरिये। कारण कारज समझ भली विधि, भिन भिन निरणो करिये रे ॥ सुज्ञा० ॥ ५ ॥ कारण ज्ञान सरूपी जियको, कारज किया पसारो। दोनूं की साखी सुध अनुभव, आपो खोज निहारो रे ॥ सुज्ञानी ॥ ६ ॥ तूं सो प्रभु प्रभु सो तूं है, द्वैत कल्पना मेटो। शुद्ध चेतन आनन्द बिनैचन्द, परमातम पद भेटो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ ७ ॥

२२-श्री अरिष्टनेम प्रभुका स्तवन।

॥ नगरी खूब बणी छै जी ॥ एदेशी ॥

श्रीजिन मोहन गारो छै, जीवन प्राण हमारो छै ॥ टेर ॥ समुद्र विजय सुत श्री नेमीश्वर, यादव

कुल को टीको। रतन कुक्ष धारनी सेवा देवी, जेहनो नन्दन नीको ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुन पुकार पशु की करुणाकर, जानि जगत सुख फीको। नव भव नेह तज्यो जोबन में, उग्रसेन नृप धी को ॥ श्री० ॥२॥ सहस्र पुरुष सों संजम लीधो, प्रभुजी पर उपकारी। धन धन नेम राजुल की जोड़ी, महा बालब्रह्मचारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बोधानन्द सरूपानन्द में, चित्त एकाग्र लगायो। आतम अनुभव दशा अभ्यासी, शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूर्णानन्द केवली प्रगटे, परमानन्द पद पायो। अष्टकर्म छेदी अलवेसर, सहजानन्द समायो ॥ श्री० ॥५॥ नित्यानन्द निराश्रय निश्चल, निर्विकार निर्वाणी। निरान्तक निरलेप निरामय, निराकार वर नाणी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवो ज्ञान समाधि संयुक्तो, श्री नेमीश्वर स्वामी। पूरण कृपा बिनैचन्द प्रभु की, अबते ओलख पामी ॥ श्री० ॥ ७ ॥

२३-श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन।

॥ जीवरे सील तणा कर सङ्ग॥ एदेशी॥

जीव रे तूं पार्श्व जिनेश्वर वन्द ॥ टेर ॥ अश्वसेन नृप कुल तिलो रे, बामा दे नो नन्द। चिन्तामणि चित्त में बसै, तो दूर टले दुःख द्वन्द ॥ जीव रे० ॥ १ ॥ जड़ चेतन मिश्रित पणै रे, करम शुभाशुभ थाय। ते बिभ्रम जग कलपना रे, आतम अनुभव न्याय ॥ जीव रे० ॥ २ ॥ वैहमी भय माने जथा रे, सूने घर बैताल। त्यों मूरख आतम विषै रे, मांड्यो जग भ्रम जाल ॥ जीवरे० ॥ ३ ॥ सरप अंधारै रासड़ी रे, रूपो सीप मझार। मृग तृषना अम्बुज मृषा रे, त्यों आतम संसार ॥ जीव रे० ॥ ४ ॥ अग्नि विषय ज्यों मणि नहीं रे, सींग शशै सिर नाहिं। कुसुम न लागै व्योम में रें, ज्यूं जग आतम मांहि ॥ जीव रे० ॥ ५ ॥ अमर अजोनी आतमा रे, है निश्चय तिहुं काल। बिनैचन्द अनुभव जगी रे, तूं निज रूप सम्हाल ॥ जीव रे० ॥ ६ ॥

२४-श्री महावीर प्रभु का स्तवन।

॥ श्री नवकार जपो मन रंगे ॥ एदेशी ॥

धन २ जनक सिद्धारथ राजा, धन त्रसलादे मात रे प्राणी। ज्यां सुत जायो गोद खिलायो, बर्द्धमान विख्यात रे प्राणी॥ श्री महावीर नमो वर नाणी, शासन जेहनो जाण रे॥ प्रा०॥ १॥ प्रवचन सार विचार हिया में, कीजै अरथ प्रमाण रे॥ प्रा०॥ श्री०॥ २॥ सूत्र विनय आचार तपस्या, चार प्रकार समाधि रे॥ प्रा०॥ ते करिये भव सागर तरिये, आतम भाव अराधि रे॥ प्रा०॥ श्री०॥ ३॥ ज्यों कञ्चन तिहुं काल कहीजै, भूषण नाम अनेक रे॥ प्रा०॥ त्यों जगजीव चराचर जोनी, है चेतन गुण एक रे॥ प्रा०॥ श्री० ॥ ४॥ अपणो आप विषै थिर आतम, सोहं हंस कहाय रे॥ प्रा०॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय, पुद्गल भरम मिटाय रे॥ प्रा०॥ श्री०॥ ५॥ शब्द रूप रस गन्ध न जामें, ना सपरस तप छांहि

रे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नाहीं, आतम अनुभव मांहि रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख जीवन मरन अवस्था, ऐ दश प्राण संघात रे ॥ प्रा० ॥ इणथी भिन्न विनैचन्द रहिये, ज्यों जल में जल जात रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
गावतां मन गह गहै।
कुमट गोकुलचन्द नन्दन,
विनैचन्द इणपर कहैं ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्व निज उरमें धरी।
उगणीस सौ छः के छमच्छर,
चतुर्विंशति स्तुति इम करी॥

अनुपूर्वी ।

जहाँ १ है वहाँ नमो अरिहंताणं बोलना ।
जहाँ २ है वहाँ नमो सिद्धाणं बोलना ।
जहाँ ३ है वहाँ नमो आयरियाणं बोलना ।
जहाँ ४ है वहाँ नमो उवज्झायाणं बोलना ।
जहाँ ५ है वहाँ नमो लोए सव्वसाहूणं बोलना ।

अनुपूर्वी गुणने का फल ।

अनुपूर्वी गुणिये जोय,
छः मासी तपनो फल होय ।
संदेह मत आणो लिगार,
निर्मल मने जपो नवकार ।१।
शुद्ध वस्त्र धरि विवेक,
दिन दिन प्रत्यै गिणवी एक ।
एम अनुपूर्वी जे गुणे,
ते पाँच सो सागरना पापने हणे ।२।

अशुभ कर्म के हरण को, मंत्र बडो नवकार ।
बाणी द्वादश अङ्ग में, देख लियो तत्व सार ॥ ३ ॥

५	३	१	२	४
५	३	१	४	२
५	३	२	१	४
५	३	२	४	१
५	३	४	१	२
५	३	४	२	१

५	४	१	२	३
५	४	१	३	२
५	४	२	१	३
५	४	२	३	१
५	४	३	१	२
५	४	३	२	१

५	६	७	३	४
५	६	७	४	३
५	६	३	७	४
५	६	३	४	७
५	६	४	७	३
५	६	४	३	७

५	७	६	३	४
५	७	६	४	३
५	७	३	६	४
५	७	३	४	६
५	७	४	६	३
५	७	४	३	६

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

४	४	४	४	४	४
१	१	१	१	१	१
५	५	३	३	२	२
३	२	५	२	५	३
२	३	२	५	३	५

४	४	४	४	४	४
२	२	२	२	२	२
५	५	३	३	१	१
३	१	५	१	५	३
१	३	१	५	३	५

३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४
५	५	२	२	१	१
२	१	५	१	५	२
१	२	१	५	२	५

३	३	३	३	३	३
५	५	५	५	५	५
४	४	२	२	१	१
२	१	४	१	४	२
१	२	१	४	२	४

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

२	२	२	२	२	२
१	१	१	१	१	१
५	५	४	४	३	३
४	३	५	३	५	४
३	४	३	५	४	५

२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३
५	५	४	४	१	१
४	१	५	१	५	४
१	४	१	५	४	५

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

अथ श्री सोलह सतीनो स्तवन।

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रभाते उठी मङ्गलीक कामे, सोलह सतीना नाम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनड़ी ए। घट २ व्यापक अक्षर रूपे सोलह सती मांहि जे बड़ी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतिय शिरोमणि, सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ए। अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहें, जेह अनोपम गुण युता ए॥ ३ ॥ चन्दनबाला बालपणे थी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए। उड़दना बाकला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए॥ ४ ॥ उग्रसेन धुया धारणी नंदनी, राजेमती नेम बल्लभा ए। यौवन वेशे काम ने जीत्यो, संयम लेई देव दुल्लभा ए॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया बखाणिये ए। एक सौ आठे चीर पुराना, शीयल महिमा तस जाणिये ए॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम,

कौशल्या कुल चन्द्रिका ए। शीयल शलूणी राम जनेता, पुन्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशम्बिक ठामे सन्तानिक नामे, राज करै रङ्गराजियो ए। तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयल न काची, राची नहीं विषया रसे ए। मुखड़ो जोतां पाप पलाये, नाम लेता मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीज करंता, अनल शीतल थयो शीयल थी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूआ थकी जल काढियुं ए। कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा चम्पा वार उघाड़ियुं ए ॥ ११ ॥ सुर नर वन्दित शीयल अखण्डित, शिवा शिवपद गामनीए। जेहने नामे निर्मल थइये, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पाण्डु रायनी, कुन्ता नामे कामिनी ए। पाण्डव माता दशे दसारनी, बहित पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शीयलवती नामे शीलव्रत धारिणी,

त्रिविधे तेहने वन्दिये ए। नाम जपंतां पातक जाए, दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निषधा-नगरी नलह नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहिनी ए। संकट पड़तां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजिता जग जन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए। विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखै मुदा ए। वाहणु वहता जे नर भणशे, ते लेशे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

अथ अंजना सती को रास ।

॥ दोहा ॥

अञ्जना मोटी सती, पाल्यो शील रसाल । अशुभ कर्म उदय हुवा, आयो अणहुन्तो आल ॥ शील पाल्यो तिण किण विधे, किण विध आयो आल । हिवै धुरसूं उत्पति कहूं, सुणज्यो सुरत सम्हाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ कड़खानी ॥ एदेशी ॥

महिन्दपुरी जग जाणिये, राजा हो महिन्द बसे तिण ठामक । तसु पटराणी छै रुवड़ी, मानवेगा राणी तेहनो नामक ॥ सौ पुत्र राणी तिण जनमिया, ते रूप में रुवड़ा छै अभिरामक । त्यांरे केड़े

जाई एक बालिका, अञ्जना कुंवरी छै तेहनो नामक ॥ सती रे शिरोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ मात पिता ने बाहली घणी, बंधव सगलां ने गमती अत्यन्तक। रूप में छै रलियामणी, नैण दीठां घणो हरष धरंतक ॥ सजन सगा ने सुहामणी, सखी सहेलियां में रही नित खेलक। विद्या भणी सुख अति घणी, दिन दिन बधे जिम चम्पक बेलक ॥ स० ॥ २ ॥ अञ्जना कुंवरी मोटी हुई, चिन्तवी ने राय चित्त मझारक। पछै वेग प्रधान तेड़ावियो, कहे अञ्जना वर तणो करो रे विचारक ॥ जब एक कहे रावण ने दीजिये, एक कहे दीजे मेघ कुमारक। ते पुत्र छै राजा रावण तणो, तिणरो जोबन रूप घणो श्रीकारक ॥ स० ॥ ३ ॥ जब एक कहे इम सांभलो, बरष अठारमें मेघ कुमारक। चारित्र लेसी वैराग सूं, बरष छावीस में जासी मोक्ष मझारक ॥ तो कन्या ने सुख किहां थकी, सगलाई कर देखो मन में विचारक। मेघ कुमार ने यो मती, और विचारो कोई राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी तणो

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै आमक॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसख्या, ते आय उभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रह्यो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धख्या, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे बसन्त माला इम उचरे, बाई ने जोग

जोड़ी मिली श्रीकारक। जेहवो पवनजी जाणिये, तेहवी पामी छै अञ्जना नारक ॥ स० ॥ ८ ॥ हिवे बीजी सखी इम उच्चरे, पहला तो वर मन चिन्तव्यो जेहक। तेहवा पवनजी वर नहीं, बरस अठारह में चारित्र लेहक ॥ पांच इन्द्री ने जीपतो, बरस छावीस में पामसी मोक्षक। तिण कारण वर वर्जियो, कन्या ने वर तणो जाणियो दोषक ॥ स० ॥ ९ ॥ हिवे अञ्जना सुण इम उच्चरे, बाई धन २ ते नर नों अवतारक। कर्म करणी करी काटने, वेगा हो जासी मुगति मझारक ॥ गुण गाइजे तिण पुरुष ना, पवनजी सुणी ने धर्यो अति द्वेषक। आ तो रे नार कुलक्षणी, मन मांही उपनो क्रोध विशेषक ॥ स० ॥ १० ॥ हिवे पवनजी मन मांहि चिन्तवे आ रूप में रुवड़ी अत्यन्त बखाणक। मन मांहि मेली रे पापणी, चित्त चोखो नहीं एक ठिकाणक ॥ पुरुष पराया सूं मन करे, तो हिवे करणो कौन उपायक। जो छोडूं तो एहने वर घणा, परणी ने परहरूं ज्यूं दुःख थायक ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम चिन्तव तिहां पवनजी, पाछा चाल्या ताम।
आया नगरी आपरी, भोगवे सुख अभिराम ॥१२॥

॥ ढाल ॥

हिवे मात पिता अञ्जना तणा, लगन लिखाविया मोटे मण्डाणक। विवाह करवा अञ्जना तणो, रतनपुरी वेग मेलियो जाणक॥ महोच्छव मांडियो अति घणो, बाज रह्या तिहां ढोल निशाणक। मंगल गावे छै गोरड़ी, ऊच्छव कर रह्या कोड़ कल्याणक॥ स०॥ १३॥ हिवे राय प्रह्लाद तेड़ाविया, जान में जावो बड़ा बड़ा राजानक। हय गय रथ सझिया घणा, नेतख्या स्वजन ने दियो घणो सनमानक॥ धन साथे दियो खरचवा, मोटे मण्डाण लेई चाल्या जानक। सामन्त दिया साथे घणां, जोधा सुभट सेना सावधानक॥ स०॥१४॥ हिवे वीन्द बणाव कियो घणो, गेहणा आभूषण पहरिया ताहिक। सखियां गावे रे सोहला, देवे

आशीष केतुमती मातक ॥ लूण उतारै रे बैनड़ी, रूप देख मन हरषित थायक। जाचक बोले विरुदावली, इणविध पवनजी परणवा जायक ॥ स० ॥ १५ ॥ सेना सिणगारी चतुरङ्गिणी, गाजेजी अम्बर बाजैजी तूरक । स्वजन सगा मिलिया घणा, जान चाले जाणे गङ्गा नों पूरक ॥ वर विद्याधर दीपतो, शोभ रह्यो तिणरो बदन सनूरक । चिहुं दिश साथे सेवक घणा, हाथ जोड़ी रह्या ऊभा हजूरक ॥ स० ॥ १६ ॥ महिन्दपुरी नेड़ा आविया, आई बधाई राजी हुवो रायक । दीधी बधामणी तेहने, हरषित हुई अञ्जना तणी मायक ॥ आरती नों महोच्छव करे, महिन्द राजा मन हरष न मायक । स्वजन सगा मिलिया घणा, सेना लेई राजा साहमोजी जायक ॥ स० ॥ १७ ॥ महिन्द राजा साहमो आवियो, ढोल दमामा ने घूरे निशाणक । राजा हो राणी सहु मिल्या, व्यापियो, तिमर ने आंथम्यो भाणक ॥ सुसरो सामेलै आवियो, पवनजी देखने आनन्द थायक । धवल

मङ्गल गावे गोरड़ी, लोक अञ्जना नों वर जोयवा जायक ॥ स० ॥ १८ ॥ महिन्द्र राजा मोटा राजा भणी, अति घणो दियो आदर सनमानक। उच्छ-रङ्ग मन मांहे अति घणो, भाव भगति सूं मिलियो राजानक ॥ जान उतारी रे आण ने, आपिया भोजन विविध पकवानक। ऊपर सिखरण सांचवे, खादिम स्वादिम दिया घणा मिष्टानक ॥ स० ॥ १६ ॥ हिवे पवनजी तोरण आविया, तो ही अञ्जना ऊपर घणो रे अभावक। नाम सुण्या ही राजी नहीं, मूल नहीं मन तेहनी चावक ॥ धवल मङ्गल गावे गोरड़ी, पूरण सासु करे बहु भांतक। पिण मन में न भावे पवन ने, ये तो परणे रे अञ्जना बालवा दाहक ॥ स० ॥ २० ॥ रूपा तणो रे मण्डप रच्यो, सोवन तणी मांडी तिहां वेहक। सोवन पाट मोत्यां जड्यो, अञ्जना ने पवनजी बैठा छै तेहक ॥ हथलेवे हाथ मेल्यो तिहां, नयण निहालेछै अञ्जना नारक। पिण पवन ने मूल गमे नहीं, द्वेष जागे पहिली बात विचारक ॥ स० ॥

२१ ॥ हिवे पवनजी परण ने उतस्या, कीधी पहरावंणी अञ्जना नो तातक। गयवर आपिया अति घणां, ताजा तुरङ्ग दीधा विख्यातक॥ कनक रत्न बहु आपिया, आपी छै रूपा तणी बहु कोड़क। बसन्तमाला दासी आदि दे, पांच सै दासियां सरीखी जोड़क॥ स०॥ २२॥ हिवे परणी ने रतनपुरी संचस्या, साह्मो आयो तिहां प्रह्लाद रायक। अञ्जना मन हरषित थई, सासु सुसरा ना पूंजिया पायक॥ पांच सौ गांव राजा दिया, आप्या छै आभरण रतन बहु मोलक। आया छै बीन्द ने बीन्दणी, आया छै तिहां बाजते ढोलक॥ स०॥ २३॥

॥ दोहा ॥

हिवे कितोक काल गयां पीछे, आयो भेटणो राय। तिहां पवन रो द्वेष परगट हुवे, ते सुणज्यो चित्त लाय॥

॥ ढाल ॥

पीहर थी आवी रे सुंखड़ी, वस्त्र आभरण आपिया तासक। वसन्तमाला ने देई करी, अञ्जना मेलिया पवन रे पासक॥ सुंखड़ी पवन खाधी नहीं, वस्त्र गहणा न पहरिया अङ्गक। अञ्जना सूं द्वेष आणने, वस्त्र गहणा दिया मातङ्गक॥ स० ॥ २४ ॥ वसन्तमाला विलखी थई, आय कही अञ्जना कने वातक। स्वामी रो आपां ऊपरे, हेत न दीसे कोई तिलमातक॥ अञ्जना आंख्यां आंसू झरे, मैं सूं चूकी छै भगति अनेकक। ये नर दीसे छै निरमला, आपणे दीसे छै कर्म विशेषक॥ स० ॥ २५ ॥ हिवे अञ्जना वैठी रे मालिये, पवनजी तुरी खिलावण जायक। आवतां जावतां निरखती, तिम तिम मन में हरषित थायक॥ पवनजी कोपे रे परजले, निजर दीठां मूल न सुहायक। नारी निहाले छै मो भणी, गोखे आड़ि दीनी भींत चिणायक॥ स० ॥ २६ ॥ पांच सौ गांव फोते

क्रिया, माता पिता कहे सांभलो पूतक। अञ्जना सती रे सुलखणी, बहू ने सूंपिये निज घर सूतक॥ मोटा रे कुल तणी ऊपनी, राजा हो महिन्द्र तणी वहै लाजक। अञ्जना सूं आदर कीजिये, इम कहे केतुमती ने राय प्रह्लादक॥ स०॥ २७॥ बापरो आणो पाछो मेलियो, आणे आयो बले बड़ो वीरक। अञ्जना कहै नवी आविये, मेल्या आभरण अद्भुत चीरक॥ स्वामी रे मन मान्या नहीं, पीहर आय ने सूं करूं बातक। इम कही बंधव मोकल्यो, दुःख धरे घणो मायने तातक॥ स०॥ २८॥ इम बारे बरस बीच में गया, ए कथा ऊपरे एतोई सम्बन्धक। हिवे रावण ने वरुण कटकी थई, मांहो-मांहि ऊपनो अति द्वेषक॥ हय गय रथ सजिया घणा, पाला बखतर शोभे शरीरक। शूरां ने सुभट शिणगारिया, चालियो कटक वाजी रण भेरक॥ स०॥ २९॥ एक तेड़ो रतनपुरी आवियो, प्रह्लाद राय करे जावा ने साजक। पवनजी हाथ जोड़ी कहे, एतो छै पिताजी हम तणो काजक॥ तुम घर

बैठा लीला करो, पुत्र जाया नों एह प्रमाणक। इम कहिने आयुधशाल संचर्या, हाथ में धनुष ने लीनो छै बाणक ॥ स० ॥ ३० ॥ पवनजी चाले रे कटक में, मन मांहे चिन्तवे अञ्जना नारक। दूर थकी पांय लागसां, भाव कुभाव देखां एक वारक ॥ बसन्तमाला मांहरी बैनड़ी, दही नों कचोलो तूं भरी ने आणक। सुकन रूड़ा मनावस्यां, मारग मांहे उभी रही आणक ॥ स० ॥ ३१ ॥ सुकन मिसे पिउ देखस्यां, नमण करी ने हूं लागसूं पायक। लोक सहु इम जाणसी, दही नों कचोलो देखसी तायक ॥ कटक जातां पिउ वांदस्या, जाण से अञ्जना आदरी पवन कुमारक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, तिहां लगे मनमें करूं रे सन्तो-षक ॥ स० ॥३२॥ हिंवे गयन्द वैसी दल संचर्या, मात पिता ने नमावियो शीशक। सज्जन सहु रे सन्तोषिया, अञ्जना ऊपर अति घणी रीसक ॥ दूर थकी दृष्टि पड़ी, चतुर चितारा नों जोवो चितरा-मक। पूतली लिखी रम्भा सारखी, एह चितारा ने

देवो इनामक ॥ स० ॥ ३३ ॥ मन्त्री कहे नहीं पूतली, भींत ओटे ऊभी अञ्जना नारक। सांभल पवन कोप्यो घणो, कांई मिली मोने मारग मझारक ॥ दूर ठेली आघी करी, आशा अलुधी मेली आयो जातक। वसन्तमाला मोंड़े कड़का, मुख न देखावज्यो तुम तणो नाथक ॥ स० ॥३४॥ अंजना कहे दासी भणी, पोते छै म्हारे अति घणा पापक। गेहली ए गाल न बोलिये, कटक जाता कांई दीधो सरापक। आशा मोटी मन मांहरे, कांई कुसांवण काढियो एहक। देई ओलंभा दासी भणी, बांह झाली ले गई घर मांहक ॥ स० ॥ ३५ ॥ हिवे अञ्जना कहे सुण सुन्दरी, मोने दुःख मांहे दुःख उपनो आजक। पाणी मांहे करी पातली, सासरे पीहरे गई मांहरी लाजक ॥ चारित्र लेवो मोने सिरै, करणी करी सारूं आतम काजक। नाम जपूं जगदीश नों, तेह सूं पामिये अविचल राजक ॥ स० ॥३६॥ हिवे नगर थकी दल संचल्यो, मारग में दूर कियो रे मलाणक। चकवो चकवी

तिहां टलवले, व्यापियो तिमिर ने आंथम्यो भाणक ॥ पवनजी मन्त्री ने इम कहे, अंजना नों मूल न लीजिये नामक। पुरुष पराया सूं मन करे, चकवा चकवी नी परे मूकी छै नारक ॥ स० ॥३७॥ मन्त्री कहै सुणो कुंवरजी, तुमे एवड़ो कांई आणो मन में भरमक। मोटकी सती छै अंजना, अहो निशि सेवती जिन तणो धर्मक। पुरुष परायो वंछे नहीं, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेषक ॥ आ शील सरोवर झूलती, गुण किया शिव गामी जाण विशेषक ॥ स० ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

बचन सुणी मन्त्री तणो, कोमल थयुं निज चित्त।
पवनजी मन्त्री ने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥ १ ॥
खोटो ए कारज मैं कस्यो, सन्तापी निज नार।
बचन वरां से दुहवी, करवो कवण बिचार ॥ २ ॥
मो मन में प्यारी बसे, जाणूं मिलिये जाय।
लोके लाज रहे नहीं, मन मन में मुर्झाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेविज ॥

हिवे पवनजी कहे सुणो मन्त्रवी, हूं कटक जाऊं छूं नारी ने सन्तापक । पाछो जाऊं तो प्रजा हंसे, महेला मांहे लाजे मांहरो बापक ॥ मन्त्री कहे छाना जावस्यां, तेड़ी सेनापति कहे तूं रुखवालक । अमे यात्रा करी ने पाछा आवस्यां, तिहां लग कटक नी कीजे रुखवालक ॥ स० ॥ ३९ ॥ हिवे प्रछन्नपणे दोनूं आविया, आवी ने अंजना नों उघाड्यो किंवाडक । बसन्तमाला तब उठने, उतावली बोले छै गाली दो चारक ॥ कहे शूरो पुरुष गयो कटक में, कोण रे लम्पट आयो इण ठामक । प्रभाते हूं राजा ने विनवी, छाड़ाय देसूं हूं तेहनों गामक ॥ स० ॥ ४० ॥ प्रहस्त मन्त्री इम उच्चरे, इहां आयो छै प्रह्लाद नों नन्दक । अंजना तणो छै शिर धणी, वंश विद्याधर दीपक चंदक ॥ बसन्तमाला आवी ओलख्यो, नयण निहाली ने पामी आनन्दक । किंवाड़ खोली ने मांहि लिया, बसन्त माला बधावियो नरिन्दक ॥ स० ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

अंजना सती तिण अवसरे, बैठी सामायिक मांय। कर्म धर्म संभालती, रही धर्म लव ल्याय ॥ बसन्तमाला तिण अवसरे, हाथ जोड़ी कहै आम। सती रे सामायिक तिहां लगे, राजा करो विश्राम ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज देशी ॥

हिवे अंजना सामायिक पूरी करी, हाथ जोड़ी लागे पिउ ने पायक। पवनजी कहे तूं मोटी सती, लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक ॥ बचन बरां से मैं दुहवी, मैं तने कीधो अभाव अगाधक। हाथ जोड़ी करूं विनती, खमज्यो सती म्हारो अपराधक ॥ स० ॥ ४२ ॥ अंजना पाय नमी कहै, एहवा बोल बोलो कांई स्वामक। जेहवी पग तणी मोजड़ी, तेहवी पुरुष ने स्त्री जाणक ॥ हाथ जोड़ी ने आण ऊभी रही, मधुर सुहामणा बोलती वैणक। कहे प्रासि विण किम पामिये, जाणे पत्थर गाली ने

कीधो छै मैणक ॥ स० ॥ ४३ ॥ तीन दिवस रह्या तिहां पवनजी, तिहां भाव भगति तिण कीधी विशेषक। वाय ढोले बींझने करी, षटरस भोजन आपिया अनेकक ॥ हाव भाव करे छै अंजना, प्रीतम सूं घणी सांचवी रीतक। पवनजी आनन्द पाम्या घणा, अंजना सूं धरी अति घणी प्रीतक ॥ स० ॥ ४४ ॥ हिवे पवनजी पाछा निकले, अंजना बोली छै जोड़ीजी हाथक। आशा रहे कदाच मांहरे, लोक माने किम मांहरी बातक ॥ तिण सूं मात पिता ने जणावज्यो, बाह्ना आभरण आप्या अहनाणक। शङ्का पड़े तो देखावज्यो, मात पिता-दिक सहु लेसी जाणक ॥ स० ॥ ४५ ॥ हिवे बसन्तमाला ने तेड़ी तिहां, पवनजी देई सनमानक। मांहरे अंजना राणी सारां शिरे, प्रत्यक्ष चिन्तामण ने समानक ॥ तूं करजे जतन घणा तेह्ना, जिम दांत ने जीभ भेला रहे जेहक। जिम तूं अंजना ने भेली रहे, किम दीजे घणी भोलावणी तेहक ॥ स० ॥ ४६ ॥ बसन्तमाला ने माणक मोती दिया,

बीजाई धन दियो रे विशेषक। घणी सन्तोषी छै वचन सं, बसन्तमाला हुई हरष विशेषक॥ प्रहस्त मन्त्री ने इम कहै, जतन कीज्यो कुंवरजी ना तेहक। कुशले खेमे वेगा पधारज्यो, म्हे बाट जोवां जाणे उमट्यो मेहक॥ स०॥ ४७॥ सीख देवे अंजना चालतां, रण मांहे आवे घणा पुरुष दुष्टक। सौ पुत्र आवे छै वरुण ना, तेहने आगल रखे फेरवो पूठक॥ दुरजन कटक छै वरुण नों, लोहना बाण जाणे मुके अङ्गारक। तिहां क्षत्री तणी रीत राखज्यो, मरण भलो पिण नहीं भली हारक॥ स०॥ ४८॥ हिवे पोल थकी रे पाछी वली, नैणा में छूटी छै जल तणी धारक। मैं कटुक वचन कह्यो कंथ ने, मुंह ढांकी ने रोवै तिण वारक॥ बसन्तमाला आय धीरज देवे; हिवे आयो छै सामायिक कालक। देव गुरु धर्म हिये धरो, व्रत पच्चक्खाण थे लेवो संभालक॥ स०॥ ४९॥ हिवे अंजना सती तिण अवसरे, रूड़ी रीत पाले व्रत रसालक। कर्म धर्म संभालती, सुखे गमावे छै इण विध

कालक॥ ध्यान धरे देवगुरु तणो, संसार नी जाणे छै काचीजी मायक। बोल सज्झाय गुणे थोकड़ा, इण परे अंजना ना दिन जायक॥ स० ॥ ५० ॥ हिवे उदर आधान जाणी करि, अंजना मन मांहे हरष अपारक। धन खरचे करे धुपटा, लोकीक दान देवै शुभकारक॥ भावना भावे उलट मने, पात्र सुपात्र देवे मुक्ति ने तेहक। उछरङ्ग मन मांहे अति घणो, दान देती न गिणे खेत कुखेतक॥ स०॥ ५१ ॥ हिवे राणी राजा भणी विनवे, सांभलो विनती मांहरी आपक। अंजना करे धन उडावणां, इण सूं धुरलगे पवन न कीधो मिलापक॥ तोही मन मांहे मान राखे घणो, कटक जातां पाड़ी एहनी मामक। आप कहो तो हूं एहने, बरजवा काजे जाऊं तिण ठामक॥ स० ॥ ५२ ॥ राजा पिण दीधी छै आगन्या, हिवे केतुमती चाली मोटे मण्डाणक। साथे सहेलियां लीधी घणी, मन मांहे मान बहु आणक॥ आगे वधाउड़ा मेलिया, अंजना सुणने हरषित थायक। भाव भगति करी

घणी, सांह्मी आय भेट्या सासु ना पायक ॥ स० ॥ ५३ ॥ आदर सनमान दे अंजना, सासु ने ले गई निज घर मांयक। आसन दीधो छै बैठवा, हाथ जोड़ उभी छै सनमुख आयक ॥ कहे मनुष्य नो करी मोने लेखवी, म्हारा मनोरथ पूरिया आयक। माईतां विना इम कूण करे, मांहरी सासरे पीहर बाधी छै लाजक ॥ स० ॥ ५४ ॥ हिवे बहू ना चिन्ह देखी करी, केतुमती राणी धरयो मन द्वेषक। बहू थांरा अङ्ग नों एहवो, चिन्ह क्युं दीसे विशेषक ॥ तूं मोटा रे कुल तणी उपनी, बंश विद्याधर दोनूं पक्ष सारक। तूं साची मुझ आगल कहे, उदर आधान के उदर विकारक ॥ स० ॥ ५५ ॥ अंजना सती तिण अवसरे, आभरण अह-नाण आण मुक्या पायक। कटक थी कुमर पाछा वली, विहरणी जाणी ने आविया तायक ॥ तीन दिवस रह्या घर मांह्रे, छांने आयने छांने गया तासक। आभरण अहनाण इहां मेलने, हिवे हुवो छै मुक्त सातमो मासक ॥ स० ॥ ५६ ॥ बहू ना

बचन काने सुण्या, केतुमती राणी बोले छै तेहक। पूरब लग तोने परहरी, मुझ पुत्र ने तुझ किसो सनेहक ॥ आज लगे अलखावणी, तूं आभरण चौरी ने निरमल थायक। विणठ्यो रे दूध कांजी थकी, हिवे सासरा सूं परि पीहर जायक ॥ स० ॥ ५७ ॥ सासुरा बचन काने सुण्या, अंजना रे मन उपनो द्राहक। पुत्र तुमारो पाछो बले, तिहां लगे मुझने राखो घर मांहिक ॥ सासरा में सासुजी तुम तणो, कहो तो ऐंठ खाई ने काढूं दिन रातक। चरण कमल सूं गिर रही, हूं कलङ्क लेई किम पीहर जायक ॥ स० ॥ ५८ ॥ केतुमती राणी क्रोधे चढ़ी, पग करी क्रोध सूं ठेलियो शीशक। अङ्ग मोड़ी ने ऊभी थई, धड़ हड़ धूजी ने अति घणी रीसक ॥ अलगी रहे मुझ आंख थी, जिहां लगे म्हारा नगर नी सीमक। तिहां लगे अंजना इहां रहे, जिहां लगे मुझ ने अन्न पाणी तणो नेमक ॥ स० ॥ ५९ ॥ बसन्तमाला ने तेड़ी करी, बन्धण बांधने टेरी छै तेहक। ते चोख्या आभरण म्हारा पुत्र ना, चोर

देखाल के छेदसूं देहक ॥ तेरे घड़ी रे टेरी रही, बाजे छै ताड़णा रोवती तेहक। बसन्तमाला इम मुख भणे, चोर तो पवनजी सहि तेहक ॥ स० ॥ ६० ॥ हिवे कालो रे रथ अणावियो, कालाई तुरंग जोतख्या छै दोयक। काला ही वस्त्र पहरावियां, काली हो भूरसी दीधी छै तेहक ॥ काली हो मस्तक राखड़ी, अंजना ने बसन्तमाला बैसाणो ताहक। अंजना चाली पीहर भणी, दुःख घणो धरती मन मांयक ॥ स० ॥ ६१ ॥ हिवे चालियो रथ उतावलो, आयो छै बाप तणी भूम तेहक। दूर थी मेहल देखिया, सारथी रथ पाछो बाल्यो तेहक ॥ जुहार करी अञ्जना भणी, सारथी चित्त मांहे चिन्तवे आमक। दुष्ट अकारज मैं कियो, मैं बन मांहे अञ्जना मेली इण ठामक ॥ स० ॥ ६२ ॥ हिवे सांझ पड़ी दिन आंथम्यो, रयण विहाणी घोर अन्धकारक। हाथो हाथ सूझे नहीं, इण वेला मुझ ने कुण आधारक ॥ नाम जपूं जगदीश नों, इण विध काढे दुःख भारी रातक। शुद्ध सामायिक

उचरे, एटले सूरज उग्यो होयो परभातक ॥ स० ॥ ६३ ॥ हिवे अञ्जना कहे सुण सुन्दरी, मांहरा मन में अति घणो दुःखक। मोने कूड़ो रे कलङ्क चढ़ावियो, हिवे तात ने केम देखालसूं मुखक ॥ माता मो सूं मन किम मेलसी, किम करूं भाई भोजायां सूं बातक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, तिहां लगे किम काढूं दिन रातक ॥ स० ॥ ६४ ॥ बसन्तमाला वलती इम कहे, जिहां लगे निरमल उजला आपक। तिहां लगे सहु ने सुहामणा, हरखे बोलावसे तुम तणो बापक ॥ माता मनोरथ पूरसी, भाई भोजाई सहु मिलसी आयक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, तिहां लगे पीहर बैठा रहो आपक ॥ स० ॥ ६५ ॥ हिवे नगर नी सेरिये संचरी, गुंघट काढ़ी ने नीचोजी जोयक। हंस तणी गत चालती, नगर ना लोक जोवे सहु कोयक ॥ स्वजन विछोही ए कामिनी, नाथ विहुणी दीसे छै नारक। पिछाड़ी से प्रजा मिली घणी, इण पर पोंहती छै बाप दुवारक ॥ स० ॥ ६६ ॥ पोले ऊभी

राखी पोलिये, मालूम कीधी राय ने जायक। दोनूं हाथ जोड़ी नीचो नमी, अञ्जना बाहिर उभी छै आयक॥ राय सांभल हरषित हुवो, नगर शिणगार ने करो विख्यातक। सनमुख मोकलो पालखी, आघे: तेडावो राय प्रह्लाद नों साथक॥ स० ॥६७॥ कान में छाने सेवक कहे, अञ्जना सासरे जे हुवो तेहक। तिण बात कही सर्व मांडने, राय सांभल दुःख व्यापियो देहक॥ मुरच्छागत आय धरणी ढल्यो, सचेत थयो कीधो क्रोध विशेषक। म्हारा कुलने कलङ्क लगावियो, आयवा मत द्यो मांहरी पोल मझारक॥ स० ॥ ६८॥ पोलियो पाछो आवी कहे, तुम ऊपर रूठो छे महिन्द्रायक। मांहे आयबा मत द्यो एहने, वचन सुनी ने विलखी थायक॥ माता रा भवन में संचरी, आघा पाछा पग पड़े तिण वारक। मन मांहे दुःख धरती थकी, विलखी थई आवी माताने द्वारक॥ स० ॥ ६९॥ मानवेगा तिण अवसरे, आंगने अंजना दीठी विरङ्गक। शरीर नो रङ्ग तो फिर गयो, काला वस्त्र

परहण अङ्कक ॥ अहनाण दीसे छै वारका, नयण झरे जाणे मोत्यां ना वृन्दक । मुख कमलाणो दीसे वुरो, जाणै राहु ने अन्तरे दब गयो चन्दक ॥ स० ॥ ७० ॥ इम देखी माता धरणी ढली, सचेत थई रोवे वांगां जी पाड़क । हूं क्यों नहीं रही रे बांझणी, इण कलङ्क आण्यो म्हारा कुल मझारक ॥ हूं सगा सम्बन्धी में किम फिरूं, लेई कटारी ने वेदसूं मांहरी कुखक । जिन कुखे अंजना उपनी, दीधो छै दुःख में दुःख विशेषक ॥ स० ॥ ७१ ॥ राणी ने रोवती देखने, दास्यां मिल आई अंजना ने पासक । आदर विहुणी उभी किमे, माय छोड़ी बाई तुम तणी आशक ॥ सासु ने सुसरा लजाविया, लजावियो पीहर मांय मोसालक । तूं बंश विगोवण उपनी, हिवे पापणी तूं मूंढो मति देखालक ॥ स० ॥७२॥ वसन्तमाला वलती कहे, एहवी अचूंकी थे बोलो छो वायक । पवन कुंवर घरे आवसी, पूछ कीजो निरणो मन मांयक ॥ आ सती तो संजम ले सही, गले छै गर्भ तणो ए फाशक । ए कलंक आयां

काया नहीं धरे, पवनजी आयवारी राखे छै आशक ॥ स० ॥ ७३ ॥ इम कही दोनूं पाछी निकली, भाई भोजायां तणे घर जायक। बन्धव मांहे बैसी रया, अंजना आंगणे उभी छै आयक ॥ आय भोजायां मिली तिहां, मन बिना तिणा आपी छै बाहक। आंगुली लेई दांतां धरी, आयवा न दीधी तिण ने घर मांयक ॥ स० ॥ ७४ ॥ इम अञ्जना घर घर हिण्डी घणी, किणहि न दीधी आयबा घर मांहेक। दीन वचन मुख बोलती, नयण झरे मुख रोवती तेहक ॥ भूख तृषा करी आकुली, अन्न पाणी आपे कुण तामक। उभी छै दीन दयामणी, नांखे निसासा उभी तिण ठामक ॥ स० ॥ ७५ ॥ हिवे मिलने भोजायां ते इम कहे, बाई थे आपरो आपो संभालक। धूरसूं जी डाह्या क्यूं नी हुवा, एह कह्यो जिसो कर्म चण्डालक ॥ अमे तो अबला स्यूं करा, आंगणे उभा रहो न लिगारक। हम घर आया राय जाणसी, तुम तणा वीर ने काढ़सी बारक ॥ स० ॥ ७६ ॥ बंधवा किण ही

न पूछियो, स्वजन किण ही न पूछी रे सारक। जिण दीठी छै अञ्जना सती, तिहां प्रोहित प्रधान मूंदिया द्वारक॥ लोकांरी आसंग किम हुवे; अञ्जना ने तेड़ी राखे घर मांयक। आदर भाव किहांई नहीं, एहवा कर्म उदय हुआ आयक॥ स०॥ ७७॥ अञ्जना ने देखे आवती, लोक आडा जड़ देवे किंवाड़क। घरमें कोई आवण देवे नहीं, वचन बोले लोक विविध प्रकारक॥ अञ्जना दुख वेदे घणो, जाणे वही छै खड्ग नी धारक। दुःख मांहे दुःख साले घणो, अमरस धरे मन मांहि अपारक॥ ७८॥ हिवे अञ्जना तृषा रे टलवले; जल लेई आयो ब्राह्मण तीरक। राय कुंवरी पाणी पियो, शीतल उत्तम निरमल नीरक॥ बलती अञ्जणा कहे तेहने, नगर मांहे तो नहीं पीउं पाणक। पोल बाहिर जल पीवसूं, इहां तो छै मांहरा बाप नी आणक॥ स०॥ ७९॥ नगर बाहिर जल बावरे, अञ्जना वसन्तमाला ने कहे छै आमक। गहन वन मोटी उजाड़ में, ऊंचा हो

पर्वत विषमी ठामक॥ जिहां सूर्य किरण न संचरे, रात दिवस नी खबर न कांयक। मानुष को मुख नहीं देखिये, तिण बन मांहे तूं मुझने ले जायक॥ स०॥ ८०॥ हिवे बसन्तमाला तिण अवसरे, अंजना नों बचन कियो परमाणक। दोनूं जणी तिहां थी निकली, मांहो मांहि बोलती मोहकारी बाणक॥ उजड़ बन मांहि संचरी, जोयने परवत सबल महन्तक। खान्धे लेई अञ्जना भणी, परवत बैठी जाय एकन्तक॥ स०॥ ८१॥ अञ्जना बन मांही संचरी, लोक मांहो मांहे बोले छै एमक। अञ्जना ने बाहिर काढने, राय कीधो अति भूण्डो जी कामक। आण देवाड़ी रे घर घरे, आयवा नहीं दीधी किण ही घर मांहक। पेट नी पुत्री ने परहरी, राय नी अकल गई ढकायक॥ स०॥ ८२॥ हिवे माता कहे छै दासी भणी, अञ्जना ने जोवो रही किण ठामक। दासी कहे बन में गई, हा! हा! देव सूं कीधोए कामक॥ म्हारी कूखे ए उपनी, बालपणे हुन्तो अति घणो

रागक। हिवे बन मांहे सिंहादिक विनाशसी, इम चिन्तवी ने धरे दुःख अपारक ॥ स० ॥ ८३ ॥ नित भोजन जीमती रे बालिका, मन ने गमता च्यारूं ही आहारक। मन मांहे फिकर करे घणो, शहर में नहीं उजाड़ में जायक ॥ अन्न पाणी किम पामसी, मैं मन में जाण्यो घरे कोई राखसी वीरक। इम चिन्तवी ने घणी चिन्ता करे, रोवती आंख्या आंसू काढती नीरक ॥ स० ॥ ८४ ॥ हिवे राजा राणी कने आयने, बोले छै मुख थी एहवी वायक। थे चिन्ता करो किण कारणे, बेटी आपां जोगी नहीं छै तायक ॥ मोटो अकारज इण कियो, मेंहणो आण्यो मांहरा कुल मझारक। जो पाछी अणाऊं रे अञ्जना, तो नगर नी नारियां हींडे अनाचारक ॥ स० ॥ ८५ ॥ हिवे वसन्त माला इम उच्चरे, बाई थांरो बाप छै मूढ़ गींवारक। मूरखणी माता छै तुम तणी, भायां में अकल न दीसे लिगारक ॥ आंगण न राखी रे एक घड़ी, कलंक री सुध न पूछी रे कांयक। बाई थारा पीहर

ऊपरे, कोई अचिन्त्यो धसको पड़ज्यो जायक॥ स० ॥ ८६ ॥ अंजना कहे सुण सुन्दरी, मांहरो बाप छै चतुर सुजाणक। माता विचक्षण अति घणी, भाई छै मांहरा घणा बुद्धिवानक॥ पिण पाप छै मांहरे अति घणा, तूं मन मांहे मूल न आणै रोसक। आपां पूरव पुण्य कीधा नहीं, ए सहु आपणे करमां रो दोषक ॥ स० ॥ ८७ ॥ हिवे गिरवर गुफा स्हामो जोवतां, तिहां दीठो छै मुनिवर ध्यान वर धीरक। निर्दोष आचार पालता, तप जप खप करी शोषव्यो शरीरक॥ अवधि ज्ञाने करी आगला, अञ्जना जाय भेट्या तसु चरणक। अति दुःख मांहि आनन्द हुवो, भव भव होज्यो स्वामी तुम तणो शरणक॥ स० ॥ ८८ ॥ हिवे हाथ जोड़ी अञ्जना कहे, पूर्व किसूँ कियो कर्म चण्डालक। किण करमां स्वामी मांहरे, इण भव में आयो अणहुन्तो आलक॥ सासरा सूं काढी मो भणी, पीहर राखी नहीं घर मांहक। आप कृपा करो मो ऊपरे, सगलाई सम्बन्ध देवो नी

सुणायक ॥ स० ॥ ८९ ॥ हिवे साधु कहे बाई संभलो, पाछले भव रो कहूं विरतन्तक। थांरे शोक हुन्ती लिखमावती, श्रावक धर्म पालती कर खंतक ॥ सिंहरथ पुत्र थो तेहने, तें चोरी पड़ोसण ने सूंपियो तेहक। तेरे घड़ी थांरी शोक टलवली, दुःख घणो धरती मन मांयक ॥ स० ॥ ९० ॥ थांरी शोक रे नियम हुन्तो, जो साधु हुवे तिण नगर मझारक। तो वांदियां पहली तेहने, अन्न पाणी रो हुन्तो परिहारक ॥ विलाप कीधो तिण अति घणो, जब ते पुत्र पाछो दियो तासक। अन्तराय पड़ी दरशण तणी, तिणसूं बंध गई थांरे कर्मां री रासक ॥ स० ॥ ९१ ॥ काल कित्तोएक बीतां पछे, साधव्यां आई तिण नगर मझारक। ते वाणी सांभल तेहनी, वैराग सूं लीधो संजम भारक ॥ तपस्या करी अणशण कियो, आलोयां बिना एटलो फेरक। कीधा हो कर्म न छूटिये, तेरे घड़ी रा हुवा बर्ष तेरक ॥ स० ॥ ९२ ॥ सिंहरथ पुत्र ते तप करी, तुझ कुखे आय लियो

अवतारक। साथे पड़ोसण दुःख सहे, ते पिण चोरी ना फल विचारक॥ पवनजी वरुण सूं युद्ध करी, पाछा आवसी निज नगर मझारक॥ स०॥ ९३॥ ए साधु कह्यो संतोषवा, और नहीं कोई कारज लिगारक। बीजा साधु ने निमित्त भाषणो नहीं, एतो आगम विहारी हुन्ता अणगारक। त्यां कह्यो उपकार जाणने, कर दियो तिहां थी उग्र विहारक। भारंडपंखी तणी परे, आचार पाले छै निरतिचारक॥ स०॥ ९४॥ हिवे तिण काल ने तिण समैं, तलेटी आयने गुंजियो सिंहक। जब जीव त्रास पाम्या घणा, धड़ हड़ धूजीने पामिया बिहक॥ तिण ही सिंह तणो शब्द सांभल्यो, अञ्जना भय पामी तिण वारक। तब बसन्तमाला इम उच्चरे, बाई देवगुरू धर्म समरो नवकारक॥ स०॥ ९५॥ हिवे बसन्तमाला विरखे चढ़ी, अञ्जना सागारी कीधो संथारक। नाम जपे जगन्नाथ नों, जाणे रे ध्यान चढ्यो अणगारक॥ चिहुं गत जीव खमावती, च्यारे शरणा

चिन्तवे चित्त मझारक। कहे केशरी रूठो काया हरे, पिण मांहरो धर्म न लेवे लिगारक॥ स०॥ ९६॥ हिवे बसन्तमाला इम उच्चरे, कहे अञ्जना महा सती छै निरधारक। मोटे रे शब्द हेला करे, कोई देव देवी आवो इणवारक॥ कोई सज्जन हुवे अञ्जना तणो, तो पिण वेग सूं आवज्यो धायक। उपसर्ग उपनो अति घणो, बसन्तमाला बोले छै एहवी वायक॥ स०॥ ९७॥ तिण बन मांहि व्यन्तर यक्ष रहे, ते बारे जोजन तणो रखवालक। ते यक्ष कहे यक्षणी भणी, आपणे शरणे आवी दोय बालक॥ तिण सूं रक्षा करां आपां एहनी, इम चिन्तव शार्दूलो रूप कियो तेहक। तिण सार्दूला सिंह ने पराभवी, काढी दियो दूर बन ने छेहक॥ स०॥ ९८॥ साहाज देई अञ्जना भली, देवता बोले छै एहवी वायक। सतियां मांहि तूं निरमली, थांरा गुण पूरा मोसूं कह्या नहीं जायक॥ हिवे कलंक उतरसी तांहरो, कुशले आवसी पवन कुमारक। वले मामो थारो

इहां आवसी, तू निश्चिन्त रहे इण बन मझारक ॥ स० ॥ ९९ ॥ एहवो वचन सुणी देवता तणो, बन, मांहे दोनूं रहे अबीहक। बन फल फूल तिहां बावरे, जिन धर्म तणी नहीं लोपे रे लीहक ॥ सूंस ब्रत पाले छै निरमला, अहोनिश करे छै जिन तणो जापक। तपस्या करे अति आकरी, अञ्जना काटे छै संचिया पापक ॥ स० ॥ १०० ॥ चैत्र मास धूर अष्टमी, पुष्प नक्षत्र आयो श्रीकारक। रात रा पाछला पोहरमां, अञ्जना जनमियो हणुमन्त कुमारक ॥ अशुची टाली तिण अवसरे, दासी ने कहे अञ्जना आमक। महोछव करसी कुण एहना, कटक में गयो छै आपणो स्वामक ॥ स० ॥ १०१ ॥ चांदणी रात पूनम तणी, अञ्जना कर धर बैठी छै नन्दक। चञ्चल चपल सुहामणो, दीठां पामे घणो हरष आणंदक। हरषे बोलावे रे मायडी, कुंवर तणी अजै छै लघु वेसक। तारा ने ताके रे बालुड़ो, जाणे के चंद ने लेय झपेटक ॥ स० ॥ १०२ ॥ हिवे मामो अञ्जना तणो,

सुरसेन राजा तेहनो नामक। देशान्तर जाय पाछो वल्यो, आकाशे विमान थांभ्यो तिण ठामक॥ वन मांहे दीठी दोय बालिका, अचरज पामी ने मोकली नारक। जब मामी अञ्जना ने ओलखी, नैना में छुटी छै जल तणी धारक॥ स० ॥ १०३॥ गले लागी बिहु घणी आरड़ी, एटले मामो आयो तत्कालक। अञ्जना ओलखने मिल्यो, अञ्जना रोवे छै आंसूड़ा रालक॥ डील सूं अलगी हुवे नहीं, बालक जिम धरी रही शीशक। जब खोला में बैसाड़ी धीरपे, बाई हिवे पूरसूं तुम तणी आशक॥ स० ॥ १०४॥ हिवे अञ्जना कहे मामा भणी, माथे आयो मांहरे अणहुन्तो आलक। तिण सूं काढी सासरा थी मो भणी, पीहर में किणहि न कीधी संभालक॥ वले आण देवाड़ी राय घरो घरे, तिण कारण हूं आई बन मझारक। मामाजी पाप पोते घणा, करुणा न कीधी मांहरी किणहि लिगारक॥ स० ॥ १०५॥ हिवे बैस विमाण में संचस्या, अञ्जना रे गोद में

हनुमन्त कुमारक। दीठो तिण मोत्यां रो झुमखो, कूदी ने चञ्चल दीधी छै फालक॥ तोड़ी मोत्यां लड़ भूई पड्यो, अञ्जना मुरछा पामी तिण वारक। तब मामो लेई पुत्र भणी, आण मेल्यो अंजना हिये पासक॥ स०॥ १०६॥ बांह झाली बैठी करी, मामो बोले तिहां बोल रसालक। कहे देश परदेश में हूं फिर्यो, पिण एहवो कठें ही न देख्यो बालक॥ एहवा बचन कहै अंजना भणी, आयो छै हणुपाटण मझारक॥ करे महोच्छव अति घणो, नाम दियो हनुमन्त कुमारक॥ स० ॥ १०७॥ अञ्जना हनुमन्त इहां रहे, पवनजी पहुंचा छै लंकापुरी जायक। तिहां रावण राजा सूं मुजरो कियो, जब रावण बोले छै एहवी वायक। पवनजी आद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो मेलाणक। वरुण राजा ने हटाय ने, वर्तविज्यो तिहां मांहरी आणक॥ स०॥ १०८॥ हिवे मेघपुरी दल संचर्यो, साहमा बरसे तिहां बाणना मेहक। पिण पवनजी पग नहीं चातरे, मांहो

मांहि मनुष्य मुवा घणा तेहक॥ वर्ष दिवस विग्रहो रह्यो, पछे मांहो मांहे मेल कियो ताहक। आण वरतावी रावण तणी, पवनजी हरष पाम्यो मन मांहक॥ स०॥ १०९॥ हिवे कटक आयो रे लङ्का भणी, राजा रावण ने कियो जुहारक। जब रावण वस्त्र वागा आपिया, वले आप्या छै शोभता घणा शिणगारक॥ केई एक दिन राखियां पछे, रावण सीख दीधी तिण वारक। पवनजी आद राजा भणी, ते आया छै निज नगर मझारक॥ स०॥ ११०॥ पवनजी कुशले घर आविया, मात पिता तणे लाग्या छै पायक। जेटले माता भोजन करे, तेटले अञ्जना ने घर जायक॥ सूनां रे महल मालिया देखिया, कुरले छै तिहां अति घणा कागक। पूरव बीती ते बात काना सुणी, जब पवन रे लागी छै अति घणी आगक॥ स०॥ १११॥ हिवे पवनजी तिहां थीं निकल्या, माता पिण आई लारे तिण वारक॥ बांह झाली पवन ने इम कहें, हिवे तो जिमो च्यारु ही आहा-

रक। हूं वहू ने आण मंगवायसूं, पवनजी सांहमो न जोवे रे तामक। बांह छोड़ाय माता कने, गया छै राजा महिन्द ने गामक॥ स०॥ ११२॥ हिवे माता रोवे मुख ढांकने, काम विमासी नहीं कीधो रे एहक। दल भणी जन नहीं मोकल्या, अञ्जना ने नहीं राखी रे गेहक॥ काची रे बुद्धि नारी तणी, केतुमती राणी चिन्तवे एमक। धिग् २ मुझ जीवत भणी, मैं पापणी कीधो अति भुण्डो कामक॥ स०॥ ११३॥ हिवे पवनजी कहे मन्त्री भणी, हूं सासु सुसरा सूं किम करूं प्रणामक। मांहरी माता तेहने पराभवी, तिण सूं सासरा में गई मांहरी मामक। हिवे ऊंचो हुई किम बोलसूं, हिल मिल ने बात करूंला केमक। वले अञ्जना राणी मो ऊपरे, किण विध धरेली हरष ने प्रेमक॥ स०॥ ११४॥ मन्त्री कहे सुणो कुमरजी, आपां तो गया था कटक मझारक। लारे सूं काढी अञ्जना भणी, आपरो दोष नहीं छै लिगारक॥ इम कहे पवन कुमर

भणी, चाकर मेलियो नगर मझारक। कहे पवनजी आप पधारिया, जब अञ्जना ने पीहर हुई चिन्ता अपारक॥ स०॥ ११५॥ महिन्द कहे हूं महा पापियो, मैं दुष्ट अकारज कीधो रे जाणक। हाज़रिया लोक मांहरे घणा, पिण डाह्यो नहीं कोई चतुर सुजाणक॥ सीख नी वात कोने नहीं कही, मनमां मांहरे उपनी बहु रीसक। नरक नियाणो मैं बांधियो, हिवे दुष्ट कर्मा थी केम छूटीसक॥ स०॥ ११६॥ हिवे पवनजी आप पधारिया, सांभल सासु पड़ी शिर झालक। पेट कूटे दोनूं हाथ सूं, उदर आधान किहां गई बालक॥ मन मांहे दुःख वेदे घणो, जाणै कोई जोर सूं लागै छै बाणक। अञ्जना नो दुःख वेदे घणो, तिम २ बोले छै रोवती वाणक॥ स०॥ ११७॥ साथे सेन्या लेई चतुरङ्गिणी, सुसरो जंवाई रे साह्मो जी जायक। बांह पसारी दोनूं मिल्या, दोनां रे दुःख घणो मन मांयक॥ जब पवनजी कहे राजा भणी, तुम पुत्रीने काढी हम

तणी मायक। ए दोष नहीं मूल मांहरो, जब पाछो राजा सूं बोल्यो नहीं जायक ॥ स० ॥११८॥ हिवे पवनजी निज घर आणने, मरदनिया मरदन करने करायो स्नानक। वलि चोवा चन्दन चरचिया, गहणा वस्त्र पहरिया प्रधानक॥ पछै भोजन मंडप आयने, परूसिया भोजन विविध पकवानक। पिण पवनजी कवो भरे नहीं, अञ्जना ऊपर लाग रह्यो अन्तर ध्यानक ॥ स० ॥ ११९ ॥ पिण पवनजी मन मांहि चिन्तवे, जो पुत्र जायो हुवे तो बधाई जी थायक। बसन्तमाला पिण दिसे नहीं, एम विचार करे मन मांहक। अंजना री मा तिण अवसरे, चिन्ता मन में करे जी अपारक॥ कहे हूं तो पापणी मोटकी, मैं अंजना ने न राखी घर मझारक ॥ स० ॥ १२० ॥ हिवे सालानी सुना रे नाहनड़ी, तिण ने पवनजी लीधी छै खोला मझारक। कहो थांरी भुवाजी स्यूं करे, ते रुदन करी ने बोली तिणवारक॥ माता पिता ने बंधव सहु, सगलाई कीधो छै कर्म चण्डा-

लक । आंगन न राखी रे अध घड़ी, कलंक सुणी
ने काढी तत्कालक ॥ स० ॥ २२१ ॥ एहवा
वचन सुणी बालिका तणा, पवनजी दूर फेंक दियो
छै थालक । महिन्द्रराय आय पाये पड्यो, तब
मन्त्री कहे तूं मूर्ख गिंवारक ॥ कलंक री सुध
कीधी नहीं, गिंगर विचारियां काढी रे बालक ।
अकल भ्रष्ट हुई तांहरी, कटुक वचन कह्या तिण
वारक ॥ स० १२२ ॥ हिवे प्रहस्त मन्त्री कहे
पवनने, बोले छै मुख थी एहवी वायक । उठो
स्वामी किम बैसी रह्या, अंजना नी खबर करां
वेग जायक ॥ मूंई छै के अथवा जीवती, सुख
दुःख भोगवे छै किण ठामक । एहवा वचन सुनी
मन्त्री तणा, अंजना ने दोनूं जोवा छै तामक ॥
स० ॥ १२३ ॥ हिवे महेन्द्र राजा पिण साथे
हुवो, वले प्रह्लाद राय आयो लेई साथक । वले
माता पिण आई छै रोवती, सांभल पुत्र एक
आंहरी बातक ॥ अम्हे खबर करास्यां अंजना
तणी, थे तो जावो निज नगर मझारक । नारी

काजे लाज छोड़ो मति, पवनजी नहीं मानी बात लिगारक ॥ स० ॥ १२४ ॥ तब अनेक विमाण चलाविया, चले शूरमां पुरुष फेस्या असवारक। ठाम ठाम जोवे अंजना भणी, मुख सूं बोले छै पवन कुमारक ॥ जो सती लाभे तो हूं जीवसूं, नहीं तो अकाले करदेसूं कालक। देश परदेश फिरतां थकां, अंजना सुनी छै निज मोसालक ॥ ॥ स० ॥ १२५ ॥ जब पवनजी चाल्या छै आगले, पीछे आये छै सगलो जी साथक। जब बसन्त-माला पवनजी ने ओलख्या, कहे अंजना ने आव्यो छै तुम तणो नाथक ॥ जब अंजना आय पाये पड़ी, खोला में बैसाड्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १२६ ॥ बसन्तमाला आय पाये पड़ी, हीयांसूं भीड़ी पवन कुमारक। कहो बाई दुःख तुम किम सह्या, किम सही मांहरी माय नी मारक ॥ किम करी बनफल बीणिया, किम करी रही बन मझा-रक। किम करी काल गमावियो, किम करी पाल्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥१२७॥ स्वामीजी

आप कटक में पधारिया, सासरे पीहर म्हांने दियोजी छेहक। तिणसूं करी म्हें बनमें गई. बन फल भाखि ने काढिया दिहक॥ तिहां मोटा मुनिवर भेटिया, वले देवता कीधी छै हम तणी सारक। रात दिवस धर्म पालतां, मामो लेई आयो इण नगर मझारक॥ स०॥ १२८॥ हिवे वसन्तमाला अने अंजना, पवन ने बोले छै मधुरी वाणक। आप किम कटक में संचस्या, किम सह्या राजा बरुण ना बाणक॥ जब पवन कुमार इसड़ी कहे, मैं वरुण राजा सूं युद्ध कियो तेथक। जब घाव लागा ते साजा हुवा, जीत फते कर आयो छूं एथक॥ स०॥ स०॥ १२९॥ हिवे अंजना सती तिण अवसरे, सासु सुसरा ने लागी जी पायक। जब सुसरो आंख्यां आंसू भरे, मैं कलंक देई ने कीधो जी अन्यायक॥ अंजना पाय नमी कहे, बापजी केम करो छो बिलापक। दोष नहीं छै तुम तणो, पोते छा मांहरे बोह्ला पापक॥ स०॥ १३०॥ वले माता पिता सूं जाय मिली,

भाई भोजायां सूं अति घणो नेहक। माता पिता ते रोवे घणा, अञ्जना मात पिता ने कहे छै तेहक॥ थे चिन्ता करो किण कारणे, पोते छा मांहरे घोहला पापक। तिण कारणे मैं दुःख भोगव्या, मूल न करज्यो कोई सन्तापक॥ स०॥ १३१॥ हिवे हणुपाटन थी चालिया, अञ्जना ने मामे आपी घणी आथक। साथे आयो पहुंचायवा, चतुरङ्गणी सेन्या लेई साथक॥ साथे तो परजा अति घणी, रतनपुरी आया मोटे मण्डाणक। उछरंग मन मांहे अति घणो, घर घर वरत्या छै कोड़ कल्या-णक॥ स०॥ १३२॥ हिवे सीख देई मामा भणी, अञ्जना सती पवन कुमारक। सुख भोगवे संसार ना, मांहों मांहि लग रही प्रीत अपारक॥ काल कितोक गयां पछे, राजा राणी खारो जाण्यो संसारक। राज देई पवनजी भणी, मोटे मण्डान लीधो संयम भारक॥ स०॥ १३३॥ पवन नरिन्द राज भोगवे, अञ्जना राणी सूं हेत विशे-षक। हनुमन्त कुमार विद्या भणे, वानरी आदि

विद्या भण्यो अनेकक ॥ चतुर विचक्षण अति घणो, देश प्रदेश में हुवो जी विख्यातक। वसन्त-माला रो मान बधारियो, सगलाई पूछ करे तेहने बातक ॥ स० ॥ १३४ ॥ हिवे वरुण राजा तिण अवसरे, आपणा पुत्रां ने जागी सजोरक। बल पराक्रम देखी आपणो, मन मांहि धरे अति अभि-मानक ॥ तिण लङ्का भणी दूत मोकल्यो, जो तांहरे युद्ध करवा तणो भावक। तो बीजा सुभट दल मोकली, तुम्हे एकर सूं जोवा मुझ आयक ॥ स० ॥ १३५ ॥ रावण सेना मेली घणी, एक तेड़ो मेल्यो रतनपुरी मांहक। जब पवनराय जावा ने सज हुवा, जब हनुमन्त कुमार बोले एहवी वायक ॥ कहे कटक मांहि हूं जाव सूं, जब पवनजी अंजना कहे छै आमक। पुत्र तूं अजे बालक अछे, कटक मांहे नहीं तांहरो कामक ॥ स० ॥ १३६ ॥ हनुमन्त हठ करी चालियो, महिन्दपुरी जाय कियो मेलाणक। तीन पहर दल आफल्यो, बंधन बांध्यो नाना ने जायक ॥

शूरसेन राजा आय लाजियो, बंधन छोड़ी ने कियो प्रणामक। कहे मांहरी माता ने राखी नहीं, तिण कारणे मैं आय कियो संग्रामक ॥ स० ॥ १३७ ॥ हिवे हनुमन्त आयो लङ्का भणी, साह्मो आयो छै रावण रायक। हनुमन्त कुमार ने देखने, रावण पामियो अति हरष अथाय ॥ बीड़ो झाली ने हनुमन्त निकल्यो, बीजा पिण चाल्या अति घणा रायक। सांह्मो आयो कटक वरुण नों, युद्ध हुवो घणो, मांहो मांयक ॥ स० ॥१३८॥ रावण की सेना देखी करी, सौ पुत्र वरुण ना चाल्या तिण वारक। युद्ध करवा लागा तिण समे, लोहना बाण जाणे मूके अङ्गारक ॥ चले गोला ने बाण वहे घणा, काम आया बड़ा बड़ा जोधारक। जब रावण की सेना न्हासी गई, सेंठो उभो रह्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १३९ ॥ घणा लोक कहे हनुमन्त ने, तूं मात पिता ने अलखावणो बालक। तिण सूं तोने मेलियो कटक में, तूं वरुण सं युद्ध कियां कर-

जायलो कालक ॥ वल तो हनुमन्त इम कहे; वरुण ने पुत्र मिल आवज्यो साथक। वातां कियां सूं खबर नहीं, बल तणी खबर पड़े रण में वाचस्यां हाथक ॥ स० ॥ १४० ॥ वानरी विद्या साधी करी, वानर रूप कियो तिण वारक। वारे जोजन में वृक्षादिक हुन्ता, ते लेई न्हाख्या वरुण नी फौज मझारक ॥ घणो कतल कियो वरुण नी फौज नों, वले लाम्बो पूंछ विकुर्व्यो तिण वारक। सौ पुत्र राजा वरुण तणा, बांध लिया तिण पूंछ मझारक ॥ स० ॥ १४१ ॥ वरुण राजा कहे हनुमन्त ने, तूं वानरी विद्या ने मेल दे दूरक। पछे जीत पामजे रण विषे, तो हूं जाणूं तोने मोटको शूरक ॥ जब हनुमन्त विद्या मेली बांदरी, मूलगोरूप करी मेले छै बाणक। जब वरुण राजा इम चिन्तवे, ए बालक दिसे छै महा बल-वानक ॥ स० ॥ १४२ ॥ हिवे धधकी ने वरुण राजा उठियो, हनुमन्त कुमार सूं मांडी छै राडक। दोनूं जणा हाथ चलावे तिहां, मुष्टि ना बाज रह्या

परिहारक ॥ रावण राजा तिण अवसरे, हनुमन्त ने ऊपर कीधो छै हाथक। जब हनुमन्त वरूण राजा भणी, बांधीने न्हाख दियो रण मांहिक ॥ स० ॥ १४३ ॥ हनुमन्त कहे बन्धन तोडूं तांहरा, जो रावण राजा रे लागे तूं पायक। जब वरूण कहे वीतराग विन, अवर रा पाय वन्दू नहीं जायक ॥ चारित्र लेणो छै मांहरे, तब हनुमन्त बन्धन तोड़िया तामक। वरूण लियो चारित्र वैराग सूं, तिणरा पुत्र ने राज दियो रावण रायक ॥ स० ॥ १४४ ॥ रावण हनुमन्त ने प्रशंसियो, तूं शूर घणो थांरी लघुजी वेशक। ते मोटा राजा ने हटावियो, रीझ देई आयो लंक नरेशक ॥ परणाई भाणेजी आपणी, सीख दीवी सनमान सत्कारक। वले हनुमन्त मोटा राजा तणी, रूपवती कन्या परणियो एक हजारक ॥ स० ॥ १४५ ॥ पवन नरिन्द राज भोगवे, मानेती राणी अञ्जना नारक। बसन्तमाला सूं हेत अति घणो, वले मानेतो छै हनुमन्त कुमारक ॥ ते संसार

ना सुख भोगवे, हनुमन्त कुमार सहस नाखां सहितक। रतन जड़ित महिलां मझे, मांहो मांहि लग रही अति प्रीतक ॥ स० ॥ १४६ ॥ हिवे काल कितोक गयां पछै, अञ्जना चिंतवे चित्त मझारक। परभाते राजा ने पूछने, लेणो सिरे मोने संयम भारक ॥ इम चिंतवी आई राजा कने, हाथ जोड़ी बोले शीश नमायक। आज्ञा द्यो स्वामीजी मो भणी चारित्र लई देऊं कर्म खपायक ॥ १४७ ॥ जब राय कहे अञ्जना भणी, केईक दिन रहो घर मझारक। हिवे पुत्र बालक अछै, पछे साथे लेस्यां आपें संयम भारक ॥ तब अञ्जना हाथ जोड़ी ने इम कहे, मोने काल रो विश्वास नहीं छै लिगारक। तिण कारण दीक्षा लेसूं सहि, जब राजा पिण हुवो छै साथे तैयारक ॥ स० ॥ १४८ ॥ हिवे हनुमन्त कुमारने तेड़ने, पवनजी बोले छै एहवी वायक। अमे चारित्र लेस्यां वैराग सूं, हनुमंत कुमार रोयो घणो तायक। पछे राज वैसाण्यो मोटे मण्डाण सं, बसन्तमाला

अञ्जना पवनजी रायक। आज्ञा लेई हनुमंत कुमार नीं, तीनूं ही लीधो संयम सुख दायक ॥ स० ॥ १४९ ॥ मास मास खमणे करे पारणो, शरीर सूखाई दुरबल करी कायक। तीनांरी नसां जाल दीसे जुई जुई, हाल्यां चाल्यां घणी वेदना थायक। तीनूं जणा वैराग सूं, च्यारूं आहार पच्चक्खी कीधो संथारक। केवल ज्ञान उपाय ने, कर्म तोड़ी गया मुक्ति मझारक ॥ स० ॥ १५० ॥

॥ इति अंजना सती रो रास समाप्तम् ॥
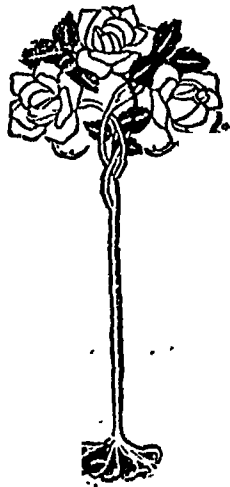
श्री मैणरह्या सती की चौपाई ।

॥ दोहा ॥

जुवो मांस दारु थकी, करे वेश्या सूं जोग ।
जीव हिंसा चोरी करे, परनारी नों भोग ॥१॥

॥ ढाल रास की चाल ॥

व्यसन सातमो परनारी नो, प्रत्यक्ष पाप देखायो । रावण पद्मोत्तर मणरथ राजा, तीनूंई राज गमायो ॥ राजवीयांने राज पियारो ॥ एदेशी ॥ १ ॥ मणरथ राजा कर मनसुबो, जुगबाहु ने माखो । आप मुओ ने राज गमायो, हाथ कछुय न आयो ॥ रा० ॥ २ ॥ रावण राजा

पहिलां हुवो, पीछे पदमोत्तर रायो। तीजी कथा मणरथ राजा नी, ते सुणज्यो चित्त लायो ॥ रा० ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप रा भरत क्षेत्र में, नगर सुदरशण भारी। धन सूं पूरण देखत सुन्दर, रैयत सुखी राजा री ॥ रा० ॥ ४ ॥ मणरथ राजा रे धारणी राणी, ऋद्धि तणो विस्तारो। हाथी घोड़ा ने रथ पायक सेना, वरते चौथो आरो ॥ रा० ॥ ५ ॥ स्वचक्र ने परचक्र केरो, विरोध नहीं तिणवारो। मणरथ राजा रे जुगबाहु भाई, मांहो मांहि छै प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री ना भोग भोगवंता, नाटक पड़े दिन रैणो। विविध प्रकार नी क्रीड़ा करतां, विषय विरोध मंडाणो ॥ ॥ ७ ॥ मणरथ राजा राज भोगवतां, चढ़ियो महल उदारो। तिण अवसरे मैंणरथा दीठी, जुगबाहु नी नारो ॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने राजा अचरज पाम्यो, अहो अहो रूप तुमारो। इण राणी ने हूं महल में राखूं, सुख विलसूं संसारो ॥ रा० ॥ ९ ॥ मणरथ राजा कर मनसुबो,

जुगबाहु ने बुलायो। करो सजाई आयुद्धशाला नी, हूं देश लेवण ने जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ी ने जुगबाहु बोल्यो, ओ तो छै थोड़ो कामो। राज विराजो राजसभा में, हूं जासूं भाई तामो ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणरथ राजा राजी हुवो, हुकुम कियो छै भाई। देश किल्लो कायम करी आवो, ले जावो फौज सजाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ जुगबाहु तो उठ्यो शताब सूं, हरष हुवो मन मांहि। किल्लो कायम कर पाछो आऊं, जब मुजरो करूंला भाई ॥ रा० ॥ १३ ॥ ले फौजां जुगबाहु चाल्यो, मजला मजला जायो। जुगबाहु तो मन में नहीं जांण्यो, मणरथ कियो उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥ मणरथ राजा मैंणरह्या कारणे, भारी वस्तु मंगावे। गहणा जड़ाव रा पहरण सारूं, दासी रे हाथ पहुंचावे ॥ रा० ॥ १५ ॥ दासी राजा रे हुकुमे छाने, वस्तु लेई देवे राणी ने जायो। मणरथ राजा चोज बनायो, तिणरी खबर न कायो ॥ रा० ॥ १६ ॥ मैंणरह्या मन मांहि जाण्यो, धणी चाल्यो

छै गामो। मैंणरह्या मन ऊणी जाणी, जेठ पिता री ठामो॥ १७॥ इम जाणी ने राणी उराह लीधा, वस्तु आभूषण सारो। नेह सनेह वस्तु मेली जाण्यो, राजा लागो म्हांरी लारो॥ रा०॥ १८॥ मैंणरह्या ने रीसज आई, दीनो दासी ने झझकारो। धणी तो म्हारो परदेश सिधायो, राजा पड़ियो म्हारी लारो॥ रा०॥ १९॥ दासी तो मन में दिलगीर हुई, राजा पासे आई। मैंणरह्या तो महाराज कोप करी ने, दीनी वस्तु बगाई॥ रा०॥ २०॥ मणरथ राजा रात समय में, महल भाई रे आयो। दरवाजो तो जड़ियो दीठो, हेलो मारे छै रायो॥ रा०॥ २१॥ मैंण-रह्या तो मन मांहि जाण्यो, मणरथ राजा आयो। बीजो तो कोई उपाय न दीसे, हूं सासु ने द्यूं रे जणायो॥ रा०॥ २२॥ मैंणरह्या तो छाने जाय ने, दीनो सासु ने जणायो। अमलां मसतां माता जाण्यो, बेटो भोले आयो॥ रा०॥ २३॥ ओ तो महल बेटा जुगबाहु रो, महल पेली कांनी

थारो। बचन माता नों सांभल राजा, लाज्यो छै तिणवारो ॥ रा० ॥ २४ ॥ मैणरह्या मन मांहे जाण्यो, पड़ियो राजा म्हारे लारे। तो कासीद मेलूं धणी ने, वेगा आवज्यो इण वारे ॥ रा० ॥ २५ ॥ बीती बात लिखी कागद में, जीवती जाणो मोने। तो पाछा घरे वेगा आवज्यो, दगो कियो छै थांने ॥ रा० ॥ २६ ॥ कासीद कागद दियो शताब सूं, जुगबाहु ने जाई। कागद बांचने जुगबाहु जाण्यो, दगो कियो छै भाई ॥ रा० ॥ २७ ॥ इम जाणी ने जुगबाहु बलियो, ढील न कीनी कांई। मुहूरत नहीं महलां जावण रो, नीमित्तिये बात बताई ॥ रा० ॥ २८ ॥ जुग-बाहु तो डेरा बारे कीना, नगरी में नहीं आयो। मणरथ राजा रो डर जाणी ने, राणी धनी कने जायो ॥ रा० ॥ २९ ॥ मैंणरह्या मित्र आप धणी री, पर पुरुष प्रीत न जाणी। व्रत आप रो राखण सारू, जतन करे छै राणी ॥ रा० ॥ ३० ॥ मैंणरह्या तो पहुंती शताब सूं, विध सूं बात

सुनाई। जुगबाहु तो मन में न जाण्यो, मारेलो मनै भाई ॥ रा० ॥ ३१ ॥ जुगबाहु ने आयो जाणी ने, डर उंपनो राजा रे। मणरथ राजा करे विमासण, उमराव छै इण रे सारे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ जुगवाहु ने राणी कहे छै, दगो करेलो थारो भाई। साथ समान छै इणरे सारे, तो हूं पहेली मारूं जाई ॥ रा० ॥ ३३ ॥ भाई मारण राजा रात रो चाल्यो, चढ़ियो एक सखाई। दोढ़ी-दार चाकर पालतां, गयो धकाय ने मांई ॥ रा० ॥ ३४ ॥ मैंणरह्या तो मनरी दाखवी, जितरे मनरथ आयो। राणी कहे सावधान हुवो, मारे लो थाने भायो ॥ रा० ॥ ३५ ॥ मैणरह्या तो न्यारी हुई, राजा नेड़ो आयो। जुगबाहु तो न्यारो सूतो, मणरथ घावज बायो ॥ रा० ॥ ३६ ॥ भाई मार राजा पाछो बलियो, हुयो घोड़े असवारो। सरप पूंछड़ी खूर हेठे चींथी, खाधो छै तिण वारो ॥ रा० ॥ ३७ ॥ मणरथ राजा हेठे पड़ियो, मरने गयो नरक तत्कालो। खबर नहीं कोई राज सभा में,

करमां कीनो छै चालो ॥ रा० ॥ ३८ ॥ मैंणरथा तो कने आई, दुःख धरती मन मांई। मैं तो थांने कह्यो छो महाराजा, मारेलो थाने भाई॥ रा० ॥ ३९ ॥ मैंणरथा तो कहे धणी ने, करो संथारो सोई। च्यारे शरणा थांने होज्यो, नहीं किणही रो कोई ॥ रा० ॥ ४० ॥ मोरा प्रीतमजी थांने द्युं सीख, बचन हिया में थे धारो। साहिब तो परदेश सिधावो, हूं भातो बांधूं छूं लारो॥ रा० ॥ ४१ ॥ मोरा प्रीतमजी थांरे देव अरिहन्त छै, गुरु निग्रन्थ श्री साधो। धर्म केवली भाख्यो दया में, समकित नियम आराधो ॥ रा० ॥ ४२ ॥ मोरा प्रीतमजी थांने जीव मारण रो, जाव जीव पच्चक्खाणो। सर्व प्रकारे मृषावादे, अदत्तादान में जाणो ॥ रा० ॥ ४३ ॥ मोरा प्रीतमजी थांने मैथुन सेवण रो, नवविध बाड़ प्रमाणो। मनुष्य देवता तिर्यञ्च सम्बन्धी, जावजीव पच्चक्खाणो ॥ रा० ॥ ४४ ॥ मोरा प्रीतमजी थांने क्रोध मान रो, माया लोभ ए च्यारो। मन में तो ममता मती

राखज्यो, जावजीव परिहारो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ मोरा प्रीतमजी थे राग द्वेष दोई, बंध करमां रा जाणो। कलह अभ्याख्यान पैशून्य चाड़ी, पर परिवाद पच्चक्खाणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ मोरा प्रीतमजी रति अरति इम जाणो, माया मोसा नहीं भलो। पाप अठारै त्रिविध वोसराऊं, मित्थ्या दरशण सलो ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मोरा प्रीतमजी मरण तणो भय न आणो, धर्म साचो करि जाणो। परभव में ते साथे चालसी, गांठे बांध्यो नाणो ॥ रा० ॥ ४८ ॥ मोरा प्रीतमजी थे मोह थकी मन वालो, मोह में जीव मती घालो। करो आलो-यणा कारज सरे ज्यूं, मत राखो कोई सालो ॥ रा० ॥ ४९ ॥ मोरा प्रीतमजी दश दृष्टान्तै, मनुष्य जमारो दोहेलो। इण भव में जो पुन्य करे तो, परभव सुख सोहेलो ॥ रा० ॥ ५० ॥ मोरा प्रीतमजी ज्ञाने विचारो, सुपनारी माया जाणो। डाभ अणी जल बिन्दु जिम जाणो, मन में समता आणो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ मोरा

प्रीतमजी थे दोष करमां रो जाणो, बीजा ने दोष न दीजे। ऋण वैर तो कोई न छोड़े, बांध्या ते भुगतीजे ॥ रा० ॥ ५२ ॥ मोरा प्रीतमजी किण रा मात पिता, कुण कुटुम्ब कुण भाई। घर री तो साहिब नहीं स्त्री, स्वारथ सरव सगाई ॥ रा० ॥ रा० ॥ ५३ ॥ मोरा प्रीतमजी नहीं काया आपणी, साची धर्म सगाई। शत्रु मित्र ने सरीखा जाणो, अवसर जावे ठाई ॥ रा० ॥ ५४ ॥ मोरा प्रीतमजी थांरे सरदहणा शुद्ध छै, चौविहार अणशण दियो। मरणो सहु ने एक दिहाड़े, सेंठो राखज्यो हीयो ॥ रा० ॥ ५५ ॥ जुगबाहु तो संथारो सरध्यो, साहाज दियो छै राणी। काले मासे काल करी ने, जाय उपनो विमाणी ॥ रा० ॥ ५६ ॥ मैणरह्या छाती काठी करने, कारज धणी नों कियो। पूरा मित्र ते पार उतारे, धन जीवित जिण रो जियो ॥ रा० ॥ ५७ ॥ मोह वशे होय काम बिगाड़े, मरण विरिया नरक में घाले। सगा नहीं ते पूरा वैरी, सूंस लेताने

पाले ॥ रा० ॥ ५८ ॥ मित्र हुवे ते मरण सुधारे, करे पर उपकारो। दे सरदहणा सूंस करावे, ते विरला संसारो ॥ रा० ॥ ५६ ॥ धन छै संसार में मैंणरह्या राणी, मोह धणी नों निवाऱ्यो। आप तणो भरतार जाणी ने, तिण उपदेश देई ने ताऱ्यो ॥ रा० ॥ ६० ॥ मैंणरह्या मन मांहि जाण्यो, पकड़ेलो मोने रायो। वेष बदलने परी निकली, दासी नाम धरायो ॥ रा० ॥ ६१ ॥ डेरा मांह सूं तो बारै निकली, गई उजाड़ रे मांयो। पूरी आपदा कोई नहीं साथे, राणी रे कुंवर जायो ॥ रा० ॥ ६२ ॥ जिण जायां देशोटन हुन्ता, बांटता राज वधाई। विषय वियोग में कुंवर जायो, जोईज्यो करम कमाई ॥ रा० ॥ ६३ ॥ चांपो पाछैलो राणी डरपे, रखे आवेलो कोई लारो। इम जाणी ने कुंवर ऊंचायो, हुई करमा रे सारों ॥ रा० ॥ ६४ ॥ कोमल काया ने कारण पड़ियो, पांव पड़े नहीं ठायो। कुमर तो राणी निभतो न जाण्यो, बालक मेले बन मांयो ॥ रा० ॥ ६५ ॥

चीर बिछाई ऊपर सुवाड्यो, बाल बिछोहो जाण्यो। होतव थारो जो होसी रे जाया. मैंणरह्या दुःख आण्यो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ कुंवर मेल राणी आगी चाली, अन्न बिना सूनी काया। कटे सुवावड़ कुण मंगल गावे, करमा चैन दिखाया ॥ रा० ॥ ६७ ॥ घणा दास ने दासी हुन्ता, राजकुंवर नी धायो। दोढ़ी पड़दा मांहे रहती, राणी एकली जायो ॥ रा० ॥ ६८ ॥ जातां जातां आगे नदी आई, पानी में वस्त्र पखाल्या। स्नान करी ने तीरज बैठी, उठी दुःख री झाला ॥ रा० ॥ ६९ ॥ कौन वियोग पड्यो मो मांहे, किसे ठिकाने आई। रोही में भमती एकलड़ी, रोवे छै विललाई ॥ रा० ॥ ७० ॥ किण घर जनमी किण घर आई, राजा री राणी, कहवाई। साहिब म्हारो मुवो मेली, हूं रोही में आई ॥ रा० ॥ ७१ ॥ कुंवर विछोहो मात पिता रो, जुगवल्लभ लघु भाई। जुगवल्लभ ने महलां मेल्यो, बालक छै वन मांहि ॥ रा० ॥ ७२ ॥ महल झरोखा शोभा जाली

री, राजवीया रूसनाई। ऋद्धि साहिबी उभी मेली, हूं तीर नदी रण मांहि ॥ रा० ॥ ७३ ॥ विषम उजाड़ ने आय बैठी नों, सुख नहीं तिल रती। मैंणरह्या तो दुःख करती बैठी, सङ्कट पड्यो छै सती ॥ रा० ॥ ७४ ॥ झूरे धणी ने करे विलाप, दुःख भर छाती फाटे। मैंणरह्या नों दुःख प्रभु जाणे, बैठी छै तट माटे ॥ रा० ॥ ७५ ॥ संजोग रूपणी रोही हुन्ती, विजोगे तिण बाली। नाथ विहुणी दुःखनी करती, आणी रण में राली ॥ रा० ॥ ७६ ॥ देखो सगाई इण संसार में, विछड़तां नहीं वारो। इम जाणी ने सतगुरु सेवो, लाहो लेज्यो लारो ॥ रा० ॥ ७७ ॥ तिण अवसर में देवता इम जाण्यो, दुःख करे छै राणी। वैक्रिय रूप कियो हाथी रो, रमत मांडी पाणी ॥ रा० ॥ ॥ ७८ ॥ दुःख विसारण विलम्बज कियों, संड़ सूं उछाले पाणी। दुःख छोड़ी ने हाथी दीठो, रमत देखे राणी ॥ ७९ ॥ जिम जिम रमत देखे राणी, अचरज रमत भारी। धर्म अंकुरो पुन्य

संजोगे, आवे छै नर नारी ॥ रा० ॥ ८० ॥ देवता छै कोई पर उपकारी, राणी ने सूंड़ सूं झाले। जितरे नेड़ा आय निकलिया, लेके विमाण में मेले ॥ रा० ॥ ८१ ॥ विद्याधर तो राजी हुवो, रूप घणो इण नारी। तुरन्त विमाण में ले पाछो बलियो, सुख विलसा संसारी ॥ रा० ॥ ८२ ॥ मैंणरह्या तो मन में जाण्यो, तुरत वल्यो छै पाछो। कुण जाणे कुण देश ले जावे, ओ तो नहीं दीसे छै आछो ॥ रा० ॥ ८३ ॥ विद्याधर ने मैंनरह्या पूछे, जाता किण दिश भाई। अवे तो थे पाछा वलिया, कांई दिल में आई ॥ रा० ॥ ८४ ॥ भगवन्त ने तो दरशण जातां, तो सरीखी मिली नारी। इम जाणी ने पाछो वलियो, सुख विलासा संसारी ॥ रा० ॥ ८५ ॥ मैंणरह्या मीठे बचने दाखवे, भगवन्त दरशण जातां। मारग में थाने हूंज मिली छूं, नफो घणो दरशण करता ॥ रा० ॥ ८६ ॥ तीर्थङ्कर नों दरशण करतां, प्रसन्न होसी थारी काया। विद्याधर तो पाछो

बलियो, मैंणरह्या रे मन भाया ॥ रा० ॥ ८७ ॥ समवसरण सूं नेड़ा आया, विमाण सूं उतरिया। कर बन्दना ने सुने व्याख्यान, कारज सगला सरिया ॥ रा० ॥ ८८ ॥ जुगबाहु तो देवता हुवो, उठ्यो छै उमंग आणी। सेवक तो कर जोड़ हरषत है, जय जयकार मुख बाणी ॥ रा० ॥८९॥ इण ठामे स्वामी आय उपना, हुवा हमारा नाथो। कुण गुरु नी सेवा कीनी, दान दियो छै हाथो ॥ ॥ रा० ॥ ९० ॥ ज्ञान करी ने देवता दीठो, पूरब भव नों विचारो ॥ जुगबाहु तो हमारो नामज हुन्तो, मैंणरह्या म्हारी नारो ॥ रा० ॥ ९१ ॥ मैंणरह्या रे कारण मोने मणरथ भाई मार्यो। दे शरणां ने सूंस करायो, मैंणरह्या मोने तार्यो ॥ रा० ॥ ९२ ॥ उपगारी नों गुण जाणी ने, देवता दरशण जायो। देखूं मैंणरह्या कुण ठिकाने, बैठी समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ९३ ॥ परगट रूप कीनो छै देवता, प्रभु ने प्रदक्षिणा दीधी। साधु साध्वी ने वन्दना करने, मैंनरह्या ने वन्दना कीधी ॥

रा० ॥ ६४ ॥ परषदा देखने हसवा लागी, देव दीसे छै गहलो। स्त्री ने तो वन्दना कीधी, जिण रो प्रभु उत्तर देलो ॥ रा० ॥ ६५ ॥ जुगबाहु इणरो नामज हुन्तो, मैंणरह्या इणरी नारो। धर्म तणो इण ने साहज दीनो, हुवो सुर अवतारो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ मैंणरह्या रे कारण इण ने, मणरथ भाई माखो। दे शरणा ने सूंस करायो, इण ने मैंणरह्या ताखो ॥ रा० ॥ ६७ ॥ मैंनरह्या तो मन में जाण्यो, धणी दीसे छै म्हारो। इण अवसर में संयम आवे, पीछे विद्याधर नों नहीं सारो ॥ रा० ॥ ६८ ॥ भरी परषद्रा में मैंणरह्या उठी, बोले छै करजोड़ी। आज्ञा दो तो स्वामी संयम लेऊं, टालूं भव तणी खोड़ी ॥ रा० ॥ ६९ ॥ देव कहे थांने आज्ञा म्हारी, ल्यो थे संयम भारी। जुगबाहु तो उऋण हुवो, मैंनरह्या ने तारी ॥ रा० ॥ १०० ॥ मोने तो विद्याधर लायो, परवश वात प्रकाशी। कठे विद्याधर कह्यो देवता, गयो विद्याधर नाशी ॥ रा० ॥ १०१ ॥ मैंणरह्या तो

संयम लीधो, ज्ञान भणे गुरुणी पासे। विनय करी ने आज्ञा पाले, सुमति गुप्ति प्रकाशे ॥ रा० ॥ १०२ ॥ देवता तो मन में हरषज पाम्यो, पूज्या प्रभुजी ना पायो। साधु साध्वी सर्व वांदी ने, आयो जिंण दिश जायो ॥ रा० ॥ १०३ ॥ देवता तो आपणे ठामे पहुन्तो, मैंणरह्या संयम पाले। बालक तो मारग में मेंल्यो, आपरा पुन्य रुखवाले ॥ रा० ॥ १०४ ॥ ना तो कोई हिंसक नेड़ो आयो, नहीं कोई पक्षी खायो। देखो पुन्यांई के प्रभाव थी, सुकृत कीनी सहायो ॥ रा० ॥ १०५ ॥ मिथला नगरी नों पद्मरथ राजा, चढ़ियो शिकारज सोई। पाप करन्ता पड़ै पाधरो, पूरव सुकृत होई ॥ रा० ॥ १०६ ॥ कर असवारी राजा रण में फिरता, जोवै जीव सब कोई। रण मांहि तो बालक सूतो, दीठो राजा सोई ॥ रा० ॥ १०७ ॥ बालक नेड़ो राजा आयो, रूप देखने अचरज पायो। बालक कोई पुण्यवंत दीसे, राजा रे मन भायो ॥ रा० ॥ १०८ ॥ म्हारा राज में पुत्र नहीं छै, म्हारे

सहजे आयो। तो इण बालक ने उरो लेऊं; सोंपूं राणी ने जायो ॥ रा० ॥ १०९ ॥ कुंवर लेई ने राजा पाछो वलियो, आयो राज दुवारो। पुष्पमाला राणी राय तेड़ावे, पुत्र दियो छै करतारो ॥ रा० ॥ ११० ॥ नव मास तो भारां मरे छै, देवता पितर मनायो। आपणे पूरव पुण्य करी ने, कुंवर सहज में आयो ॥ १११ ॥ आपणा राज में पुत्र नहीं छै, करो इणरी प्रतिपालो। राज लायक ओ कुंवरज दीसे, होसी राज रुखवालो ॥ ॥ रा० ॥ ११२ ॥ भार भोलावण देई राणी ने, कुंवर खोले घाल्यो। पुण्यवन्त राज में आया पीछे, भोमिया नमी ने चाल्यो ॥ रा० ॥ ११३ ॥ भोमिया म्हारे अनमी हुन्ता, कुंवर राजमें आयो। भोमिया म्हारे सर्व चाकर हुवा, नमीय नाम दरशायो ॥ रा० ॥ ११४ ॥ नमीय कुंवर पद्मरथ राजा, दिन दिन बधतो होई। मात पिता बंधव विछोहो, ते सुणज्यो सहु कोई ॥ रा० ॥ ११५ ॥ जुगबाहु ने मणरथ मास्यो, विषया रस रे चायो।

पाछा बलतां ने सापज खाधो, गयो नारकी मांयो ॥ रा० ॥ ११६ ॥ दोनूं राजा रो मरण हुवो, खबर हुई नगरी मांई। मैंणरथ्या तो निकल नाठी, तिण री खबर न कांई ॥ रा० ॥ ११७ ॥ संसार नों तो कारज कियो, राज जुगवल्लभ ने दियो। किण ने दोष न दीजे प्राणी, करम आपरा कियो ॥ रा० ॥ ११८ ॥ जुगवल्लभ तो राज करे छै, वरते छै चौथो आरो। बाप तणी मन में थोड़ी आवे, पिण तें दुःख वरते माता रो ॥रा०॥११९॥ नमी कुमार तो मोटो हुवो, विरह पड्यो राजा रो। नमी कुमार ने राज बैसाड्यो, सुख विलसे संसारो ॥ रा० ॥ १२० ॥ जुगबाहु तो देवता हुवो, मैंणरथ्या संयम पाले। जुगवल्लभ ने नमी भाई, दोनूं राज रुखवाले ॥ रा० ॥ १२१ ॥ आठ करम छै महा जोरावर, जीवां ने फोड़ा पाड़े। न्यारा ने तो न्यारा कीना, करतब खेल दिखाड़े ॥ रा० ॥ १२२ ॥ दोनूं राजा राज भोगवन्ता, अटवी पड़ी है सीमाड़े। भूमि आपणी राखण सारूं, करे राजवी राड़े ॥

रा० ॥ १२३ ॥ जुगवल्लभ तो मन में जाण्यो; आयलड़ दिसे कठारो। देखोने म्हारी धरती लेसी, राजविया अहङ्कारो ॥ रा० ॥ १२४ ॥ जुगवल्लभ तो फौजां ले चढ़ियो, कांकड़ सीमे जावे। नमी राजा मन में कोप करी ने, मन में मगज न मावे ॥ रा० ॥ १२५ ॥ नमीराय तो करी सजाई, बोले छै बांकी बाणी। मरम मोसो बोले माता रो, चढ़ियो छै इम जाणी ॥ रा० ॥ १२६ ॥ तिण अवसर में मैंणरथ्याजी, मन में इसड़ी आणी। अङ्ग जात छै दोनूं म्हारा, नहीं हठे पुन्य प्राणी ॥ रा० ॥१२७॥ घणा जीव री घातज होसी, मरसी घणा अजाणी। यासूं बणे जो उपगार कीजे, मैंणरथ्या मन आणी ॥ रा० ॥ १२८ ॥ कर बंदना गुरुणी ने पूछे, आप कहो तो हूं जाऊं। दोनूं राजा रे राड़ मंडी छै, हूं जाई ने समझाऊं ॥ रा० ॥ १२९ ॥ मांहो मांहि तो कोई न हटसी, अङ्ग जात छै म्हारा। घणा जीव नी घातज होसी, परिणाम एक दया रा० ॥ १३० ॥ देखो पुन्याई राजवियां री, गुरणी

तो पिण नहीं बरजे। बस्तु आप री सेंठी राखने, पीछे परोपकार करीजे ॥ रा० ॥ १३१ ॥ कर बन्दना ने मैंणरह्या चाली, ले सतियां नों साथो। जुगवल्लभ सूं तो सैंध पिछाण, पहेली उण सूं बातो ॥ रा० ॥ १३२ ॥ कांकड़ सीमा ठौर ठिकाने, फौजां पड़ी छै दोई। जुगबल्लभ नो लशकर पूछी, चाली मैंणरह्या सोई ॥ रा० ॥१३३॥ मैंणरह्या सती चरम शरीरी, आप तीरे पर तारी। राज कचेड़ी सूं नेड़ी आई, निजर पड़ी राजा री ॥ रा० ॥ १३४ ॥ जुगबल्लभ तो उठ्यो शताब सूं, विनय कस्रो छै भारी। सात आठ पग सामो जाई ने, महासतियां केम पधारी ॥ रा० ॥ १३५ ॥ मैंणरह्या तो कहे राजा ने, कारण पड़ियो तोस्युं भारी। फौज बंधी तो थे भेली कीनी, मैं तिण सूं कारण बिचारी ॥ रा० ॥ १३६ ॥ आयलड़ म्हारी धरती लेसी, नीच चण्डाल घर जायो। साथ सामान इण भेलो कीनो, तिण कारण चढी आयो ॥ रा० ॥ १३७ ॥ बेटा छो थे राजविया रा, बोलो बोल

विचारो। और थां ऊपर कौण चढ़ आसी, यो भाई छै थारो ॥ रा० ॥ १३८ ॥ बात सुणी ने राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे। भारी बचन कह्यो माता ने, राजा ने नहीं सोवे ॥ रा० ॥ ॥ १३६ ॥ जुगबल्लभ तो कहे माता ने, थे लीधो संयम भारो। मौत आपदा किण विध हुई, बात कहो विस्तारो ॥ रा० ॥ १४० ॥ मणरथ राजा थांरा पिता ने मार्यो, हूं रात ने निकली आई। जनम नमी रो बन में हुवो, हूं मेल आई बन में मांई ॥ रा० ॥ १४१ ॥ तीर नदी ने बैठी हुन्ती, विमाण विद्याधर नों आयो। देव उचाय ने मोने मांहे मेली, हूं गई समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ १४२ ॥ पिता तो थांरो देवता हुवो, दरशन प्रभु के आयो। आज्ञा मांगी ने मैं तो संयम लीधो, भेट्या प्रभु रा पायो ॥ रा० ॥ १४३ ॥ दोनूं राजा रे मैं बैरज सुणियो, लड़सी मांहो मांई। घणा आदमी मरण पामसी, तिण कारण हूं आई ॥ रा० ॥ १४४ ॥ जुगबल्लभ राजा बात

सुणी ने, चिन्ता फिकर मन आई। जुगबल्लभ तो कहे माता ने, जाय मिलूं हूं भाई ॥ रा० ॥ ॥ १४५ ॥ ठीक नहीं छै नमीराय ने, यो छै म्हारो भाई। नहीं विश्वास राजविया केरो, तिण सं मिलूं हूं पहेली जाई ॥ रा० ॥१४६॥ जुगबल्लभ ने तो दियो समझाई, नमीराय कने जाय। सतियां नजर पड़ी राजा री, विनय करी सामो आय ॥ ॥ रा० ॥ १४७ ॥ हाथ जोड़ी ने राजा बोल्यो, महासतियां किम आई। का सूं कारण पड़ियो थांरे, इसड़े अवसर मांई ॥ रा० ॥ १४८ ॥ कांई कारण थांरे दोनूं राजा रे, झगड़ो पड़ियो मांहो मांई। फौज बन्धी तो थे भेली कीनी, तिण कारण हूं आई ॥ रा० ॥ १४९ ॥ बाप मास्यो ने मा निकल भागी, गई ए किण रे लारे। देखो ने एं म्हारी धरती लेसी, कही सनमुख माता रे ॥ १५० ॥ बेटा थे छो राजविया रा, बोलो बोल विचारो। और थां ऊपर कुण चढ़ आसी, भाई छै ओ थारो ॥ रा० ॥ १५१ ॥ जुगवल्लभ ने

मोटो मेल्यो, खबर पड़ी अनुसारे। नानो बालक नमी ने जाणी, बात कही विस्तारे ॥ रा० ॥१५२॥ बात सुणी ने राज्या लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे। भारी बचन कह्यो माता ने, राजा ने नहीं सोवे ॥ रा० ॥ १५३ ॥ नमी राजा तो मन मांहि जाण्यो, जुगवल्लभ राजा म्हारो भाई। नेह सनेह धरी दोनं बेटा रो, तिण सूं माजी आई ॥ रा० ॥ १५४ ॥ नमी राजा तो मिलण चाल्यो. जुगवल्लभ सामो जाई। हरष भाव सूं बांह पसारी, मिलिया दोनूं भाई ॥रा०॥१५५॥ एकण हाथी रे होदे बैठा, जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभरा डेरा कानी हुई अब हरष सवाई ॥ रा० ॥१५६॥ लोक लड़ाई री बातां करता, लड़ता होडा होडी। लोकां मन में अचरज पाम्या, कांई कियो इण मोडी ॥ रा० ॥ १५७ ॥ बैर मिटाय ने मेल करायो, घणा लोक हुवा राजी। घणा जणा रा माथा पड़ता, राख्या छै इण माजी ॥ रा० ॥ १५८ ॥ लोक राजा रे कुशलज हुवो, घर घर हरष बधाई। भलो होज्यो

इण सती केरो, यश लीधो जग मांई ॥ रा० ॥ १५९ ॥ राज कचेड़ी में आई बैठा, जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ सुख अथिर जाणी ने, वैरागरी मन में आई ॥ रा० ॥ १६० ॥ जुगवल्लभ कहे मोने दीक्षा लेण द्यो, राज करो महारायो। राज ऋद्धि ने सर्व संपदा, मैं थाने भोलायो ॥ रा० ॥ १६१ ॥ जुगवल्लभ तो दीक्षा लीधी, हरष घणो मन मांई। भाई विछोहो दुःखरी लहरां, नमी कुमर ने आई ॥ रा० ॥ १६२ ॥ नमी राजा तो राज करे छै, राणी एक सौ आठो। हुवे नाटक ने घुरे नगारा, दोनूं राज रो पाटो ॥ रा० ॥ १६३ ॥ दाघ ज्वर ने जोग करी ने, लेसी संयम भारो। इन्द्र परीक्षा करवा आसी, उत्तराध्ययन विस्तारो ॥ रा० ॥ १६४ ॥ दोनूं भायां रे मेल करायो, मैंणरह्या पाछी आई। गुरणीजी रे पाय लागने, विध सूं बात सुणाई ॥ रा० ॥ ॥ १६५ ॥ मोटा राजा रे मेल करायो, राखी घणारी बाजी। मैंणरह्या ना गुण जाणी ने, गुरणी

हुई छै राजी ॥ रा० ॥ १६६ ॥ छत्तीस हजार आरज्यां मांहे, गुरणी चन्दनवाला। तिण रे पाटे पदवी पाई, शिष्यणी रतना री माला ॥ रा० ॥ १६७ ॥ चेड़ानी जे साते पुत्री, भगवन्त आप बखाणी। चेलणा मृगावती तीजी प्रभावती, चौथी शिवादे राणी ॥ रा० ॥ १६८ ॥ पांचवीं पद्मावती छठी सुलसा, जेष्ठा सातमी जाणी। संकट पड्यां सती शीलज राख्यो, दमयन्ती नल राणी ॥ रा० ॥ १६९ ॥ अञ्जना सती छै महिन्द्र राजा नी वेटी, विखो सह्यो बन मांहीं। संकट पड्यां सती शीलज राख्यो, यश कीरत जग मांहीं ॥ रा० ॥ १७० ॥ सती द्रौपदी तो आगे हुई; यश लीधो जग मांई। मोटा राजा रो विरोध मिटायो, मैंणरह्या री अधिकाई ॥ रा० ॥ १७१ ॥ संयम लेने सुकृत कीज्यो, मनुष्य जमारो मत खोज्यो। जिन शासन में जिम मैंणरह्या कीनी, तिम सब कोई कीज्यो ॥ रा० ॥ १७२ ॥ मैंणरह्या तो दीक्षा लेई, मन शुद्ध संयम पाले। जिन मारग में नाम

दीपायो, भवदूषण सहु टाले ॥ रा० ॥ १७३ ॥
मैंणरया तो कुल तारक हुई, लज्या आप री राखी।
विखो सह्यो पिण शील न भांज्यो, भगवन्त
तेहना साखी ॥ रा० ॥ १७४ ॥ जुगबाहु
ने मैंणरया सती, जुगवल्लभ नमी भाई।
च्यारां रो तो कारज सीधो, मणरथ दुर्गति
मांहि ॥ रा० ॥ १७५ ॥ व्यसन सातमो
परनारी नों, जीव घात घर हाणी। मणरथ राजा
नरक पहुन्तो, कुयश बांधने प्राणी ॥ रा० ॥१७६॥
एक कुव्यसन मणरथ सेव्यो, बहु रुलियो संसारो।
सातूं कुव्यसन जे सेवे प्राणी, तिण ने दुःख
अपारो ॥ रा० ॥ १७७ ॥ विषया रस ते विष
सम जाणी ने, सतगुरु सेवा कीजे। मणरथ
राजा नी बात सुणी ने, परनारी संग न कीजे ॥
॥ रा० ॥ १७८ ॥ दान शील तप संयम पालो,
दोषण सगला टालो। दया धर्म री समता आणी,
शुद्ध आचार ते पालो ॥ रा० ॥ १७९ ॥ धर्म
दया में केवली भाख्यो, ते साचो कर जाणो। जे

जाणी सेवे भव प्राणी, ते पामे निरवाणो ॥रा०॥
॥ १८० ॥ जप तप संयम पालो रे भाई, विषय
विकार गमाई। जीव जिके तो शिव सुख पावे,
श्रीवीर वचन मन लाई ॥ १८१ ॥

अथ श्रीनवकार नो छन्द।

सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार।
जिन-शासन आगम, चौदह पूरवनो सार ॥ १ ॥
ए मंत्रनी महिमा, कहितां न लहुं पार। सुरतरु
जिम चिन्तत, वंछित फल दातार ॥ २ ॥ सुर
दानव मानव, सेवा करै कर जोड़। भुवि मण्डल
विचरै, तारै भवियण कोड़ ॥ ३ ॥ सुरछन्दे
विलसै, अतिशय जास अनन्त। पद पहिले नमिये,
अरि गञ्जन अरिहन्त ॥ ४ ॥ जे पन्द्रह भेदे सिद्ध
थया भगवन्त। पञ्चमी गति पहोंता, अष्ट कर्म
करि अन्त ॥ ५ ॥ कल अकल स्वरूपी, पञ्चानन्तक
देह। जिनवर पाय प्रणमूं, बीजे पद वलि एह ॥

॥ ६ ॥ गच्छभार धुरन्धर, सुन्दर शशिहर शोभ। करै सारण वारण, गुण छत्रीसे थोभ ॥ ७ ॥ श्रुत जाण शिरोमणि, सागर जिम गम्भीर। तीजै पद नमिये, आचारज गुणधीर ॥ ८ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सूत्र भणावै सार। तप विधि संयोगे, भाखै अर्थ विचार ॥ ६ ॥ मुनिवर गुण युत्ता, कहिये ते उवज्झाय। पद चौथे नमिये, अहो निशि तेहना पाय ॥ १० ॥ पंचास्रव टाले, पालै पञ्चाचार ॥ तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ ॥ ११ ॥ त्रस थावर पीयर, लोक मांहि जे साध। त्रिविधे ते प्रणमुं, परमारथ जिणे लाध ॥ १२ ॥ अरि करि हरि सायणि, डायणि भूत वैताल। सवि पाप पणासे, बाधे मंगल माल ॥१३॥ इण समर्यां संकट दूर टले तत्काल। इम जंपै जिन प्रभ, सूरि शिष्य रसाल ॥ १३ ॥ इति ॥

(अथ पुण्यप्रभाविक श्रावक श्रीलालाजी रणजित सिंहजी कृत)

श्रीबृहदालोयणा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध श्री परमातमा, अरिगंजन अरिहंत ।
इष्ट देव वन्दूं सदा, भय भंजन भगवन्त ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध सुमरूं सदा, आचारज उवज्झाय ।
साधु सकल के चरणकूं, वन्दूं शीश नमाय ॥२॥
शासन नायक समरिये, भगवंत वीर जिणन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥ ३ ॥
अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार ।
श्री गुरु गौतम समरिये, वंछित फल दातार ॥४॥
श्री गुरु देव प्रसाद सें, होत मनोरथ सिद्ध ।
ज्यूं घन वरसत वेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध ॥५॥
पंच परमेष्टि देव को, भजनपूर पहिचान ।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥

श्री जिन युगपद कमलमें, मुझ मन भमर वसाय।
कब ऊगै वो दिनकरु, श्रीमुख दरशन पाय ॥७॥
प्रणमी पद पङ्कज भणी, अरिगञ्जन अरिहंत।
कथन करूं अब जीवनं, किञ्चित मुझ विरतंत ॥८॥
आरंभ विषय कषाय वश, भमियो काल अनन्त।
लख चौराशी योनि में, अब तारो भगवन्त ॥ ९ ॥
देव गुरू धर्म सूत्र में, नवतत्वादिक जोय।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥१०॥
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण थी, औषध ज्ञान वैराग ॥११॥
जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभू तुमारी साखसें, बारम्बार धिक्कार ॥ १२ ॥
बुरा बुरा सबको कहे, बुरा न दीसे कोय॥
जो घट सोधं आपणो, तो मोसूं बुरा न कोय ॥१३॥
कहेवा में आवे नहीं, अवगुण भर्या अनन्त।
लिखवामैं क्योंकर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१४॥
करुणा निधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, करजो ग्रन्थी भेद ॥१५॥

पतित उद्धारण नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब मांहरी, खमिये वारंवार ॥ १६ ॥
माफ़ करो सब मांहरा, आज तलकना दोष।
दीनदयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष ॥१७॥
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वन्दन भाव।
राग द्वेष पतला करी, सबसें खिमत खिमाव ॥१८॥
छूटूं पिछला पापसें, नवा न बन्धूं कोय।
श्रीगुरु देव प्रसाद सें, सफल मनोरथ होय ॥१९॥
परिग्रह ममता तजि करि, पञ्च महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करूं संथारो सार ॥२०॥
तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥२१॥
अरिहंत देव निर्ग्रंथ गुरु, संवर निर्ज्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्रए, एही जिनमत मर्म ॥२२॥
आरम्भ विषय कषाय तज, सुध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर, निश्चय खेवो पार ॥२३॥
क्षण निकमो रहणो नहीं, करणो आतम काम॥
भणनो गुणनो सीखणो, रमणो ज्ञान आराम ॥२४॥

अरिहंत सिद्ध सब साधुजी जिन आज्ञा धर्मसार।
मंगलीक ऊत्तम सदा, निश्चय शरणाचार ॥ २५ ॥
घड़ी घड़ी पल पल सदा, प्रभु समरण को चाव।
नरभव सफलो जो करे, दान शीयल तप भाव ॥२६॥

॥ दोहा ॥

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोई सिद्ध होय।
कर्म मेलका अंतरा, बूझै विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहुरूप है, विछड्यां पद निरवाण ॥२॥
जीव करम भिन्न भिन्न करो, मनुष्य जन्मकूं पाय।
ज्ञानातम वैराग्य सें, धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुद्गल पिंड में, अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र में, यह अनादि की टेव ॥५॥
फूल अत्तर घी दूध में, तिल में तैल छिपाय।
यूं चेतन जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय ॥६॥

जो जो पुद्गल की दिशा, ते निज माने हंस।
याही भरम विभाव तें, बढ़े करम को वंस ॥ ७ ॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषे, सूर्य छिप्यो घन मांय।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांय ॥८॥
ज्यूं बंदर मदिरा पियां, विच्छू डंकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यूं कर्मों का उत्पात ॥६॥
कर्म संग जीव मूढ़ है, पावै नाना रूप।
कर्म रूप मलके टले, चेतन सिद्ध स्वरूप ॥ १० ॥
शुद्ध चेतन उज्ज्वल दरव, रह्यो कर्म मल छाय।
तप संयम में धोवतां, ज्ञान ज्योति बढ़ जाय ॥११॥
ज्ञान थकी जाणे सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र थी आवत रुके, तपस्या क्षपन सरूप ॥१२॥
कर्मरूप मल के शुधे, चेतन चांदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रगट भयां, केवल ज्ञान अनूप ॥१३॥
मूसी पावक सोहगी, फूंकां तणो उपाय।
रामचरण चारूं मल्या, मेल कनक को जाय ॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चन्द।
ज्ञानरूप गुण चांदणी, निर्मल ज्योति अमंद ॥१५॥

राग द्वेष दो बीज सें, कर्म बंधकी व्याध।
ज्ञानातम वैराग्य सें, पावे मुक्ति समाध ॥ १६ ॥
अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कछु होत।
पुन्य छतां पुन्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥१७॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इन भव में सुखकार।
ज्ञान शुद्धि इनसें अधिक, भव दुःख भंजनहार ॥१८॥
राई मात्र घट बध नहीं, देख्यां केवल ज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिए परथम ध्यान ॥१९॥
दूजाकूं भी न चिंतिये, कर्मबंध बहु दोष।
त्रीजा चौथा ध्याय के, करिये मन सन्तोष ॥२०॥
गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वंछा मांह।
वर्त्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग मांह ॥ २१ ॥
अहो समदृष्टी जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अंतर्गत न्यारा रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल ॥२२॥
सुख दुःख दोनूं बसत है, ज्ञानी के घट मांय।
गिरि सर दीखे मुकुर में, भार भीजवो नांय ॥२३॥
जो जो पुद्गल फरसना, निश्चे फरसे सोय।
समता समता भाव सें, करम बंध क्षय होय ॥२४॥

बांध्या सोही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित चाव ॥२५॥
बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्यां न छोड़ाय।
आपहि करता भोगता, आपही दूर कराय ॥२६॥
पथ कुपथ घट बध करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
यूं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जगमें पाय॥२७॥
सुख दियां सुख होत है, दुःख दियां दुःख होय।
आप हणे नहीं अवरकुं, तो आपने हणे न कोय॥२८॥
ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इनकुं कभी न छांडिए, श्रद्धा शील संतोष ॥२९॥
सत मत छोड़ो हो नरा, लक्ष्मी चौगुणी होय।
सुख दुःख रेखा कर्मकी, टाली टले न कोय ॥३०॥
गो धन गज धन रत्न धन, कञ्चन खान सुखान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूल समान ॥३१॥
शील रतन मोटो रतन, सब रतनां की खाण।
तीन लोककी सम्पदा, रही शीलमें आण ॥ ३२ ॥
शीले सर्प न आभड़ै, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केशरी, भय जावे सब भाग ॥३३॥

शील रतन के पारखू, मीठा बोले बैण ।
सब जग से ऊंचा रहै, जो नीचा राखे नैण ॥३४॥
तन कर मन कर बचन कर, देत न काहू दुःख ।
कर्म रोग पातक झरे देखत वांका मुख ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

पान झरंतो इम कहे, सुन तरुवर वन राय ।
अब के बिछुरे ना मिलें, दूर पड़ेंगे जाय ॥ १ ॥
तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र एक बात ।
इस घर एही रीत है, इक आवत इक जात ॥२॥
बरस दिना की गांठ को, उच्छव गाय बजाय ।
मूरख नर समझे नहीं, बरस गांठ को जाय ॥३॥

सोरठा ।

पवन तणो विश्वास, किण कारण तैं दृढ़ कियो ।
इनकी एही आश, आवे के आवे नहीं ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

करज बिराना काढ़ के, खरच किया बहु नाम ।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देणा पड़शे दाम ॥ ५ ॥

बिनु दियां छूटे नहीं, यह निश्चय कर मान।
हँस हँस के क्युं खरचिये, दाम विराना जान ॥६॥
जीव हिंसा करतां थकां, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाणे सही, विष मिलियो पकवान ॥७॥
काम भोग प्यारा लगे, फल किम्पाक समान।
मीठी खाज खुजावतां, पीछे दुःख की खान ॥८॥
तप जप संजम दोहिलो, औषध कड़वी जाण।
सुख कारण पीछे घणा, निश्चय पद निरवाण ॥९॥
डाभ अणी जल बिंदुओ, सुख विषयन को चाव।
भवसागर दुःख जल भर्यो, यह संसार स्वभाव ॥१०॥
चढ़ उत्तंग जहँसे पतन, शिखर नहीं वो कूप।
जिस सुख अन्दर दुःख वसे, सो सुख भी दुःख रूप ॥११॥
जब लग जिसके पुण्यका, पहुंचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार ॥१२॥
पुण्य खीन जब होत है, उदय होत है पाप।
दाझे वन की लाकड़ी, प्रजले आपो आप ॥ १३ ॥
पाप छिपायां ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रहे, रुई लपेटी आग ॥ १४ ॥

बहु बीती थोड़ी रही, अब तो सुरत संभार।
परभव निश्चय चालणो, वृथा जन्म मत हार॥१५॥
चार कोस ग्रामांतरे, खरची बांधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार॥१६॥
रज विरज ऊंची गई, नरमाई के पान।
पत्थर ठोकर खात है, करड़ाई के तान॥ १७॥
अवगुण उर धरिये नहीं, जो हुये विरष बबूल।
गुण लीजे कालू कहे, नहीं छाया में सूल॥ १८॥
जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहां से जाय॥१९॥
गुरु कारीगर सारिखा, टांकी वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार॥ २०॥
संतन की सेवा कियां, प्रभु रीझत है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रीझत बाप॥ २१॥
भवसागर संसार में, द्वीपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुंचे तिरे, बैठी धर्म जहाज॥ २२॥
निज आतम कूं दमन कर, पर आतम कूं चीन।
परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन॥२३॥

समझू शंके पाप से अण समझू हरषंत ।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म बधंत ॥ २४ ॥
समझू सार संसार में, समझू टाले दोष ।
समझ समझ करि जीवही, गया अनन्ता मोक्ष ॥२५॥
उपशम विषय कषाय नो, संबर तीनूं योग ।
किरिया जतन विवेकसें, मिटे कुकर्म दुःख रोग ॥२६॥
रोग मिटे समता बधे, समकित व्रत आराध ।
निर्वैरी सब जीव को, पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥

इति भूल चूक, मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत दोहा सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री पंच परमेष्टी भगवद्भ्यो नमः ॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगंजन अरिहंत ।
इष्टदेव बंदूं सदा, भयभंजन भगवन्त ॥ १ ॥
अनन्त चोवीसी जिन नमूं, सिद्ध अनन्ता कोड़ ।
वर्त्तमान जिनवर सबे, केवली प्रतक कोड़ ॥२॥

गणधरादिक सब साधुजी, समकित व्रत गुण धार।
यथायोग्य बंदन करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥३॥

प्रथम एक नवकार गुणवो ॥

॥ दोहा ॥

पञ्च परमेष्टी देवनो, भजनपूर पहिचान।
कर्म अरी भाजे सवी, शिवसुख मंगल थान ॥४॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवझाय।
साधु सकलके चरणकूं, वन्दू शीश नमाय ॥ ५ ॥
शासन नायक समरिये, वर्द्धमान जिनचन्द।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥ ६ ॥
अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
जे गुरु गौतम समरिये, मन बंछित फल दातार ॥७॥
श्रीजिन युगपद कमल में, मुझ मन अलिय वसाय।
कब ऊगे वो दिनकरु, श्रीमुख दरशन पाय ॥८॥
प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगञ्जन अरिहंत।
कथन करूं हिवे जीवनुं, किंचित् मुझ विरतंत ॥९॥

अंजना की देशी।

हूं अपराधि अनादि को, जनम जनम गुना किया भरपूर के। लूटिया प्रान छःकायना, सेविया पाप अठारा करूर के श्रीमु० ॥ १० ॥ १ ॥

आज तांई इन भव में पहला, संख्याता, असंख्याता, अनन्ता भव में, कुगुरु, कुदेव, अरु कुधर्म की सद्दहणा, प्ररूपणा, फरसना, सेवनादिक सम्बन्धी पाप दोष लाग्या, ते मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ २ ॥ मैंने अज्ञानपणे, मिथ्यात्वपणे, अव्रतपणे कषायपणे, अशुभयोगे करी, प्रमादे करी, अपछंदा, अविनीतपणा कर्या ॥ ३ ॥ श्री श्री अरिहन्त भगवन्त वीतराग केवल ज्ञानी महाराजजी की, श्री गणधरदेवजी की, आचारज महाराजजी की, धर्माचार्यजी महाराज की, श्री उपाध्यायजी की, अने साधुजी की, आर्याजी महाराज की, श्रावक श्राविकाजीकी, समदृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषां की, शास्त्र सूत्र पाठ की, अर्थ परमार्थ की, धर्म सम्बन्धी

सकल पदार्थों की, अविनय, अभक्ति, आशातनादिक करी कराई, अनुमोदी मन वचन कायाए करी द्रव्य थी, क्षेत्र थी, काल थी, भाव थी, सम्यक् प्रकारे, विनय भक्ति, आराधना पालना फरसना, सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमे नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार, वारम्वार मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो, बक्षो मुझे मैं खमावूं मन वचन कायाये करी ॥

॥ दोहा ॥

मैं अपराधी गुरु देवको। तीन भवन को चोर ॥
ठगूं विराना माल मैं। हा हा कर्म कठोर ॥ १ ॥
कामी कपटी लालची। अपछंदा अविनीत ॥
अविवेकी क्रोधी कठिन। महापापी रणजीत ॥२॥
जे मैं जीव विराधिया। सेव्या पाप अठार ॥
नाथ तुमारी साख सें। वारम्वार धिक्कार ॥ ३ ॥

मैंने छःकायपणे छही काय की विराधना करी पृथ्वीकाय अप्पकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रय, पंचेन्द्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदह प्रकारे समूर्छिम प्रमुख, त्रस, थावर जीवां की विराधना करी, करावी, अनुमोदी मन वचन कायाये करी, उठतां, वेसतां, सुतां, हालतां, चालतां, शस्त्र, वस्त्र मकानादिक उपकरणे करी, उठावतां धरतां, लेतां देतां, वर्ततां वर्तावतां, अप्पडिलेहणा सम्बन्धी अप्रमार्ज्जना, सम्बन्धी, अधिकी ओछी, विपरीत पुञ्जना, संबंधी और आहार विहारादिक नाना प्रकार का पडिलेहणा घणा घणा कर्त्तव्योमां, संख्याता, असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनन्ता जीवांका, जितना प्राण लूट्या, ये सर्व जीवों का, मैं पापी अपराधी हूं। निश्चेकरी बदला का देणहार हूं, सर्व जीव मुझ प्रते माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो देवसी राइसी, चौमासी, अने सांवत्सरिक सम्बन्धी वारम्बार

मिच्छामि दुक्कडं वारम्वार मैं खमाऊं छूं तुमे, सर्वे खमजो ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतुमे ।
मित्ति मे सव्वे भूएसु, वैरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥

वो दिन धन होवेगा, जो दिन मैं छःये काय का वेर वदला सें निवर्तूंगा । सर्व चौरासी लाख जीवा योनिकुं अभयदान देऊंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा ।

॥ दोहा ॥

सुख दियां सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवरकूं, आपकूं हणे नहीं कोय ॥१॥

इति दूजा पाप मृषावाद सो झूठ बोल्या । क्रोधवशे, मानवशे मायावशे, लोभवशे, हास्ये करी, भयवशे, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥२॥ निंदा विकथा करी, कर्कश कठोर मर्म की भाषा बोली, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये

करी मृषावाद झूठ बोल्या, बोलाया, बोलताने अनुमोद्या सो मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं

॥ दोहा ॥

थापण मोसा मैं किया, करि विश्वासज घात।
पर नारी धन चोरिया, प्रगट कह्यो नहीं जात ॥१॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार, वारंवार मिच्छामि दुक्कडं। वो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे मृषावाद का त्याग करूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ २ ॥ त्रीजा पाप अदत्तादान है सो अणदीधी वस्तु चोरी करीने लीधी, ते मोटकी चोरी, लौकिक बिरुद्ध, अल्प चोरी घर सम्बन्धी नाना प्रकार का कर्त्तव्यों में उपयोग सहित तथा बिना उपयोगे अदत्तादान चोरी करी, कराई, करताने अनुमोदी मन वचन कायाये करी, तथा धर्म सम्बंन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अरु तपकी श्री भगवन्त गुरु देवोंकी अण-आज्ञा पणाये कस्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार

वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं। सो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे अदत्तादान का त्याग करूंगा, वो दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा ॥३॥ चौथा मैथुन सेवन ने विषे मन वचन अरु काया का योग परवर्ताया, नवबाड़ सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाल्या नवबाड़में अशुद्धपणे प्रवृति हुई, आप सेव्या, अनेरा पासे सेवराया, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या सो मन वचन कायाये करी मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं॥ वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन मैं नवबाड़ सहित ब्रह्मचर्य शील रत्न आराधंगा, सर्वथा प्रकारे काम विकारसें निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पांचमा परिग्रह सो सचित परिग्रह तो, दास दासी दुपद चौपद तथा मणि, पत्थर प्रमुख अनेक प्रकार का है, अरु अचित परिग्रह जो सोना, रूपा, वस्त्र, आभरण प्रमुख अनेक वस्तु हैं, तिणकी ममता मूर्च्छा आप पात करी। क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य

परिग्रह, अरु चौदह प्रकार का अभ्यन्तर परिग्रहको राख्यो रखायो राखतां ने अनुमोद्यो, तथा रात्रि-भोजन अभक्ष आहारादि संबंधी पाप दोष सेव्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामि दुक्कडं। वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकारे परिग्रह का त्याग करी संसार का प्रपंच संती निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥५॥ छट्ठा क्रोध पाप स्थानक, सो क्रोध करीने अपनी आत्माकुं, और परआत्माकुं तपाया ॥ ६ ॥ तथा सातमा मान ते अहङ्कार भाव आण्या। तीन गारव, आठ मदादिक कर्या ॥७॥ तथा आठमा माया पाप स्थानक ते धर्म सम्बन्धी तथा संसार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्योंमें कपटाई करी ॥८॥ तथा नवमुं लोभ ते मूर्छाभाव आण्यो। आशा तृष्णा वांछादिक करी ॥ ९ ॥ तथा दशमो राग ते, मनगमती वस्तु सों स्नेह कीधो ॥ १० ॥ तथा इग्यारमा द्वेष ते, अणगमती वस्तु देखीने द्वेष कर्यो ॥११॥ तथा बारमो कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश

उपजाव्यो ॥ १२ ॥ तथा तेरमां अभ्याख्यान ते अछत्ता आल दीधा ॥ १३ ॥ चौदमां पैशुन्य ते पराई चाडी चुगली कीधी ॥ १४ ॥ पन्नरमां पर-परिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या, बोलाया, अनुमोद्या ॥ १५ ॥ सोलमां रति अरति पांच इन्द्रियोंनी तेवीस विषय २४० विकार छै, तेमां मनगमतीसों राग कर्यो, अणगमतीसों द्वेष कर्यो, तथा संयम तप आदिकने विषे अरति करी, कराई, अनुमोदी तथा आरम्भादिक असंयम प्रमाद में रति भाव कर्या, कराया अनुमोद्या ॥१६॥ सतरमां मायामोसो पापस्थानक, सो कपट सहित झूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अठारमां मिथ्या दर्शन शल्य सो श्री जिनेश्वर देव के मार्गमें शङ्का कंखादिक विपरीत प्ररूपणादिक करी, कराई, अनुमोदी ॥१८॥ इत्यादिक इहां अठारह पाप स्थानों की आलोयणा सो विशेष विस्तारे आपसें बने जिस मुजब कहनी। एवं अठारह पाप स्थानक सो द्रव्य थकी, क्षेत्र थकी, काल थकी, भाव थकी, जाणतां अजा-

णताँ मन वचने अरु कायाये करी सेव्या, सेव-राया, अनुमोद्या, अर्थे, अनर्थे, धर्मअर्थे, कामवशे, मोहवशे, स्ववशे, परवशे, दीयावा, राइवा, एगोवा, परिसागओवा, सूत्तेवा, जागरमाणेवा, इन भव में पहेला संख्याता असंख्याता अनन्ता भवों में भवभ्रमण करता आज दिन सुधी, राग, द्वेष, विषय, कषाय, आलस प्रमादादिक पौदुगलिक प्रपञ्च परगुण परजाय की विकल्प भूल करी, ज्ञान की विराधना करी, दर्शन की विराधना करी, चारित्र की विराधना करी, चारित्राचारित्र की तप की विराधना करी शुद्ध श्रद्धा, शील सन्तोष क्षमादिक निज स्वरूप की विराधना करी उपशाम, विवेक, संवर, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणा, ध्यान, मौनादिक नियम, व्रत पच्चखाण, दान, शील तप प्रमुख की बिराधना करी, परम कल्याण-कारी इन बोलोंकी आराधना पालनादिक, मन वचन अरु काया सें करी नहीं, करावी नहीं, अनुमोदी नहीं। छही आवश्यक सम्यक् प्रकारे विधि उपयोग

सहित आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं, विधि उपयोग रहित निराधार पणे कस्या, परन्तु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं कस्या, ज्ञानका चौदह, समकित का पांच, बारहव्रत का साठ, कर्मादान का पन्द्रह, संलेषणा का पांच, एवं नवाणु अतिचार मांहे तथा १२४ अतिचार मांहे तथा साधुजी का १२५ अतिचार मांहे तथा ५२ अनाचार की श्रद्धानादिक में विराधनादिक जो कोई अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचारादिक सेव्या, सेवराव्या, अनुमोद्या, जाणतां, अजाणतां मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार, बारम्बार मिच्छामि दुक्कडं। मैंने जीव कूं अजीव सरध्या परूप्या, अजीव कूं जीव सरध्या परूप्या, धर्म कूं अधर्म अरु अधर्म कूं धर्म सरध्या परूप्या तथा साधुजी को असाधु और असाधु को साधु सरध्या परूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतियांजी की सेवा भक्ति यथा विधि मानतादिक नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओं की

सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कस्या, मुक्ति का मार्ग में संसार का मार्ग, यावत् पच्चीस मिथ्यात्व मांहिला मिथ्यात्व सेव्या सेवाया, अनुमोद्या, मने करी, वचने करी, कायाये करी, पच्चीस कषाय सम्बन्धी, पच्चीस क्रिया सम्बन्धी, तेत्रीस अशातना सम्बन्धी, ध्यान का उगणीश दोष, वन्दना का बत्रीस दोष, सामायिक का बत्रीस दोष, अने पोसह का अठारह दोष सम्बन्धी, मन वचन कायाये करी जे कांई पाप दोष लाग्या, लगाया, अनुमोद्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामि दुक्कड़ं। महा मोहनीय कर्मबंध का, त्रीस स्थानक का, मन वचन अरु कायासें सेव्या, सेवाया, अनुमोद्या। शीलकी नव बाड़, आठ प्रवचन माता का की विराधनादिक, तथा श्रावक का एकवीस गुण, अरु बारह ब्रत की विराधनादि मन वचन अरु काया सें करी, करावी, अनुमोदी। तथा तीन अशुभ लेश्या का लक्षणां की, बोलां की, सेवना करी, अरु तीन शुभ लेश्या

का लक्षणां की, बोलां की, विराधना करी। चर्चा वार्त्ता उगैरा में श्रीजिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या। नहीं मान्या, अछताकी थापना करी प्रवर्ताया, छताकी थापना करी नहीं अरु अछता की निषेधना नहीं करी, छताकी थापना अरु अछता की निषेधना करनेका नियम नहीं कह्या, कलुषता करी तथा छः प्रकारे ज्ञानावरणीय बंध का बोल, ऐसे ही छ प्रकार का दर्शनावरणीय बन्ध का बोल, यावत् आठ कर्म की अशुभ प्रकृति बन्ध का पञ्चावन कारण करी बेयासी प्रकृति पापां की बांधी बंधाई, अनुमोदी मने करी वचने करी, कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामि दुक्कडं। एक एक बोल सें लगाकर कोडा कोडी यावत् संख्याता, असंख्याता अनन्ता अनन्ता बोल ताई, मैं जो जाणवा योग्य बोलको, सम्यक् प्रकारे जाण्या नहीं सरध्या नहीं, परूप्या नहीं तथा विपरीतपणे श्रद्धनादिक करी, कराई, अनुमोदी मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार

मिच्छामि दुक्कड़ं। एक एक बोल सें यावत् अनंता अनन्ता बोल में छांडवा योग्य बोल को छाड्या नहीं, उनको मन वचन कायाये करके सेव्या सेवाया, अनुमोद्या सो मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामि दुक्कड़ं। एक एक बोल सें लगाकर यावत् अनंता अनंता बोल में आदरवा योग्य बोल आदर्या नहीं, आराध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंडनादिक करी, कराई, अनुमोदी मन वचन कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं। श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञा में जो जो प्रमाद कर्या, सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या, नहीं कराया नहीं अनुमोद्या, मन वचन काया करके अथवा अनाज्ञा विषे उद्यम कर्या, कराया, अनुमोद्या एक अक्षर के अनंत में भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्र में भी श्री भगवंत महाराज आपकी आज्ञा सूं अधिका ओछा विपरीतपणे प्रवर्त्यों हूं, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ दोहा ॥

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय।
जाण अजाण पक्षपातमें, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥१॥
सूत्र अर्थ जाणं नहीं, अल्पबुद्धि अणजाण।
जिन भाषित सब शास्त्रए, अर्थ पाठ परमाण ॥२॥
देव गुरू धर्म सूत्र कूं, नव तत्वादिक जोय।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥३॥
हूं मगसेलियो हो रह्यो, नहीं ज्ञान रस भीज।
गुरु सेवा न करि सकूं, किम मुझ कारज सीझ ॥४॥
जाणे देखे जे सुणे, देवे सेवे मोय।
अपराधी उन सबन को, बदला देशूं सोय ॥ ५ ॥
गवन करूं बुगचा रतन, दरब भाव सब कोय।
लोकन में प्रगट करूं, सूई पाई मोय ॥ ६ ॥
जैन धर्म शुद्ध पायके, वरतुं विषय कषाय।
एह अचंभा हो रह्या, जल में लागी लाय ॥ ७ ॥
जितनी वस्तु जगत में, नीच नीच सें नीच।
सब सें मैं पापी बुरो, फसं मोह के बीच ॥ ८ ॥

एक कनक अरु कामिनी, दो मोटी तरवार।
उठ्या था जिन भजनकूं, बिच में लिया मार ॥६॥

॥ सवैया ॥

मैं महापापी छांड के संसार छार छारही का बिहार करूं, आगला कुछ धोय कीच फेर कीच बीच रहूं, विषय सुख चारु मन्न प्रभुता बधारी है। करत फकीरी ऐसी अमीरी की आस करूं काहेकु धिक्कार शिर पागरी उतारी है ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

त्यागन कर संग्रह करूं, विषय वमन जिम आहार।
तुलसी ए मुझ पतित कुं, बार बार धिक्कार ॥ ११ ॥
राग द्वेष दो बीज है, कर्म बंध फल देत ॥
इनकी फांसी में बंध्यो, छूटूं नहीं अचेत ॥ १२ ॥
रतन वंध्यो गठड़ी विषे, भानु छिप्यो घन मांहि।
सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नांहि ॥१३॥

बुरो बुरो सब को कहे, बुरो न दीसे कोय ।
जो घट सोधूं आपणो, तो मोसूं बुरो न कोय ॥१४॥
कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम ।
तुम पारस परसंगथी, सुवरन थाशुं स्वाम ॥१५॥

॥ श्लोक ॥

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संब्बर समगतं । हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागतं, प्रभु आयो तुम शरणागतं ॥१६॥

॥ दोहा ॥

नहिं विद्या नहिं वचन बल, नहिं धीरज गुण ज्ञान ।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान ॥१७॥
विषय कषाय अनादि को, भरिया रोग अगाध ।
वैद्यराज गुरु शरण थी, पाऊं चित्त समाध ॥ १८॥
कहेवा में आवे नहीं, अवगुण भर्या अनन्त ।
लिखवा में क्युं कर लिखूं, जाणे श्रीभगवन्त ॥१९॥

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावै मुक्ति समाधि ॥ २० ॥
पथ कुपथ कारण करी, रोग हीन वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जगमें पाय।२१।
बांध्यां विण भुक्ते नहीं, विन भुक्त्यां न छुटाय।
आपही करता भोगता, आपे दूर कराय ॥ २२ ॥
ससाया से अविवेक हूं, आंख मीच अंधियार।
मकड़ी जाल विछाय के, फसूं आप धिक्कार ॥२३॥
सब भक्खी जिम अग्नि हूं, तपियो विषय कषाय।
अपछंदा अविनीत मैं, धर्मी ठग दुःखदाय ॥२४॥
कहा भयो घर छांड के, तज्यो न माया संग।
नाग तजी जिम काचली, विष नहीं तजियो अंग ॥२५॥
आलस विषय कषाय वश, आरंभ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ॥२६॥
आतम निंदा शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सबसें खमत खमाव ॥२७॥
पुत्र कुपात्रज मैं हुओ, अवगुण भर्यो अनन्त।
या हित विरुद विचार के, माफ़ करो भगवन्त ॥२८॥

शासनपति वर्द्धमानजी, तुम लग मेरी दौड़।
जैसे समुद्र जहाज विण, सूझत और न ठौर ॥२९॥
भव भ्रमण संसार दुःख, ताका वार न पार।
निर्लोभी सद्गुरु बिना, कवण उतारे पार ॥३०॥
भवसागर संसार में, द्विपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुंचे तिरे, बैठी धरम जहाज ॥३१॥
पतित उद्धारन नाथजी, अपनो बिरुद विचार।
भूल चूक सब म्हांयरी, खमिये बारंबार ॥ ३२ ॥
माफ करो सब म्हांयरा, आज तलकना दोष।
दीन दयाल दियो मुझे, श्रद्धा शील संतोष ॥३३॥
देव अरिहंत गुरु निग्रंथ, संवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र ए, यही जैन मत मर्म ॥३४॥
इस अपार संसार में, शरण नहीं अरु कोय।
यातें तुम पद भगत ही, भक्त सहाई होय ॥३५॥
छूटूं पिछला पापथी, नवा न बांधं कोय।
श्री गुरुदेव प्रसादसों, सफल मनोरथ होय ॥३६॥
आरंभ परिग्रह तजि करी, समकित व्रत आराध।
अंत अवसर आलोयके, अणशण चित्त समाध ॥३७॥

तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पामे शिव सुख धन्न ॥३८॥

श्री पंच परमेष्टी भगवंत गुरुदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यक् ज्ञान दर्शन, सम्यक् चारित्र, तप, संयम, संव्वर, निर्ज्जरा, मुक्ति मार्ग यथा शक्तिये शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने सेवने की आज्ञा है, वारंवार शुभ योग संबंधी सज्झाय ध्यानादिक अभिग्रह नियम व्रत पच्चक्खाणादि करणे, करावणे की, समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है।

निश्चल चित्त शुद्ध मुख पढ़त, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरां, हलु कर्मी चित्त भाय ॥१॥
अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक कही होय।
अरिहंत सिद्ध आतम साखसें, मिच्छामिदुक्कड़ं मोय॥२॥

॥ भूल चूक मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

॥ इति श्रावक श्रीलालाजी साहब रणजीत सिंहजी कृत वृहदालोयणा सम्पूर्णम् ॥

॥ नमोकार सहियं पचक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमोकार सहियं पचक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागरेणं वोसिरामि।

॥ पोरिसियंका पचक्खाण ॥

पोरसिय पचक्खामि उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्न कालेणं, दिसामो-हेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

॥ एगासणंका पच्चक्खाण ॥

एग्गासणं पचक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भु-ट्ठाणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

॥ चउव्विहार उपवास का पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

॥ रात्रि चउव्विहार का पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तारागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

सास उसास को थोकड़ो।

मगध देश राजगिरि नगरी ज्यां श्रेणिक राजा राज करे। त्यां श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी चउदह हजार मुनिराज का परिवार से समोसरिया जिहां चन्दनबालाजी आदिदेइने छत्तीस हजार आरज्यांजीका परिवार से पधार्‌या, तब श्रेणिक राजा

चेलणा राणी अभयकुमार अनेक राजपुत्र अंतेवर परिवार सहित भगवन्त ने वन्दना करवाने गया।

॥ दोहा ॥

ज्यां बारे प्रकार की परिषदा, विद्याधरां की जोड़।
गौतम स्वामी पूछिया, प्रश्न वेकर जोड़ ॥ १ ॥
सुणो हो त्रिभुवन धणी, पूछं बारे बोल।
तेहनो उत्तर दीजिये, शङ्का दीजे खोल ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना छमच्छर कितना ?
उत्तर—हो गौतमजी एक सौ ॥ १ ॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्षना जुग कितना ?
उ०—हो गौतमजी बीस ॥ २ ॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्ष की एना कितनी ?
उ०—हो गौतमजी दोय सौ ॥ ३ ॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्ष ना ऋतु कितना ?
उ०—हो गौतमजी छै सौ ॥ ४ ॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्षना महीना कितना ?
उ०—हो गौतमजी बारा सौ ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना पखवाड़ा कितना ?

उ०—हो गौतमजी चौबीस सौ ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्ष का अठवाड़ा कितना ?

उ०—हो गौतमजी अड़तालीस सौ ॥ ७ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना दिन कितना ?

उ०—हो गौतमजी छत्तीस हजार ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षनी पहर कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दो लाख अट्ठासी हजार ॥९॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना मुहूरत कितना ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख ८० हजार ॥१०॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षनी कची घड़ियां कितनी

उ०—हो गौतमजी २१ लाख ६० हजार ॥११॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना सास उसास कितना ?

उ०—हो गौतमजी ४ अरब ७ क्रोड़ ४८ लाख ४० हजार ।

॥ इति ॥

प्र०—हो भगवान कोई समदृष्टी जीव राग-द्वेष करके रहित दया धर्म करके सहित, एक

उपवास करके अष्टपोहर को पोसो करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २७ सौ अरब ७७ क्रोड़ ७७ लाख ७७ हजार ७ सै ७७ पल्योपम भाजेरो नारकी नो आयु तूटे। देवता नो शुभ आयुष बांधे ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान, कोई पोसा सहित पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतम जी ३४६ क्रोड़ २२ लाख २२ हजार २२२ पाल्योपम भाजेरो नारकीनो आयुषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान कोई आधा मुहूरत संबर करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ४६ करोड़ २६ लाख ६१ हजार ६ सै पल्योपम भाजेरो नारकी नो आउषो तूटे देवता नो शुभ आयुष बांधे ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक समायक करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ९२ क्रोड़ ५९ लाख २५ हजार ९ सै २५ पल्योपम भ्काजेरो नारकीनो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥४॥

प्र०—हो भगवान कोई घड़ी घड़ीनां पच्चक्खान करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २ क्रोड़ ५३ हजार ४०८ पल्योपम भ्काजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार मन्त्र को ध्यान करे तिनको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १९ लाख ६३ हजार २६३ पल्योपम भ्काजेरो नारकीनो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अनुपुर्वी गणे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी जघन्य ६० सागरोपम भ्काजेरो

उत्कृष्ट्या पांच सौ सागरोपम झाजेरो नारकीनो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ७ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकारसी करे तिणको कांई होवे ?

उ०—हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान कोई पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आउषो तूटे देवता नो शुभ आयुष बांधे ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकी नो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १० ॥

प्र०—हो भगवान कोई तीन पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक लाख वर्ष नारकी नो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ११ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकासणो करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दश लाख वर्ष नारकीनो आयुषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१२॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकल ठाणो करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक क्रोड़ वर्ष नारकीनो आउष तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे॥१३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नेई करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दश क्रोड़ वर्ष नारकीनो आयुषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १४ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अमल करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक अरब वर्ष नारकी नो

आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक उपवास करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक हजार क्रोड़ वर्ष नारकीनो आउषो तूटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अभिग्रह करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दश हजार क्रोड़ वर्ष नारकीनो आउषो तूटे। देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १७ ॥

❀ इति ❀

एक मुहूरत का ३७७३ सासउसास ॥ १ ॥

एक पहरका १४१४६ सासउसास ॥ २ ॥

एक दिन रातका ११३१९० सासउसास ॥ ३ ॥

१५ दिन का—१६९७८५० सासउसास ॥ ४ ॥

१ महीना का—३३६५७०० सासउसास ॥ ५ ॥

३ महीना का—१०१८७१०० सासउसास ॥ ६ ॥

६ महीने का—२०३७४२०० सासउसास ॥ ७ ॥

९ महीने का—३०५६१३०० सासउसास ॥ ८ ॥

१२ महीनेका—४०७४८४०० सासउसास जाणवो ९

❀ इति ❀

पृथ्वीकाय का जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥ १ ॥

अपकाय का जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥ २ ॥

तेउकाय का जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥ ३ ॥

वायुकाय का जीव एक मुहरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥ ४ ॥

प्रत्येक बनस्पतिकाय का जीव एक मुहूरत में ३२०० जनम मरण करे ॥ ५ ॥

साधारण वनस्पतिकाय का जीव एक मुहूरत में ६५५३६ जनम मरण करे ॥ ६ ॥

बेइन्द्री जीव एक मुहूरत में ८० जनम मरण करे ॥ ७ ॥

तेइन्द्री जीव एक मुहूरत में ६० जनम मरण करे ॥ ८ ॥

चऊइन्द्री जीव एक मुहूरत में ४० जनम मरण करे ॥ ९ ॥

असन्नी पंचेन्द्री जीव एक मुहूरत में २४ जनम मरण करे ॥ १० ॥

सन्नी पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

॥ इति सासउसास को थोकड़ो सम्पूर्णम् ॥

॥ मोक्ष मार्गनो थोकडो प्रारम्भीए छे ॥

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणा नमस्कार करके श्रवण भगवंत श्री महावीर देवने पूछता हुआ ।

प्र०—हो भगवान ! जीव कर्मोंके वश किम रमरह्यो ?

"हो गौतमजी जिम तिलीमें तेल रमरह्यो"

"जिम सेलड़ी में रस रमरह्यो"

"जिम दही में मक्खन रमरह्यो"

"जिम पाषाणमें धातु रमरह्यो"

"जिम फूलमें वासना रम रही"

"जिम खर पृथ्वी में हींगलू रमरह्यो"

"तिम यो जीव कर्मों के वश रमरह्यो छे"

प्र०—हो भगवान यो जीव किम करीने मुगत जावसी ?

उ०—हो गौतमजी ! जिम कोई संसारी पुरुष संसार की कला केलवी ने जिम तिल्ली सं तेल काढ़े।

"सेलडी में से रस काढ़े।"

"दही में सूं माखन काढ़े।"

"फूल में सूं अतर काढ़े।"

"पाषाण में सूं धातु काढ़े।"

"खर पृथ्वी में सूं हींगलू काढ़े।

तिम यो जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, अंगीकार करीने मुगत जावसी।

प्र०—हो भगवान! जीव जीव सगला मुगत में जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान! कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! जीवका दो भेद एक सूक्ष्म दूसरा बादर। ते बादर कुं मुगति छे सूक्ष्म कुं नहीं।

प्र०—हो भगवान! बादर बादर जीव सगला मुगत में जावेगा सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान! कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! बादर के दो भेद एक त्रस

दूजा स्थावर त्रसकुं मुगती छे स्थावर कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! त्रस त्रस सगला मुगत में जावेगा, स्थावर २ सगला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! त्रसका दो भेद (१) पंचेन्द्री ने (२) तीन विकलेन्द्री। पंचेन्द्री कुं मुगत छे तीन विकलेन्द्री कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान पंचेन्द्री २ सगला मुगत जावेगा तिन विकलेन्द्री २ सगला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! पंचेन्द्री का दो भेद एक सन्नी दूजा असन्नी। सन्नीकुं तो मुगत छे असन्नी कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! सन्नी २ सगला मुगत जावेगा असन्नी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी सन्नीका दो भेद, एक मनुष्य दूजा तिर्यञ्च, मनुष्य कुं तो मुगती छे तिर्यञ्च कुं मुगती नहीं।

प्र०—हो भगवान मनुष्य २ सगला मुगत में जावेगा तिर्यञ्च तिर्यञ्च अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! मनुष्य का दो भेद एक समदृष्टि दूजा मिथ्यादृष्टि। समदृष्टि कुं मुगत छे मिथ्यादृष्टि कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! समदृष्टि २ सगला मुगत में जावेगा मिथ्यादृष्टि २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी समदृष्टि का दो भेद एक व्रती दूजा अव्रती, व्रतीकुं मुगत छे अव्रती कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान व्रती व्रती सगला मुगत में जावेगा, अव्रती २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान! कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! व्रती का दो भेद एक सर्व-व्रती दूजा देशव्रती, सर्वव्रती कुं मुगत छे देशव्रती कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! सर्वव्रती २ सगला मुगत में जावेगा देशव्रती २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान! कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी सर्वव्रती का दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी, अप्रमादी कुं मुगत छे, प्रमादी कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! अप्रमादी अप्रमादी सगला मुगत में जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! अप्रमादी का दो भेद एक क्रियावादी दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुगत छे अक्रियावादी कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! क्रियावादी २ सगला मुगतमें जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी ! क्रियावादी का दो भेद एक भवी दूजा अभवी, भवीकं तो मुगत छे अभवी कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! भवी भवी सगला मुगत में जावेगा अभवी २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! ना अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! भवीका दो भेद, एक विनीत दूजा अविनीत, विनीत कुं मुगत छे. अविनीत, कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! विनीत २ सगला मुगत में जावेगा, अविनीत २ अठे रह जावेगा।

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! विनीतका दो भेद एक सक-

षाई दूजो अकषाई, अकषाईकुं मुगत छे सकषाई कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! अकषाई अकषाई सगला मुगत में जावेगा सकसाई २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान! कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! अकषाई का दो भेद एक उपशम श्रेणी दूसरा क्षपक श्रेणी, क्षपक श्रेणीवालाकुं मुगत छे उपशम श्रेणीवाला कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान क्षपक श्रेणी २ वाला सगला मुगत में जावेगा उपशम श्रेणीं २ वाला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारणे से?

उ०—हो गौतमजी ? क्षपक श्रेणीका दो भेद, एक छद्मस्त दूसरा केवली; केवली कुं तो मुगत छे छद्मस्त कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान केवली २ सगला मुगत में जावेगा छद्मस्त २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! केवली का दो भेद एक संयोगी केवली दूसरा अयोगी केवली, अयोगी केवली ने मुगत छे संयोगी केवली ने मुगत नहीं, ते अयोगी केवली नी स्थिति, पांच लघु अक्षर की—अः इः उः एः ओः ए पांच लघु अक्षर की स्थिति जाणवी।

॥ इति मोक्ष माग को थोकड़ो सम्पूर्णम् ॥

२० बोलकरी जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे

१—अरिहन्तजी का गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

२—सिद्ध भगवन्तजी का गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे, उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

३—आठ प्रवचन दया माता का आराधतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

४—गुणवन्त गुरूजी का गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

५—थेवरजीना गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

६—बहुश्रुतीजी का गुण ग्राम करतो थको जीव

कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

७—तपसीजी का गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

८—भण्या गुण्या ज्ञान चितारतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

९—समकित शुद्ध निर्मली पालतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

१०—विनय करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

११—दोय वेलां पडिक्कमणो करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१२—लीया व्रत पच्चक्खाण निरमला पालतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१३—धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान ध्यावतो थको जीव आर्त्त ध्यान रौद्र ध्यान बरजतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवै तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१४—बारह भेदे तपस्या करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१५—अभयदान सुपात्रदान देवतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१६—व्यावच दश प्रकार की करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१७—सर्व जीवांने साता उपजावतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण

आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१८—अपूर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो सीखतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे, उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१९—सूत्र सिद्धांतनो विनय भगती उत्कृष्ट भाव से करतो थको जीव कर्मां की कोड़ खपावे, उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

२०—ग्राम नगर पुर पाटन विचरतां, मिथ्यात उत्थापतां, समगत थापतां जीव कर्मां की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसायण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

अथ कर्म विपाक धर्म कथाना बोल लिख्यते ।

श्री ज्ञाता सूत्र के धर्म कथा माही साडा तीन क्रोड़ कथा कही छे, तिण माहें दोय क्रोड़ सोले हजार ते ऊपरलो पांचसौरो थोकड़ो, तिण मांही कर्म विपाक नामा कथा चाली, ते मांहेलो भाव समजवा हेतें बोल सरुप मांडियो छे।

शिष्य कहे—कहो स्वामी ? कानो होय ते किसा कर्म ने उदे ।

गुरु०—सुनो शिष्य ? जे पूर्वे अगला भव माहें घणा फल बीज बींधिया (तोड़िया) तेना प्रतापे कानो होय छे।

शि०—आंधो होय ते कोणसा कर्म थी होय ?

गुरु०—ज़ेणे पूर्वे त्रस थावर जीवो ने पाणी मांहे डुबोईने मार्या तेना कारणथी अंधत्व पावे।

शि०—बहेरो थाय ते किसा कर्म थी थाय ?

गुरु०—जे पूर्वे घणा मधुमाखीना मुवाल (घरटा) तोड़ीने तेमाथी संत लीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव आंखें मलमलो देखे ते किण कारण थी होय ?

गुरु०—जेणें पूर्वे घणा कुभावथी रूप निरख्या तेना प्रतापे।

शि०—कुबडो थाय ते किसे कर्म ने उदे ?

गुरु०—जे पूर्वे एकेन्द्री जीवनों चूर्ण (घात) कीधो तेना प्रतापे।

शि०—कोई प्राणी घुबड़ो हुवे ते किसा कर्म थीं हुवे ?

गुरु०—जे पूर्वे पशु (चोपगाराजीव) उपरे अतिभार नाख्यो तेने दुःख दीनो तेना प्रतापे।

शि०—थोटो होय ते किसा कर्मथी होय ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे दोपगारा चौपगारा जीव तथा एकेन्द्री जीव ना पांख अंग, उपांग उपाड़ी नाख्या ते कारण थी।

शि०—पांगलो होय ते किसा कर्म रे उदे होय ?

गुरु०—जे पूर्वें पशुपक्षी जीवोने धंधावकरतांग लागलो करतो एकेंन्द्री नी जड़ खणतो तेना प्रतापे।

शि०—गूंगो, बोबड़ो होयते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे संजमवंत, गुणवंत, शीलवंत जीवनी पुठपाछे चावत (खोटो आल) करी तेना प्रतापे।

शि०—खोज्यो होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवें वेदगिरी का काम कीधा तेना प्रतापे।

शि०—वेहेरो पात्रलो थाय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूरवे घणी वनस्पती स्वहाते करीने छेदी तेना कारणसूं ते जीव बेहरो पात्रलो उपजे।

शि०—गूंगो टोलो होयते किसा कर्मथी होय ?

गुरु०—जेणे पूर्व भवे चार तीर्थंना अवगुण कस्या तेना प्रतापे।

शि०—गलत कोडी जीव उपजे ते किसा कर्मथी ?

गुरु०—जेणे पूर्वे सोना रूपानो आगार करायो तेना प्रतापे।

शि०—जश करतां अपजश पाय ते किसा कर्म थी?

गुरु०—जे पूर्वभवे सचित द्रवादिकना औषध भेषज्य घणा कीना तेना प्रतापसुं।

शि०—आंख बामणी होयते किसा कर्मने उदे?

गुरु०—जे पूरवे लूणना आगारना संजोग कराया तेना प्रतापे।

शि०—काख मांजरो होयते किसा कर्मने उदे?

गुरु०—जे पुरवे पाप के उदे सम दृष्टी काम कीनो तेना प्रतापे।

शि०—बावलो थाय ते किसा कर्मसुं थाय?

गुरु०—जे पूर्वे पापथी कायानो मद कीनो तेना प्रतापे।

शि०—रूंड मुंड शरीर होयते किसा कर्मने उदे।

गुरु०—जेणे पूर्वे आंकरा करड़ा दंड कराया ते पापने उदे ए भवमां शरीर रूंड पायो।

शि०—शरीर ने विषे भगंदर रोग उपजे ते क्यां कर्म ने उदे उपजे छै।

गुरु०—जे पूरवे स्वहाते करी पंचेन्द्री जीवो ने हणिया तेना प्रतापे।

शि०—द्रव्यनी वांछा करे अनेरानें द्रव्य पामें तें किसा करमनें उदे ?

गुरु०—जे पूर्वं अनेरानें द्रव्यनी अंतराय पाड़िया तेना प्रतापे ?

शि०—कंठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जे पूर्वं घणा माछला मारिया तेना प्रतापे।

शि०—शरीरनें विषे पांथरी रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जे पूर्वभवे मैथुन घणा सेविया तेना प्रतापे।

शि०—अर्श रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—जेणे पूरवे धुणी घाली घणा जीवाने सताविया तेना प्रतापे ?

शि०—शरीरने विषे वाला निकले ते किसा करम नें उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा जीवांरा दावल तोड़ी शोभा वणावी तेना प्रतापे।

शि०—शरीरने विषे रोग दीसे नहीं जीव अनेक दुःख पावे ते किसा कर्म ने उदे ?

गुरु०—जे पूर्वें झूठो बोली लाच लीधा तेना प्रतापे ?

शि०—संजोगना विजोग थाय ते किसा करमने उदे ?

गुरु०—जे पूरवे माया कपटाई तथा मित्र कपटाई कृतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ?

शि०—शरीर कुवर्ण पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरु०—पूरवे घणा फल बीज तोड़िया पोते रूप देखाड्या तेना प्रतापे ?

शि०—जीव डरपे कंपे अपराधी मारगमां पड़े ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पुर्वें कोटवालना करम कीधा तेना प्रतापे।

शि०—शरीरने विषे पाटो रोग थाय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जेणे पूरवे बावड्यां कुंवा खणाव्यां तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव मीठो बोले अनेरानें कड़वो लागें ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जेणे पूरवे पंचेन्द्री जीवना आहार कीधा तेना प्रतापे।

शि०—शरीरनें विषे खाज फटणी चाले ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा तेन्द्री जीव ताइवे अगन पाणी माहें नाखी मराविया तेना प्रतापे।

शि०—मिथ्या शास्त्र भणे प्रपंच करे सो किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा जीव उपर क्रोध कीधो झूठो आल दीधो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव सूत्र भणवा वयावच करे पछे

भणेबा वालारा अवगुण वाद बोले ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जेणे पूरवे घी तेल तेलना बासन उघाड़ा मेलिया मांहे जीव हणाविया तेना प्रतापे।

शि०—स्त्री नपुंसक थाय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे माया कपटाई करी द्रव्य लीधो नटी गई तेना प्रतापे ?

शि०—कोडियो थाय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे पृथ्वीकायना छेदन भेदन कीधा तेना प्रतापे।

शि०—शरीरनें विषे जुंवा पड़े ते किसा कर्मसूं ?

गु०—जे पूरवे माछलाना आहार कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव तप करे, जप करे सज्झाय करे त्यांरो कीधो अनेरा नें सुहावे नहीं ते किसा कर्मनें उदे ?

गु०—जे पूरवे अविश्वास करी कृतघ्न मित्र कपटाई करी तेना प्रतापे।

शि०—तप जप न हुवे ते किसा कर्मनें उदे ?

गु०—जेणे पूरवे तप जपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कोई जीव बोलिया अनेराने सुहावे नहीं ते किसा कर्मनें उदे ?

गु०—जे पूरवे वचन कलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरनें अशुभ वर्ण पामे ते किसा कर्मनें उदे ।

गु०—जे पूरवे रूपनो मद कीधो तेना प्रतापे ।

शि०—कूड़ो आल माथे आवे ते किसा कर्म नें उदे ?

गु०—जे पूरवे अठारमो पापस्थानक बार बार घणो सेवियो तेना प्रतापे ।

शि०—आपणे अण कीधा अपयश अपकीरत बधे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे अस्त्री हती तेवारे सासु नणंद भाई

भोजाई देराणी जेठाणीनी ईरषा कीधी तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव पासे उभो रहे बैसे अनेरो जाणे अठाथी ओ परो जावे तो ठीक ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरव भवे पोतानी थापे अनेरानी उथापे बचन करीने अविश्वास घलो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने जीव विराध्यांथी क्रोघ आवे नहीं ते किसा करमनें उदे?

गु०—जे पूरवे लोभ घणा कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव अलाभ पणे उदे थाय ते किसा करमनें उदे?

गु०—जे पूरवे घणा जीवाने लाभ हुवती वेला तेहनें अंतराय पाड्यो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव सुसर संथान न पावे ते किसा करमनें उदे?

गु०—जे पूरव भवे घणा जीवानें फांसी दीधा तथा मुंडो मुंदी मार्या तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव बोबडो बहिरो अशुभ अणगमतो संथान पामें ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे सुसर संथान मांहें मद कीनो घणी हंसा कीधी मद करी घणा जीवाने ताप दीधो तेना प्रतापे।

शि०—मनुष्य सुरससंथान पामे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे पर जीवने मीठा बोले, रक्षा करे, पापना गीत बरजे तेना प्रतापे।

शि०—पंचेन्द्री जीव बलहीण उपजे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे मांसनो आहार कीधो तेना प्रतापे।

शि०—पुरुष लिंग छेदी स्त्री लिंग पामे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे सतरमो पाप स्थानक माया मोसो घणो सेवियो तेना प्रतापे।

शि०—मन वंछित वस्तु जीव न पामे ते किसा करमनें उदे।

गु०—जे पूरवे पंचेन्द्री जीवना संजोगना विजोग कीधा तेना प्रतापे।

शि०—जीवने निंद्रा घणी आवे ते किसा करम नें उदे।

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे अति मदिरा पान पीधा तेना प्रतापे।

शि०—शरीर बलहीन पामे ते किसा करमनें उदे।

गु०—जे पूरवे कुक्कड़ाना आहार कीधो तेना प्रतापे।

शि०—गुंगो थाय ते किसा करमनें उदे?

गु०—जे पूरवे जीवोने भागसीमें घाली ऊपर खारो जल सींचियो तेना प्रतापे।

शि०—जीवने रोध घणो ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरवे घणा अनंत कायना जीवना आहार कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे असंज्ञी पंचेन्द्री जीव हणिया हणाविया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव साधु साधवी माहें वालो लागे नहीं ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे पंचेन्द्री तरुण मनुष्य विराधिया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव संसारी जीवने तथा माता पिताने वालो न लागे ते किसा करमने उदे।

गु०—जे पूरवे घणा विकलेन्द्री जीव विराधिया तेना प्रतापे।

शि०—पुरुषने तरुणपणे स्त्रीनो बियोग थाय ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे अक्रंद भावे कंदर्प सेविया तेना प्रतापे।

शि०—धणी धणीयानीनो तरुणपणे विजोग थाय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे स्त्री पुरुषना संजोगनी औषधि घणी मेलिया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने पर सेवामा खोट थाय ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरवे घणा मदिरा पान किया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव साचो बोले अनेराने प्रतीत न उपजे ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरवे कूड़ी साख भरी तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव दलिद्रपणो पामे ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरवे दान पुण्य सुपात्रने न कीधा दया न पाली सुपण राखियो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने माता भाई बेन भाणेज पुत्र कुटुम्बनो विजोग थाय ते किसा करमने उदे?

गु०—जे पूरवे कुगुरु कुदेव हिंसा धरम परूपियो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव धर्म न पामे ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे मोहणी कर्म जोड़ी, पूर्व भवे मोहनी सीत्तर कोड़ा कोड़ सागरोपमनी बांधी ते मांहे गुणहतर कोड़ा कोड़ क्षय कीधी ते माहें बाकी एक सागर रही ते मध्ये भाग तीन बाकी रह्या तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव समकित सहित बोले अराधक पणोछे वदबदीया पछे आडे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे गाम नगर पासे कुआ निवाण खण्या घणा जीवाने दुःख दीधा तेनी प्रशंसा कीधी तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव खावे, पीवे ओडेछे अनेरो कोई देख सके नहीं, ते जीव निसासो मेले ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे तीव्र भावे मैथुन सेवियो सेवायो भलो जाणियो संजोग मेलीया तेना प्रतापे।

शि०—चवदे थानकं समुच्छम जीव निपजे ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे नील कूड कराविया तेना प्रतापे।

शि०—रक्त पीती थाय ते किसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पूरवे सीला बठाणा करम कीधा तेना प्रतापे।

शि०—मरजादा उपरांत घणी भूख लागे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जेंणे पूरवे घणा खेत्र खेडीया तेना प्रतापे।

शि०—मनुष्य अवतार पामे अनें हात पग नी आंगलिया छेदन पामे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे झाड़ खूट रूख काटीया तेना प्रतापे।

शि०—मनुष्य अवतार पंचेन्द्री पूरो पामीनें उपक्रांत सुलामणो दीसे बोले जदी बांगसींग तो बोले ते किसा करमने उदे।

गु०—जे पूरवे रंगरेजना कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शि०—मिरगी जोलो आवे ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे लोहारनी धम धमाई तेना प्रतापे।

शि०—पंचेन्द्री पूरी पामीने पछे बोलता थूक गीडगीडार आवे सामो देखता दुरगंछा करे ते किसा करम नें उदे ?

गु०—जे पूरवे गोबर लीद कचरो घणा दीन सुधी एकठो करीनें छांनद थापीया तेना प्रतापे।

शि०—घणा मनुष्य सहित पाणी माहें नाव डूबी मरे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे पेसाब माहें पेसाब कीधो तथा घणा दीन राखीने ढोलियो तथा ताजखाना माहें उच्चारपासवन एकठा कीधा समुधानी कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव बाल मारवानी वांछा करे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा ताजखाना वुहारीया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने घणो मेल नाक माहेंथी मूंडा माहे आवे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे तालाव कुवानो पाणी नाख्यो तेना प्रतापे।

शि०—जीवने बालपणे कुज दुखे माथे वेग सूं सूल चाले ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे एकेन्द्री धान त्रण भीजोईनें शेकिया तेना प्रतापे।

शि०—मनुष्य मरी पृथ्वीकाया माहें थोड़े आउखे उपजे दुःख सहे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे झूठ घणा बोलिया तेना प्रतापे।

शि०—मनुष्य मरीनें अपकाया मांहे थोड़ा बधे दुःख घणो सहे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे हांसो करीनें झूठ बोलतो, झूठ आल देतो तना प्रतापे।

शि०—कृतब करीनें खोजो करे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा बन काटिया कटाविया तेना प्रतापे ।

शि०—घणो कांपणो पामें ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा कपासीया तोड़ीया, सेलड़ी घणी पीलिया तेना प्रतापे ।

शि०—तरुणपणे दांत पड़े माथारा केश धोला थाय ते किसा कर्मने उदे ?

गु०—जे पूरवे कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटावी तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय भरीया नीगल होय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे आखा फल चीरीनें लुणसुं भरीया तेना प्रतापे ।

शि०—दासपणो पामे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे माखण (लुणी) इकठो घणा दिनासूं तपावीयो तेना प्रतापे ।

शि०—नासुर रोग थाय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे ।

शि०—शरीरने विषे कीडा नगरो रोग थाय ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे हाथी, घोड़ा, भेस, गायरो पेशाब एकठो करीनें तिणमें लुण घालीयो पछे अनेरा जीवों ने निरपराधे थोड़ा घणा वारसूं सींचिया दंड दीधा तेना प्रतापे।

शि०—स्त्रीनी जोणीनें विषे जंसमंस रोग उपजे वेदना थाय ते किसा करमनें उदे।

गु०—जे पूरवे घणी बागबाडी करावी फल बीज तोड़िया साल रूख उपाड़ीनें फेर रोपिया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव तप घणो करे अनेरो जाणे ने मुड़ाथी कहे कूड़ो तप करे ते किसा करम नें उदे ?

गु०—जे पूरवे घणी वनस्पती फूलना हातणा कख्या, नील फल नित विराधिया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव कहेनें खवाडे पिवाड़े पहेरावे

पिण तेहना पाछे अवगुण माने ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे रांधनरो काम कीधो तेना प्रतापे ?

शि०—कोई जीव वस्तु छांनी लेईने सुंपे तेहनी चुगली करे ते किसा करमने उदे।

गु०—जे पूरवे काजी नील फल अणावीने खांडाना अंगार उपर धरीया तेना प्रतापे।

शि०—शरीरने सोले रोग साथे उपजे ते किसा करमने उदे।

गु०—जे पूरवे सेलडीरा कटका करीनें घणा घाणी माहे पीलिया घणा गांम नगर उजाड़ कस्या, मारीया, बाला वसाया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव गर्भ माहे उपजे पछे जन्मती वेला आडो आवे तेहने कापीने काढे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे कसाईना हातसुं दान लीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव गर्भ मांहे उपजे पछे गलतो जाय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे साधुने कुड़ो आल दीधो आसुझतो आहार दीधो तेना प्रतापे।

शि०—कोई स्त्री ने बार बरसरो छेडो रहे ते किसा करमनें उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा पेसाव एकठा कीधा घणा काल राखीने ढोलिया जीव मराविया तेना प्रतापे।

शि०—कोई स्त्रीने तेहीज गर्भ चवीनें फेर तेहीज छेडो गर्भ माहे उपजे पछे चोवीस वर्ष लगे रहे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे घणा मैथुन सेविया तीव्र भावे अने सेवन वालानें साज दीनो साधारण करम कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोईरा डीलारे तप रोग थाय तथा सगलो डील बलु बलु करे ते किसा करमनें उदे।

गु०—जे पूरवे फल फुलना पाक मरदन कराविया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव भले घरे जन्म पामेने पछे कमाई माठी करे राजदूत पकड़ीने दुःखदे रोकी रात्रे दंड करे गले हारी बांधे घर घर भीक्षा मंगावे ते किसा करमने उदे।

गु०—जे पूरवे सीसा नो आगार करावीयो तेना प्रतापे।

शि०—स्त्री वांझ हुवे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जे पूरवे फुलना अंतर करावीया तेना प्रतापे।

शि०—स्त्री मरत वाझ हुवे ते किसा कर्म थी ?

गु०—जेणे पूरवे उगंती वनस्पती पुफला त्रूटीया (तोड़ीया) तेना प्रतापे।

शि०—पुरुष वांझ हुवे ते किसा करम थी ?

गु०—जेणें पूर्व भवे घणा बीजमीज काटीया खोदीया, तलावीया, शोकीया तेना प्रताप सूं।

शि०—पुरुष एक अने स्त्रीया घणी सर्व स्त्रीया बांझ होय ते किसा करमने उदे ?

गु०—जेणें पूरवे घणी वनस्पतिनो रस करावियो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव चोरी करे वाट मारे गाठ खोले ते किसा करमने उदे।

गु०—जेणे पूरवे घणा हलालखोरना काम कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव अनेराने फासी देवे ते किसा करमने उदे?

गु०—जेणें पूरवे जलचर जीव घणा मारीया तेना प्रतापे।

शि०—जीव जन्म मरणरो दुःख सरीखो पामे ते किसा करमने उदे?

गु०—जेणें पूर्व भवे घणा वनस्पतिना पान फूल, बीज, अंकुर छेदीया चूटीया तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव जन्मतपान माता पितानो विजोग पामे ते किसा करमने उदे।

गु०—जेणे पूर्वे कवली वनस्पतिना अंकुर छेदीया

तथा छेदन वालाने साजदीनो तथा घणा जीवारो वियोग पाड़ीयो तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव समदृष्टी हातसुं करीनें साधु मुनिराजने प्रतिलाभवानो मनोरथ करे पिण प्रतिलाभे सके नहीं ते किसा करम ने उदे ?

गु०—जेणें पूरवे रसकाई, मर्मकाई भाषा बोली छानी बात प्रगट कीनी, घणा जीवाने दानरे अंतराय पाड्या तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवने बल घणोछे, अने सामायिक व्रत, देसावगाशिक व्रत, पोसो, पडिक्कमणो करवाने विषे प्रमाद उपजे छे ते किसा करमने उदे ?

गु०—जेणें पूर्व भवे ममाई (वनस्पती) ना आहार घणा कीधा तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीवरो शरीर घणो मोल (भारी) हुवे किसा करमने उदे ?

गु०—जेणें पूरवे आसर्प करावी पीधा तेना प्रतापे ?

शि०—कोई जीवरो नाक माहेलो पाणी मुंडा में आवे तथा खाधो पीधो आहार एक धीर निकले ते किसा करमने उदे ?

गु०—जेणं पूरवे सोनार की धमधमावी तेना प्रतापे।

शि०—कोई जीव भलीजात कुलमें जन्म पामे, पंचेन्द्रियाना जोग संजोग पुरापाडे अने अन क्रिधा अनजाणीया माथे कुड़ो आल आवे पछी राजा पकडिने चौरंगीयो करावे पछे राज सभा माहे वाहालो लागे जे बोले ते मानी लेवे ते किसा करमने उदे।

गु०—जेणं पूरवे घणी अनंतीकाय, कंद, मूल कटाविया चूरण कीधा तथा गर्भ पाड़ी छानो राख्यो तथा नारकी तथा तीरजंच माहें अकाम निज्जरा कीधी तेना प्रतापे।

॥ इति कर्म कथाना बोल समाप्त ॥

अथ कामदेव श्रावकनी सज्झाय

श्रावक श्रीवीरनो चम्पानो बासीजी ॥ ए ॥ आंकड़ी ॥ इक दिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिय सभा रे मांय। दृढ़ताई कामदेवनीजी, कोई देव न सकै रे चलाय ॥ श्राव० ॥ १ ॥ सरध्यो नहीं एक देवताजी, रूप पिशाच बणाय। कामदेव श्रावक कनेजी, आयो पौषधशालरे मांय ॥ श्राव० ॥ २ ॥ रूप पिशाचनो देखने जी, डस्यो नहीं रे लिगार। जाण्यो मिथ्याती देवता जी, लियो शुभ मन ध्यान लगाय ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ ऊभो रहै कामदेव जी, तोने कल्पै नहीं छै कोय। थारो धर्मज छोड़नोजी, पिण हूं छोडावस्यूं तोय ॥ श्रा० ॥४॥ हात्तीनो रूप वेक्रे कियोजी, पिशाच पणो कियो दूर। पौषधशाला में आयने जी, बोलै वचन करूर ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ मन माहें नहीं कंपियोजी, हात्ती संडमें झाल। पौषधशाला बारै लेईजी, दियो आकाशे उछाल ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ दन्त

सूंडमें झालनेजी, कांबलनी परे रोल। उज्वल वेदना उपनीजी, नहीं चलियो ध्यान अडोल॥ आ०॥ ७॥ गजपणों तज सर्प भयोजी, कालो महा विकराल। डंक दियो कामदेवनेजी, क्रोधी महा चण्डाल॥ आ०॥ ८॥ अतुल वेदना उपनीजी, चलियो नहीं तिल मात। सुर तिहां प्रगट थयोजी, देवता रूप साक्षात॥ आ०॥ ९॥ कर जोड़ीने इम कहेजी, थांरा सुरपति किया है वखान। म्हें नहीं सरध्यो मुढ़मतिजी, थानें उपसर्ग दीनो आण॥ आ०॥ १०॥ तन मन कर चलिया नहींजी, थें धर्म पायो परमाण। खमज्यो अपराध ते मांहरोजी, इम कही गयो निज ठाण॥ आ०॥ ११॥ वीर जिणंद समोसर्याजी, कामदेव वांदण जाय॥ बीर कहै उपसर्ग दियोजी, तोने देव मिथ्याती आय॥ १२॥ हंतास्वामी साचछैजी, तद समणा समणी बुलाय। घर बैठा उपसर्ग सह्योजी, इम परशंसै जिनराय॥ आ०॥ १३॥ बीस वरस लग पालियांजी, श्रावकना

व्रत वार। पहले स्वर्गं ऊपनाजी, चव जासी भव पार ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी, पालो श्रावक धर्म। कामदेव श्रावकनी परेजी, थे पामो शिव सुख पर्म ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ मुरधर देशसुं आयनेजी, जैपुर कियो है चौमास। अष्टा-दश छीयासीएजी, ऋष कुशालचन्दजी कियो प्रकाश ॥ श्रा० ॥ १६ ॥

मृगापुत्र की ढाल।

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा वलभद्र नाम। तस घर राणी मृगावतीजी, तस नन्दन गुणधाम। ए माता खिण लाखीणी रे जाय ॥१॥ एक दिन बैठा गोखड़ेजी, राण्यां रे परिवार। शीश दाभै ने रवि तपे जी, दीठा तप अणगार ॥ ए माता० ॥ मुनि देखी भव सांभल्योजी, मन वसियोरे बैराग। हरष धरीने उठिया जी, लागा माताजीरे पाय। ए जननी अनुमति दे

मोरी माय ॥ माता० ॥ ३ ॥ तूं सुकुमाल सुहामणो जी, भोगो संसार ना भोग। जोबन वय पाछी पड़े जब, आदरजो तुम जोग, रे जाया तुझ बिन घड़ीरे छः मास ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खबर नहीं ऐ मांय, करे कालकोजी साज। काल अजाण्यो झड़ पड़ेजी, ज्यों तीतर पर बाज ॥ ए माता खिण लाखिणी रे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जड़ित घर आंगणाजी, तूं सुन्दर अवतार। मोटा कुलरी ऊपनीजी, कांई छोड़ो निरधार ॥ रे जाया तूं० ॥ ६ ॥ बांदो घर बादी रचिये ए माय, खिणमें खेरुं थाय, ज्यूं संसारनी सम्पदाजी, देखंता विल जाय ॥ ए माता० ॥ ७ ॥ पिलङ्ग पथरणे पोढणो जी, तूं भोगी रे रसाल। कनक कचोले जीमणो जी, काचलड़ी में आहार ॥ रे जाया तूं० ॥ ८ ॥ सायर जल पिया घणाये माय, चुंग्या माताराथान। तृप्त न हुवो जीवड़ोजी, इधक अरोग्या धान ॥ ए माता० ॥ ९ ॥ चारित्र छे जाया दोहिलोजी, चारित्र खांडानी धार। विन हथियारां

झुझणोजी, औषध नई है लिगार ॥ रे जाया तूं० ॥ १० ॥ चारित्र छे माता सोहेलोजी, चारित्र सुखनीजी खान। चवदेई राजलोकनाजी, फेरा टालणहार ॥ ए माता ॥ ११ ॥ सियाले सी लागसी जी, उनाले लुरें बाय। चौमासे मेला कापड़ाजी, ए दुःख सह्यो न जाय रे जाया० ॥ १२ ॥ बनमा छे एक मृगलोजी, कुण करे उणरिज सार। मृगानी परे विचरस्यूं जी, एकलड़ो अणगार ॥ ए माता० ॥ १३ ॥ मात बचन ले निसख्याजी, मृगा पुत्र कुमार। पंच महा व्रत आदख्याजी, लीधो संयम भार ॥ ए माता० ॥ १४ ॥ एक मासनी सलेखनाजी, उपनो केवल ज्ञान। कर्म खपाय मुक्त गया जी, ज्यांरो लीजे नित प्रति नाम ॥ ए माता० ॥ १५ ॥

स्त्री-चरित्र की ढाल।

सतियां तो सीता सारषी, ज्यांरा जिनवर किया बखाण। भवियण। कुसती कपिला सारषी, त्यांरी कर लीज्यो पिछाण। भवियण। चरित्र सुणो नारी तणा ॥ १ ॥ छोड़ी संसारनो फंद। भ०। शीलवंत नर साम्भलै, ते पामै परम आणंद। भ०। च० ॥ २ ॥ कुसती में औगुण घणा, भाष्या श्री जिनराय। भ०। थोड़ासा परगट करूं, ते सुणज्यो चित्त ल्याय। भ०। च० ॥ ३ ॥ नारी कूड़ कपट नी कोथली, औगुणनो भण्डार। भ०। कलह करवाने सांतरी, भेद पड़ावण हार। भ०। च० ॥ ४ ॥ देहली चढ़ती डिग पड़ै, चढ़ ज्यावै डूंगर असमान। भ०। घरमें बैठी डर करै, राते जाय मसाण। भ०। च० ॥ ॥ ५ ॥ देख बिलाई ओदकै, सिंघने सन्मुख जाय। भ०। साप उसीसै दे सोवै, उन्दर स्यूं भिड़काय। भ०। च० ॥ ६ ॥ कोयल मोर तणी

परै, बोलै मीठा बोल। भ०। भीतर कड़वी कुट-
कसी, बाहिर करै किलोल। भ०। च० ॥ ७ ॥
खिण रोवै खिण में हंसै, खिण मुख पाड़ै बूंब।
भ०। खिण राचै विरचै खिणे, खिण दाता खिण
सूम। भ०। च० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल
करै, ऐसी नार अलाम। भ०। बन्दर ज्यूं नचावै
निज कंथनै, जाणै कै असल गुलाम। भ०। च०।
॥९॥ नारीने काजल कोटरी, ए वेहुं एकज रंग। भ०।
काजल नर कालो करै, नारि करै शील भंग। भ०।
। च० ॥ १० ॥ नारी नै बन वेलड़ी, दोनूं एक
सभाव। भ०। कंटक रूंख कुशील नर, तिण स्यूं
वेहुं लग ज्यात। भ०। च० ॥ ११ ॥ नाम छै
अबला नार नो, पण सबली छै इण संसार। भ०।
सबला सुर नर तेहनै, निबला कर दिया नार।
। भ०। च० ॥ १२ ॥ सुर नर किन्नर देवता,
त्यानै पिण बश किया नार। भ०। नाख्या
नरक निगोद में, त्यांरी तो बम्ब ने बार। भ०।
च० ॥ १३ ॥ नैण वैण नारी तणा, वचनज तीखा

सैल । भ० । अङ्ग तीखो तरवार ज्यूं, इण माखो सकल संकेल । भ० । च० ॥ १४ ॥ विरची तो बाघण स्यूं बुरी, स्त्री अनरथ मूल । भ० । पाप करी पोतै भरै, अंग उपजावै सूल । भ० । च० ॥ १५ ॥ मोर तणी पर नेहना, बोलै मीठा बोल । । भ० । साप सैपूंछोई गलै, पाड़लेवै नर भोल । भ० । च० ॥ १६ ॥ पुरुष पोते कपड़ा जिसो, नर गुण नविं भांत । भ० । नारी कातर वश पड्या, फाटै है दिन रात । भ० । च० ॥ १७ ॥ बाघण बुरी वन मांयली, बिलगी पकड़ी खाय । भ० । नारी बाघण वश पड्यां, नर न्हासी किहां जाय । भ० । च० ॥ १८ ॥ फाटां कानांरी जोगणी, तीन लोकने खाय । भ० । जींवंती चुण्टै कालजो, मुवां नर्क लेज्याय । भ० । च० ॥ १९ ॥ नारी लखणां नाहरी, करै वचनरी चोट । भ० । केइक संत जन उबस्या, लीधी द्या नी ओट । । भ० । च० ॥ २० ॥ त्रिया मदन तलावड़ी, डूब्यो बहु संसार । भ० । केइक उत्म नर उबस्या,

सतगुरु वचन सम्भाल। भ० । च० ॥ २१ ॥ जिम जलोक जल मांयेली, तिम नारी पिण जाण। भ०। वा लागी लोहो पियै, नारी पियै निज प्राण। भ०। च० ॥ २२ ॥ राता कपड़ा पहर ने, काठा बांध्या माथारा केश। भ०। हातां मैंहदी लगायने, इण ठगोरि ठगियो सारो देश। भ०। च० ॥ २३ ॥ लोक कहे ग्रह बारमो, लागां हणै प्राण। भ०। नाखै नरक निगोद में, नारी नवग्रह जाण। भ०। च० ॥ २४ ॥ इण संसार असार में, तिणमें मोटी गाल। भ०। माणस छोड़ै मारीजे, गावै टोडर माल। भ०। च० ॥ २५ ॥ नगर उजैणी नो राजियो, हरचंद नामे राय। भ०। सोमिला ऊपर मोहियो, नाख्यो नंदिये वुहाय। भ०। च० ॥ २६ ॥ जहर दियो निज कंथ ने, नाम जसौदा नार। भ०। कंथ मार काष्टे चढ़ी, गई नरक मझार। भ०। च० ॥२७॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त बारमों, तेहनी चुलनी मात। भ० । बिषैरो वाही थकी, करवा मांडी पुत्र नी घात।

। भ० । च० ॥ २८ ॥ परदेशी राजा तणी, सुरीकन्ता नार । भ० । स्वार्थ न पूगो जाण नै, मार्यो निज भरतार । भ० । च० ॥ २९ ॥ बरस बारै बन सेविया, लिछमण ने श्रीराम । भ० । दशरथ दुःख सह्या घणा, तेतो केकयीरा काम । भ० । च० ॥ ३० ॥ कौणक बहल कुमारके, मांड्यो महा संग्राम । भ० । हार हाथी ने कारणै, तेतो पद्मावती रा काम । भ० । च० ॥ ३१ ॥ धारणी नाथ धूजावियो, ऐसी नारी अजोग । भ० । मुंज राजा तणो क्षय कियो, ते पिण नारी तणो संजोग । भ० । च० ॥ ३२ ॥ महासतक श्रावक घरे, हुई रेवन्ती नार । भ० । भीष्ट करवा भरतार ने, आई पोसा मझार । भ० । च० ॥३३॥ देवदत्त सुनार ना पुत्रनी, हुई कुपातर नार । भ० । देव छलीनै धीज उतरी, सुसरानै झूठो पाड़ । भ० । च० ॥ ३४ ॥ कपिला पटराणी राजा तणी, तिण कीधी माहुत स्यूं प्रीत । भ० । तिण आल दे नाहक मरावियो, हुई बहोत फजीत ।

भ०। च० ॥ ३५ ॥ अभिया राणी ने कपिला ब्राह्मणी, सेठ नै दिया उपसर्ग अनेक। भ०। सेठ सुदरशन चलियो नहीं, मनमें आण विवेक। भ०। च० ॥ ३६ ॥ औगुण कह्या कुसत्यां तणा, कहतां न आवै पार। भ०। सतियांरा गुण छै अति घणा, त्यांरो तो बहोत विस्तार। भ०। च० ॥ ३७ ॥ अठै कपिला रै औगुण तणो, चाल्यो छै इधकार। भ०। सेठ ने अंग स्यूं भीड़ियो, पिण सेठ न चलियो लिगार। भ०। च० ॥ ३८ ॥

अथ चार शरणा को स्तवन।

हिरदै धारीजे हो, भवियण, मंगलीक शरणा च्यार ॥ ए टेक ॥ पोह उठी नित समरीजे हो। भवियण। मंगलीक शरणा चार, आपदा टले सम्पदा मिले हो। भवियण। दौलतना दातार ॥१॥ अरिहन्त सिद्ध साधु तणा हो ॥ भवि० ॥ केवली

भाषित धरम, ए चांरु जपता थकां ॥ हो भ० ॥ तूटे आठूंई करम ॥ हिरदै० ॥ २ ॥ ए शरणा सुख कारिया ॥ हो भ० ॥ ए शरणा मंगलीक ॥ ए शरणा उत्तम कह्या ॥ हो भ० ॥ ए शरणा तह-तीक ॥ हिरदै० ॥ ३ ॥ सुखसाता वरते घणी ॥ हो भ० ॥ जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो आधार ॥ हिरदै० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी ॥ हो भ० ॥ सिंह चीताने सूर । वैरी दुश्मन चोरटा ॥ हो भ० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हिरदै० ॥ ५ ॥ निश दिन याने ध्यावतां ॥ हो भ० ॥ पामें परम आनन्द, कमी नहीं कीणी बातरी ॥ हो भ० ॥ सेव करै सुर इन्द ॥ हि० ॥६॥ गेले घाटे चालंतां ॥ हो भ० ॥ रात दिवस मझार ॥ गावां नगरां विचरतां ॥ हो भ० ॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥ ७ ॥ इन सरिसो शरणो नहीं ॥ हो भ० ॥ इण सरिसी नहिं नाव ॥ इण सरिसो मन्त्र नहीं ॥ हो भ० ॥ जपतां बाधे आव ॥ हि० ॥ ८ ॥ राखो शरणारी

आसता ॥ हो० भ० ॥ नेड़ो न आवे रोग ॥ वरते आणन्द जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो संयोग ॥ हि० ॥ ६ ॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो भ० ॥ निश्चय फल निरवाण ॥ कुमी नहीं देव-लोक में ॥ हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत अठारे बावन्ने ॥ हो भ० ॥ पाली सेखे काल ॥ ऋष चौथमलजी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणज्यो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥

❀ इति ❀

चेत चेत नर चेत !

❀ दोहरा ❀

परलोके सुख पामवा, कर सारो संकेत।
हजी बाजी छै हाथ मां, चेत चेत नर चेत ॥
जोर करी ने जीतवुं, खरे खरुं रण खेत।
दुश्मन छै तुझ देहमां, चेत चेत नर चेत ॥
गाफल रहिश गमार तुं, फोगट थइश फजेत।

हवे जरूर हुशीयार थइ, चेत चेत नर चेत ॥
तन धन ते तारां नथी, नथी प्रिया परणेत।
पाछल सौ रहशे पड्यां, चेत चेत नर चेत ॥
प्राण जशे ज्यां पिण्ड थी, पिंड गणाशे प्रेत।
माटी मां माटी थशे, चेत चेत नर चेत ॥
रह्या न राणा राजिया सुर नर मुनि समेत।
तुंतो तरणा तुल्य छै, चेत चेत नर चेत ॥
रजकण तारा रखड़शे, जेम रखड़ती रेत।
पछी नर तन पामीश क्यां, चेत चेत नर चेत ॥
काला केस मटी गया, सर्वे बनीया श्वेत।
जोवन जोर जतुं रह्युं, चेत चेत नर चेत ॥
माटे मनमां समजीने, विचारी ने कर वेंत।
क्यांथी आव्यो क्यां जवुं, चेत चेत नर चेत ॥
शुभ शीखामण समजीने, प्रभु साथे कर हेत।
अन्ते अविचल अेज छे, चेत चेत नर चेत ॥

उपदेशिक ढालाँ।

ढाल १ ली

भुलो मन भमरा काँई भम्यो, भमियो दिवस ने रात, मायारो लोभी प्राणियो, मरने दुरगति जात ॥ भु० ॥ १ ॥ केहना छोरूरे केहना वाछरू, केहना मायने बाप। ओ प्राणी जासी एकलो, साथे पुण्यने पाप ॥ भु० ॥ २ ॥ आशा तो डूंगर जेवड़ी, मरणो पगल्याँ रे हेट। धन संचीरे संची काँई करो, करो जिनजीरी भेट ॥ भु० ॥ ३ ॥ उलट नदी मारग चालवो; ज्यावो पेलैरे पार। आगल नहीं हट वाणियो, संबल लीजै रे लार ॥ ४ ॥ मूरख कहै धन माँहरो ते धन खरचै न खाय। वस्त्र बिना जाय पोढ़ियो, लखपति लकड़ाँरे माँय ॥ भु० ॥ ५ ॥ धन्धो करी धन जोड़ियो, लाखाँ ऊपर कोड़। मरणरी वेलाँ मानवी, लेसी कंदोरो तोड़ ॥ भु० ॥ ६ ॥ लखपति छत्रपति सहु गये, गये लाख बे लाख।

गरब करि गोखै बेसता, जल बल होय गई राख ॥ भु० ॥ ७ ॥ म्हाँरो रे म्हाँरो कर रह्यो, थाँरो नहीं रे लिगार। कुण थांरो तूं केहनो, जोवो हिवड़ै विचार ॥ भु० ॥ ८ ॥ महम्मद कहै समजो सहु। सम्बल लेजोरे साथ। आपणो लाभ उवारियै, लेखो साहिब हाथ ॥ भु० ॥ ९ ॥

ढाल २ जी।

मानन कीजेरे मानवी, माने ज्ञान विनाश। ध्यान न पायो रे धर्मनो, मरने दुर्गति जाय ॥ ॥ मा० ॥ १ ॥ जे नर महिलां में पोढता, करता भोग विलास, ते नर मरने माटी थया, ऊपर ऊगो छै घास ॥ मा० ॥ २ ॥ जे नर रुच २ बांधता, शालु कसुमल पाघ, ते नर मरिने माटी थया, भांड़ा घड़ै रे कुम्हार ॥ मा० ॥ ३ ॥ जे नर सुख में बिराजता, बागुलता मुख पान, ते नर पोढ्या छे आग में, काया काजल समान ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ चौसठ सहस्र अंतेउरी, पायक

छिन्नु जी कोड़, ते नर अँते अकेलड़ो, चाल्यो छै सहु ऋद्ध छोड़ ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे नर छत्र धरावता, चमर विझंता जी सार, ते नर पोढ्या छे काठ में, ऊपर डांगां की मार ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे नर दीपक करी पोढ़ता, फूलड़ां सेज बिछाय, ते नर अटवी मांहे पोढ़िया, चांचां मारै रे काग ॥ मा० ॥७॥ यादवपति सरिखा जी चल गया, जोवो कृष्ण नरेश, बन कशुंबी में एकलो, हणायो बाण सूं जेम ॥ मा० ॥ ८ ॥ दोढ़ा दोढ़ा रे चालता, निरखता वलि छांय, पहिले पोहरे दिठा हुंता, छेले दीसैजी नांय ॥ मा० ॥ ६ ॥ कहता म्हांसूं जी कुण अड़े, म्हे काढां करड़ा नी वांका, मगज मांहें मावता नहीं, ते तो होय गया रांक ॥ मा० ॥ १० ॥ गरीब लोकां ने खोसता, डरता प्रभुजी से नांय, रावले रोक्या रे दुख पड़े, सोच करे मन मांय ॥ मा० ॥ ११ ॥ घर मंदिर यूंही रह्या, साथे पुण्य ने पाप, कुटुम्ब काज कर्म्म बांधिया, भोगवे एकलो आप ॥ मा० ॥ १२ ॥ धर्म विहुणी रे जे

घड़ी, निश्चय निष्फल जाय, ओछा जीतव रे कारणे, मूढ रह्यो ललचाय ॥ मा० ॥ १३ ॥ नोबत घुरती जी बारणे, सरणाई शंख भेर, काल तिहांने जी ले गयो, नहीं कोई लावे जी घेर ॥ मा० ॥ १४ ॥ धमण धमंती जी रह गई, बुझ जई लाल अंगार। एरण ठमको जी मिट गयो, उठ चल्यो जी लोहार ॥ मा० ॥ १५ ॥ सिरख पथरणा में पोढ़ता, तेल फुलेल लगाय। एक दिन इसड़ी बणी, कुत्ता काग जे खाय ॥ मा० ॥ १६ ॥ तन सराय में वासो करी, जीव साथे सुख चैन। श्वास नगारा जी कूचरा, बाजत है दिन रैन ॥ मा० ॥ १७ ॥ परजाली ने पाछा फिया, कुंकुं वर्णी जी देह। जलमें पैश सींचो लियो, धृग २ कारमुं सनेह ॥ मा० ॥ १८ ॥ मानी नर मानी थया, देता नारकी नींव। इम जाणी धर्म आदरे, ते तो पुण्यवंत जीव ॥ मा० ॥ १९ ॥ निर्लोभी निरलालची, छः कायरा रक्षपाल। त्यांरी परतीत आणज्यो, छोडो आल जंजाल ॥ मा० ॥ २० ॥

सद्गुरु सांशारे टालसी, जोवो सुबुद्ध नरेश ॥ साधु श्रावक ब्रत पालज्यो, हुवै मुगति प्रवेश ॥ मा० ॥ २१ ॥ कुगुरु कुमारग घालसी, मत पतीजज्यो त्यांय। हिंसा धर्म्म करायने, मेलसे नारकी मांय ॥ २२ ॥ तिहां कोई आडो नहीं आवसी, जी जी जपसे तिवार। मारसे हेलो रे एकलो, छेदन भेदन मार ॥ मा० ॥ २३ ॥ अनंत भूख तृषा सही, शीत ताप दुःख घोर। धरती करवत सारखी, वेदन कठिन कठोर ॥ मा० ॥२४॥ पांच पच्चीस बाकी रह्या, हिंसा झूठ अदत्त। मांस मद्य परनारना, लागा दोष अनंत ॥ मा० ॥ २५ ॥ देव दुंलाला जी आवसी, करता लोचन लाल। देख्यां जीवड़ो रे कांपसी, मारसी मुद्गल झाल ॥ मा० ॥ २६ ॥ हसतां कर्म्मज बांधिया, रोयां छूटेजी नांय। सतगुरु देवे रे चेतावणी, चेतो चतुर सुजाण ॥ मा० ॥ २७ ॥ पड़दे रहती जी पद्मणी, सजती नित शृङ्गार। आखर उतस्या जी धर्म्मरा, त्यांरे घर २ री पणिहार ॥ मा० ॥ २८ ॥ चिहुं

दिश हुंडीजी चालती, हींडंता हिंडोले जी खाट। पुण्य रो संचय पूरो हुवो, त्यांरे कवड़ी मांगेजी हाट ॥ मा० ॥ २६ ॥ आगे जाचक ओ लगे, अवल वड़ो असवार। अत्थविण तिथिरे प्रगटिया, आणे इंधन बार ॥ मा० ॥ ३० ॥ राज तेज ऋद्ध कुटुम्बरा, कांसु करो रे अहंकार। मेलो मंडियो छै कारमो, विछड़ंता नहीं वार ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पृथ्वी पाणी अगन में, वायु वनस्पति त्रसकाय। इण रक्षा धर्म ऊपजे, दुःख दारिद्र मिट जाय ॥ मा० ॥ ३२ ॥ परनारी संग परिहरो, क्रोध तजो दुखदाय। चोरी छोड्यां सम्पति मिले, सांच बोल्यां सुख थाय ॥ मा० ॥ ३३ ॥ तृष्णा तोड़ो जी पापणी, बात करो संतोष। निंदा मकरो रे पारकी, टालो आतम दोष ॥ मा० ॥ ३४ ॥ कूड़ कपट त्याग ने, ध्यान धरो जी नवकार। रात्रि भोजन परिहरो, ज्यूं होसी जीवरो उद्धार ॥ मा० ॥ ३५ ॥ शीलव्रत संजम आदरो, निर्मल राखो रे मन, पुंजी छोड़े जी घर तणी, तेहने कहिये धन

॥ मा० ॥ ३६ ॥ ए गुण धार्यां जी सुख लहे, पावे मोक्ष प्रधान। देवलोक मांहिं वासो मिले, देखो नवतत्व ज्ञान ॥ मा० ॥ ३७ ॥ तिहां पिण सुख जे सुर तणा, रत्नजड़ित आवास। गहणा गांठा जी नया नया, अधिकी जोत प्रकाश ॥ मा० ॥ ३८ ॥ सामायिक ने पोसा करो, सद्गुरुरो सुणो रे बखाण। प्रतीते धर्म पालजो, तो पर भव अमर विमाण ॥ मा० ॥ ३९ ॥ शीयल व्रत संजम आदरो, निश्चो धरो मन मांय। ज्यूं सुख पामो जी शाश्वता, चित्ते चितवोजी ज्ञान ॥ मा० ॥ ४० ॥ संवत् अठारे गुण्यासीये, जोड़ी मन शुद्ध धार। वीर प्रभुजी इम कहै, छोड़ो आल जंजाल ॥ मान न कीजे रे मानवी ॥ ४१ ॥

कर्म सज्झाय।

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरिहर नरवर सबला। कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, सबल

हुवा महा निबला रे। प्राणी कर्म समो नहीं कोई ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ आदीश्वर जी ने कर्म अटाख्या, वर्ष दिवस रह्या भूखा। बीर ने बारह बरस दुःख दीधा, उपना ब्राह्मणी कूखारे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ बत्तीस संहस देशांरो साहिब, चक्री सनत्कुमार। सोलह रोग शरीरमें उपना, कर्म कियो तनु छार रे ॥ ३ ॥ साठ सहंस सुत माख्या एकण दिन, जोध जवान नर जैसा। सगर हुवो महा पुत्र नो दुखियो, कर्म तणा फल ऐसा रे ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरिचन्दने, बेची सु·तारा राणी। बारह वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणी रे ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजानी बेटी, चावी चन्दन बाला। चौपद ज्यूं चौहटे में बेची, कर्म तणा ए चाला रे ॥ ६ ॥ सम्भूम नामे आठमो चक्री, कर्मां सायर न्हाख्यो। सोलह सहंस यक्ष ऊभा देखै, पिण किणही नवि राख्यो रे, ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्मां कीधो आंधो। इम जाणी प्राणी थे कांई, कर्म

कोई मति बांधोरे ॥ ८ ॥ छप्पन क्रोड़ यादव नो साहिब, कृष्ण महाबली जाणी। अटवी मांही मुवो एकलड़ो, बिलबिलतो बिन पाणी रे ॥ ६ ॥ पंडव पांच महा जूझारा, हारी द्रौपदी नारी। बारह बरस लग वन रड़बड़िया, भमिया जेम भिखारी रे ॥ १० ॥ बीस भुजा दश मस्तक हूंता, लक्ष्मण रावण मार्यो। एकलड़े नर सहु जग जीत्यो, ते पिण कर्मां सूं हार्यो रे ॥ ११ ॥ लक्ष्मण राम महा बलवन्ता, अरु सतवन्ती सीता। कर्म प्रमाणे सुख दुख पाम्या, बीतक बहुतसा बीता रे ॥ १२ ॥ सम्यक्त्व धारी श्रेणिक राजा, बेटे बान्ध्यो मुसका। धर्मी नरने कर्मां धकायो, कर्मां सूं जोर न किसका रे ॥ १३ ॥ सती शिरोमणी द्रौपदी कहिये, जिण सम अवर न कोई। पांच पुरुषां नी हुई ते नारी, पूरव कर्म कमाई रे ॥ १४ ॥ आभा नगरी नो जे स्वामी, चावो राजा चन्द। मांई माता कीधो कूकड़ो, कर्मां न्हाख्यो ते फन्द रे ॥ १५ ॥ ईश्वर देव

पारबती नारी, कर्त्ता पुरुष कहावे। अह निशि महल मशाण में वासो, भिक्षा भोजन खावे रे॥ १६॥ सहंस किरण सूरज परितापी, रात दिवस रहे अटतो। सोलह कला शशिधर जग चाहवो, दिन दिन जावे घटतो रे॥ १७॥ इम अनेक खण्ड्या नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा। ऋद्धि हर्ष कर जोड़िने विनवे, नमो नमो कर्म महाराजा रे॥ १८॥

शान्तिनाथ प्रभुजी का स्तवन।

शान्त प्रभुजीरो कीजे जाप, कोड़ भवांरा काटे पाप। शान्त जिणेश्वर मोटा देव, सुर नर सारे ज्यांरी सेव॥ १॥ दुःख दालिद्र जावे दूर, सुख संपत्त पांमे भरपूर। ठग फासीगर जावे भाग, बलती हुवे शीतल आग॥ २॥ राज-लोक में महिमा घणी, शान्त जिनेश्वर माथे धणी। जे ध्यावे प्रभुजीरो ध्यान, राजा देवे अधिको मान

॥ ३ ॥ ग्रह गोचर पिड़ा टल जाय, दोषी दुशमन लागे पाय। सगलो भांगे मनको भरम, समकित पामी काटे करम ॥ ४ ॥ सुणो प्रभुजी मांहरी अरदास, हूं सेवग थें पूरवो आश। मारा मनरा चिंत्या कारज करो, चिंता अरथ विघनज हरो ॥ ५ ॥ मेटो प्रभुजी म्हांरा आल जंजाल, प्रभुजी मुझने नैन निहाल। आपरी कीरत ठामो ठाम, प्रभुजी सुधारो म्हारो काम ॥ ६ ॥ जे नर नित्य प्रभुजीने रटे, मोत्यां बंध सम फूला कटे। चोब लावण दोनूं झड़ जाय, विना औषध कट जावे छाय ॥ ७ ॥ प्रभुजीरा नाम थी आंख्या निरमल थाय, धुंध पड़ल जाला कट जाय। कवल्यो पिलीयो झड़ झड़ पड़े, शान्त जिनेश्वर साता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याध मिटावे रोग, सेण मिंतररो मिले संजोग। इसड़ो देव न दीसे और, नहीं चाले दुशमणरो जोर ॥ ९ ॥ लूटेरा सब जावे नास, दुरजन फिटी हुवे दास। शान्त प्रभुरी महिमा घणी, किरपा कीजो तीन भुवनरा धणी ॥ १० ॥

अरज करूंछूं जोड़ी हाथ, थां छानी नहीं दूजी बात। दूर रहीयाछो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हांरा पाप ॥ ११ ॥ म्हांरा मनरा चाव्या कीजे काज, राखो प्रभुजी म्हांरी लाज। थां समान जुगमें नहीं कोय, थांने सिमर्यां सुख सम्पत्त होय ॥ १२ ॥ थां आगे न चाले मृगीरो जोर, ताव तेजरो नांखे तोड़। मरी मिटाईदो कर द्यो शान्त, तुम गुणां रो नहीं आवे अंत ॥१३॥ तुमने सिमरे साधु सती, थांने सिमरे जोगी जती। संकट काटो राखो मान, अविचल पदवी आपो थान ॥ १४ ॥ समत अठारे चोराणवे जाण, देश मालवो इधक बखाण। शहर जावलो चेतरे मास। हूं छूं प्रभु चरणारो दास ॥ १५ ॥ ऋष रुघनाथ बणायो छंद, काटो प्रभुजी म्हांरा करमारा फंद। जोय र्ह्योछूं आपरी बाट, मनकी सगली चिंता काट ॥ १६ ॥

पूज्य श्रीलालजी महाराजकी लावणी

श्री हुकम मुनि महाराज हुवे बड़भागी। महाराज किया उद्धार कराया जी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दीपायाजी ॥ टेर ॥ उगणी सै छब्बीसे टोंक शहर के माहीं। महाराज पूज्यका जनम जो थाया जी। है ओस वंश वंब जिन कुल धन धन कहलाया जी। चुनीलालजी पिता हरष बहु पाये, महाराज सबको अधिक सुहायाजी। धन्य चांद कुंवरजी मात जिन्होंने गोद खिलाया जी (उडावणी) है क्या बालपणा में सूरत मोहनगरी। जो देखे जिस कूं लागे अतिही प्यारी। है छोटी वयमें संगत साधांकी धारी। शुद्ध सरधा पामी मिथ्या मतको टारी। महाराज जैन का भक्त कहाया जी ॥ शिवलाल० ॥ १ ॥ फिर कीवी सगाई मात और भाई ने, महाराज नार सुन्दर परणायाजी। है मान कुंवरिजी नाम रूप गुण सम्पन्न पायाजी। फिर थोड़ा दिनोंमें चढ़ा अतुल

वैरागे, महाराज संजम लेवा चित चायाजी। नहिं दीनी आज्ञा मात भैरव साधूको गायाजी (उडावणी) उगणीसे वीसदूणा जो चार सालमें। मुनि दीक्षा लीधी कोटेके साधनाल में। सब तजा जगत नहिं आये मोह जाल में। नहीं लगा दिल आचार उनकी चालमें। महाराज फेर चौथ मुनि पैं आयाजी ॥ शिवलाल० ॥ २ ॥ उगणीसै सैंतालीस साल महा सुखदाई, महाराज चौथपैं दीक्षा पाईजी। मुनि वृद्धिचन्दजी नेसराय शिक्षा सदगुरु फुरमाई जी। फिर संजम क्रिया पाले दिन २ चढ़ते, महाराज सूत्र को ज्ञान सिखाईजी। बहु बोल थोकड़ा सीख बुद्धि अधकी दिखलाई जी (उडावणी) अठारे वरस उमर में तज घर बारे, नहीं ममता किससें तजा सर्व संसारे, बहु संजम किरिया पाले शुद्ध आचारे, वे पंच महाव्रत मेरु सम सिर धारे। महाराज भव्य जीवां मन भायाजी ॥ शिवलाल० ॥ ३ ॥ फिर केई बरसां लग ज्ञान गुरांसे लीना। महाराज साल सो बावन

जाणोजी। क्या कातिक सुदीके मांह, शहर रतलाम पिछाणोजी। मुनि विनय वैयावच्च कर साता उपजाई। महाराज पूज्य मनं अति हर-षाणोजी! हे लेवो पूज्य पद आज स्वयं मुख इम फुरमाणोजी (उड़ावणी) जब गुरु आग्रहसें पूज पद मुनि लीनो। पूज मस्तक हाथ रख हित उपदेश बहु दीनो। मुनि शुद्ध भावसों अमृत सम रस भीनो। चारों संघ सन्मुख भोलावण बहु दीनो; महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधायाजी ॥ शिवला० ॥ ४ ॥ मुनि सम भाव शांति मूरत है प्यारी। महाराज सम्पगुण अधको पायाजी। ये भक्तबच्छल मुनिराज सबकों अधिक सुहायाजी। रतलाम शहर चौमासो पूरण करके महाराज फिर इन्दौर सिधायाजी। कई ग्राम नगर पुर विचर बहु उपकार करायाजी (उडावणी) मुनि जहां जावे तहां लागै सबको प्यारे। क्या अमृत वाणी मूरति मोहन गारे। मुनि जहां विचरै जहां करै बहुत उपकारे। तपस्या सामाइक पोषध व्रत बहु धारे, महाराज भव्य मन

बहु हुलसायाजी॥ शिव० ॥ ५ ॥ फेर साल अठा-
वन नये शहर पधाख्या महाराज जहां मैं दरशण
पायाजी, काईं रोम २ हरषाय, हिया मेरा उम-
टायाजी। उस वखत थी मेरे मनमें गुण कथ गाऊं,
महाराज दिल मेरा ललचायाजी पिण थिरता नहीं
थी जिसमें नहीं कुछ गुणकथ गायाजी (उड़ावणी)
अव दीनदयाल दया निधि तुम हो मेरे, अब रखो
हमारी लाज शरण हूं तेरे। कृपाकर काटो लख
चौरासी फेरे। दरशन कर पीछा आया फिर
अजमेरे महाराज मनमें बहु पछतायाजी ॥ शिव०
॥ ६ ॥ अठावने साल जोधाणे चौमासो कीनो,
महाराज धर्मका ठाठ लगायाजी, उमराव मुसद्दी
लोग वचन सुण बहु हरषायाजी, जहां बहु त्याग
पच्चक्खाण खन्ध हुवा भारी महाराज जैनका
धर्म दीपायाजी। अमृत सम वाणी सुणकै बहु
जीव सरधा लायाजी (उड़ावणी) फिर साल एक
कम साठ बीकाणे चौमासो। श्रावक श्राविका
धर्म्म ध्यान किया खासो, तपस्याका नहीं था पार,

झूठ नहीं मासो। स्वमति परमति सुण बचन हुवा हुलासो, महाराज भव्य जीव केइ समझायाजी॥ शिवला०॥७॥ फिर साल साठके उदयपुर चौमासो, महाराज मुलक मेवाड़ कहायाजी, जहां लगन धर्मकी बहुत जिन बचना चितलायाजी। जहां राज मुसद्दी अहलकार केई आये, महाराज दरशन कर प्रसन्न थायाजी। फिर दिया खूब उपदेश जैन झण्डा फररायाजी (उड़ावणी) फिर साल इकसठै टोंक चौमासो ठायो। जहां हुआ बहुत उपकार कै आनन्द पायो। सब श्रावक श्राविका धर्म्मकरण हुलसायो। बहु हुआ त्याग पच्चक्खाण सर्व मन भायो। महाराज जन्मभूमि कहलायाजी॥ शिव०॥८॥ फिर साल बासठै जोधाणै चौमासो, महाराज दूसरी वार करायोजी। यह वचन अमोलक सुनकै भव्य जीव बहु हरषायोजी। जहां दया सामायक हुआ बहुत सा पोसा। महाराज खंध कितना ही उठायोजी। तपस्या सम्बर नहीं पार भविक मन बहु लोभायोजी (उड़ावणी) फेर

स्वमति परमति प्रश्न पूछणकूं आवै। बहु हेत जुगत भिन्न २ करके समभावै। वलि नय निक्षेप प्रमाण जो खूब बतावै। नहीं पक्षपातका काम है सरल सभावै। महाराज वचन सुण सब हुलसायाजी ॥ शिवलाल ॥ ६ ॥ फिर साल तेसठे रतलाम आप पधारे। महाराज श्रावक श्राविका मन भायाजी। की चौमासेकी अरज पूज्यसें आण मनायाजी। ये वचन पूज्यका अमृत सम नित वरसै, महाराज सुणन सहु मन ललचायाजी। दीवान मुसद्दी और राज अहलकार केई आयाजी (उड़ावणी) जहां मुसलमान केई वखाण सुणवा आये। उपदेश पूज्यका सुणकर बहु हरषाये। जहां मद्य मांसका त्याग किया शुद्ध भावै। फिर ठाकुर पचेडे काकूं शिकार छुडाये महाराज जैन पर भावक थायाजी ॥ शिवला० ॥ १० ॥ फिर कर चौमासो भाणपुरे पधारे। महाराज भव्य जीव बहु हरषायाजी। एक ठाकुरकों समभाय वध दसेरा वचायाजी। फिर केइ जाल मछ्यांका बन्द

करवाये। महाराज अतिशय गुण अधिका पायाजी। कांई सूरत देख दिल मस्त हुवै धर्म चित लायाजी। (उड़ावणी) जो बखाण सुणवा एक बार कोई जावै। फिर नहीं कहणेका काम, तुरत चल आवै। उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावै। करे आपसुं पच्चक्खान त्याग मन भावै। महाराज आपका गुण बहु छायाजी॥ शिवला० ॥ ११ ॥ फिर कोटेसे अजमेर जो आप पधारे महाराज नवठाणें से आयाजी। बहु हाव भावके साथ चौमासो जाण मनायाजी। अजमेर पधाख्या सुणके झट मैं आया। महाराज दरशन कर प्रसन्न थायाजी। हुवो हरष हिये उल्लास जोड़ कथ गुण मैं गायाजी (उड़ावणी) कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी। अजमेर लावणी जोड़के गाई खासी। चौसठ साल आषाढ़ एकम सुदि भासी। सब श्रावक श्राविका सुणके हुआ हुलासी। महाराज पूज्यका जश सवायाजी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दीपाया जी ॥ १२ ॥ ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

पूज्यश्रीश्री १००८ श्रीलालजी महाराज का स्तवन ।

म्हारा पूज्य परम उपगारी मुझने तारजोजी, श्री श्रीलाल मुनी परवारी पार उतारजोजी ॥ ए टेर ॥ जन्म्या टोंक नगर मंझारी, ज्यांरी चांद कवर महतारी । पिता चुन्नीलाल अवतारी, दीक्षा चौमालीस में धारी, मुझने तारजोजी० ॥ १ ॥ प्रथम हुकम मुनी अवतारी, और शिवलाल उदे-चन्द भारी । चौथा चोथमलजी गुणधारी, अब तो कीर्ति पसरी थांरी, मुझने तारजोजी म्हारा० ॥२॥ आप तो पञ्चम पाट विराजो, बैठ सभा में सिंह ज्यूं गाजो । आचारज पदवी पर छाजो, करुणा सागर कृपा सिन्धु मुझने तारजो जी म्हारा० ॥३॥ म्हे तो दरशण कर सुख पाया, म्हे तो वाणी सुणि हर्षाया । म्हे तो हर्ष हर्ष हर्षाया, आपरे चरणां शीश नमाया, मुझने० ॥ ४ ॥ अब तो मालव देश पधारो, और मेवाड़ देश ने तारो । म्हारी

बीनतीड़ी अवधारो, म्हे तो सदा दास चरणारो, मुझने० ॥ ५ ॥ म्हे तो शहर जोधाणे आया, सम्वत सीतर में सुख पाया । कातिक सुद पुनम गुण गाया, केवे जोधकरण चरणारो चाकर, मुझने० ॥ ६ ॥

अथ श्री कर्मचन्दजी स्वामी कृत ध्यान ।

प्रथम पद्म आशण थिर करी, पछै मन थिर करी, विषे कषाय थकी, चितनी लहर मिटायने, अन्तः करण में इम ध्यावणो । नमस्कार थावो श्री अरिहन्त भगवान ने ते अरिहन्तजी केहवा छै —सुरासुर सेवित, चरण कमल सर्वज्ञ, भगवन्त जगन्नाथ जग जीवां ना तारक, कुगत मारग निवारण, निर्वाण मारग पमाड़ण, निराह निरहंकार, निसंग निर्मम, शान्त दान्त करुणा समुद्र, विशोच उपगार सागर । अनन्त ज्ञान दर्शण चारित्र

गुणना आगार, एक सहस्त्र अष्ट लक्षण ना धरण हार, चौतीस अतिशय, पैंतीस वाणी गुण सहित, समुद्र नी परै गम्भीर, मेरू नी परै धीर, चन्द्रमा जिसा निर्मला, सूर्य्य सरिषा तप तेजवन्त, किम बहुना धर्मना मुर्त्ति, एहवा प्रभु निर्मल जोग मुद्रा साधी, सकल कर्म खपाई सर्व कारज साधी सिद्ध थया ते सिद्ध महाराज केहवा छै—सकल कर्म बन्ध रहित थई, ते महा कलकलिभूत संसार ना जन्म मरण, रोग सोग चिन्ता शरीर माणसिक दुःख थकी छूटा काम कषाय रूप अग्नि वैराग्य उपशाम जल स्यूं उलहवी ने शीतली भूत थया निर्मल अक्षय अजर अमर परमानन्द प्राप्त थया। अनन्त केवल ज्ञान १ केवल दर्शण २ आत्मिक सुख ३ क्षायक सम्यक्त ४ अटल अवगाहणा ५ अमूर्त्ति भाव ६ अगुरु लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८ ए आठ गुण सहित सिद्धजी लोकालोक नो सरूप देखी रह्या छै परम सुखी थया छै त्यां सिद्धजी महाराज ने, म्हांरो नमस्कार थावो।

रे जीव जेहवो सिद्ध परमात्मानो सरूप छै। तेहवो तांहरो चेतानन्द नो सरूप सता में छै, रे चेतानन्द तांहरो सरूप कर्मा अछंद्यो छै, मोहने उदय मलीन होय रह्यो छै, निज सरूप भूलि पर सरूप में रम रह्यो छै। क्रोध में, मान में, माया में, लोभ में, राग में, द्वेष में, हास्य रति अरति भय सोग दुगंछा बद बिकार में बरत रह्यो छै, कर्म बशो नरकादिक च्यार गति, चौरासी लाख जीवा जोनी में कुम्भारना चाकनी परै परिभ्रमण करि रह्यो छै। भूख तृषा शीत ताप हर्ष सोग ऊंच नीचपणो पामी रह्यो छे चवदे राज लोक में जन्म मरण करि पूरि रह्यो छै (गाथा) न सा जाई न सा जोणी न तं ठाणं नतं कुलं न जाया न मूवा जत्थ सवे जीवा अनन्त सौ।

रे जीव तूं हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह जाव मिथ्या दरशन सल्य ए सेवी पाप उपारजी आत्मा भारी करी नरके गयो, ते नर्क केहवी छै महा घोर रुद्र अन्धकार सहित बिहामणी छै, तिहां वेदना

केहवी भोगवी—नर्क पाल परमाधामी कुम्भी में पचाव्यो जल रहित चिता में होमव्यो भोभर में भाड़व्यौ चिणा नी परै सेकव्यौ अग्नि बर्णो लोह रथ झूंसरो कांधै देइ माखो, अग्नि वर्णी धरती ऊपरे भालां स्यूं भेदि चलाव्यौ जन्त्र में पिलाव्यौ मुद्गरे कुटि चूर्ण कीधो अग्नि वर्णी लोह पूतली आलिंगन करावी खाल उतारि खार सिचाव्यो शूली अग्रे पोयो सूयांनी सेज्यां में सुवाय ने रोलव्यो करवत चाढ्यो निबिड़ बन्धन बांधि वृक्षे लटकाव्यो एहवी पत्र वेदना उपजावी वैतरणी नदी नो पाणी ताता तरुवा सरिषो तिणमें न्हांख्यो कलकलतो मुंह फाड़ि पाव्यो नर्क पाल स्वान रूप करि जीर्ण बस्त्र नो परै फाड्यो सिंह रूप करि बिदाख्यो हस्ति रूप चरण करि मर्यो सर्प रूप करि चिहुं दिश चटक्यो अनन्ती भूख तृषा शीत ताप परबश पणे जघन्य १० हजार बर्ष उत्कृष्टा ३३ सागर एहवी बेदना अनन्ती बार भोगवी बले पृथ्विकाय में गयो तिहां असंख्याता भव किया

असंख्याती अवसर्पिणी उत् सर्पिणी लग खुणीज्यो खूदिज्यो दुख भोगव्या एवं अप्प में तेउ वाउ में बनस्पति में गयो तिहां अनन्ता भव किया सूक्ष्म बादर प्रत्येक साधारण में अनन्ती अवसर्पिणी क्षेत्र थकी अनन्ता लोकाकाश प्रमाणे असंख्याता पुद्गल प्रावर्तना तांई रुल्यौ निगोद में गयो तिहां अंगुल ने संख्यात में भाग मात्र एक शरीर में अनन्ता भेदे अनन्ता जीव रहै छै तिहां रहिने एहवी संकड़ाई भोगवी एक मुहूरत मध्ये ६५००० हजार ५०० सौ ३६ भव करे एहवी जन्म मरण नी वेदना भोगवी छेदन भेदन पामी, वले बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री मे लाखां भव किया अनेक दुःख भोगव्या वले तिर्यञ्च पंचेन्द्री में जलचर थलचर उरपुर भुजपुर खेचर में लाखां भव किया शस्त्र थकी भूखो भूख तृषा बध बन्ध परवशादि अनेक दुःख भोगव्या वली इम रुलते २ घणा कष्टे कदा जो मिनख जन्म पायो तो नो मास तांइ गर्भना दुःख सह्या प्रथम उत्पति समय पिता नो वीर्य

माता नो रुधिर नो आहार लेइने शरीर बांध्यो नीचो मस्तक ऊंचा पग मल मूत्र की दुर्गन्ध संकड़ाई नी भाकसी में रह्यो साढ़े तीन करोड़ रोम २ सूई ताती अग्नि वर्णी एक दिन रा जन्म्या बालक ने रोम रोम में चांपे तेहने वेदना हुवे तेहथी आठ गुणी वेदना गर्भ में वसतां जन्मतां कोड़ गुणी हुवै, एहवी वेदना भोगवी ने जन्म्यो जन्म्यां पछै बाल पणे माता पिता नो बिजोग पड्यो वले जोबन में महा प्राणवल्लभ स्त्री पुत्रादिक नो बिजोग पड्यो इष्ट विजोग अनिष्ट संजोग सह्या वले श्वाश खास जरा दाह अर्श भगन्दरादिक अनेक व्याधिना कष्ट सह्या वले वृद्धपणे अनेक परवश पणे दुःख भोगव्या। रे जीव एहवा दुःख अनेक सहिने भूल गयो रे जीव कदाचित पूर्व पुण्य उपार्जि मिनख भव पाई जोबन पामी गर्भ में छकि रह्यो छै पुद्गलिक सुख में राचि रह्यो छै जिम माखी खेल में लिपटि तिम तूं स्नेह में लिपटि रह्यो छै जीव तूं किणस्यूं स्नेह करे छै तूं केहनो नहीं।

(गाथा) 'पुरसा तुम मेव तुम्मीतं" हे पुरुष तांहरो तूंहीज मित्र छै तूं बाहिर मित्र किणस्यूं बंछे छै. (गाथा) "मितं मीछसी अपाकपावीक्काय" इत्यादिक अहो जीव ए तांहरी आत्मांज कर्मा री कर्त्ता, एहीज भुगतता, एहीज बखेरता, एहीज दुःखनी दाता, एहीज सुखनी दाता, एहीज बैरी, एहीज मित्र, एहीज पर उपकारनी करणहार, तिणस्यूं ज्ञान दर्शन चारित्र सहित आत्मा ऊपर परम प्रतीत राखिये, एह टाली ने किण ही सचित अचित वस्तु ऊपर स्नेह न करिवो (गाथा) "असिणेह सिणेह करहं" जे आपस्यूं स्नेह करे छै, तांहरे त्यां स्यूं पिण निस्नेह पणे रहवो, ए केवली नो वचन छै, वले कह्यो छै (गाथा) "स्नेह पासा भयंकरा" ए स्नेह रूपी पाशा महा भयना करणहार छै, तिणसूं रे जीव ए वीतराग नो वचन बिमासी तूं किणस्यूं ही स्नेह मत कर जगतना सर्व जीवांस्यूं तांहरे पूर्वे एक २ स्यूं अनन्ता २ सगपण किया, इम जाणी राग टालिये रे जीव तूं तांहरा निज गुण निहाल, तांहरा

निज गुण तो ज्ञान दर्शण चारित्रादिक छै, निज गुण सुख टाली बाहिर पुद्गलिक काम भोगना सुख तो अथिर छै, मिनख ना सुख तो असार छै, स्त्री पुरुषनी काया महा अशुचि अपवित्र लोही हाड मांस नो घर मल मूत्रे भर्यो खेल खंखार बमन पितनो आगार अधम अनित्य असामतो सड़न गलन विध्वंसण धर्म खिण भंगुर काची माटीना भाण्डानी परै असार ऊपर शूं राग करे, श्री घनै ऋषेश्वर आद देकर तप-घन सार काढ़ी सिद्ध थया।

रे जीव यह स्त्री संबन्धिया काम भोग अथिर छै, जेह्वो बिजली रो चमत्कार, संभ्यानो बान पतंगनो रंग डाभ अणी जल विन्दुवो अथिर छै, तिम तन धन जोवन अथिर छै (गाथा) "सव्व-बिलम्बीयं गीयं" इत्यादिक सर्व गीत विलापात समान छै, सर्व गहणा ते भार भूत समान छै सर्व नाटक ते बिटंबणा समान छै, सर्व विषय सुख ते दुरगत ना दातार छै, बाल अविवेकी जीव ने रति उपजावण हार छै, ज्यं पाव रोगी ने खाज मीठी

लागै, ज्यूं जीव रे प्रबल मोह उदै छै तेह ने ए काम भोग मीठा लागे छै, वले जेहवो किम्पाक फल, दीसतो सुन्दर सुगन्ध खातां मीठो अमृत सरीषो लागे, पिण मांही परगम्यां जीव काया जुवा २ हुवै, ज्यूं रूड़ा शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श काम भोग स्त्रियादिकना जीव ने सेवतां मीठा लागे, तेहना फल परभव में अत्यन्त कड़वा लागे, ब्रह्मदत्त चक्र-वर्त्तनी परै (ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्त पूर्व भव चारित्र पालने तप करी चक्री सनत कुमार नी ऋद्ध देखीने नियाणो कर्यो बारमों चक्रवर्त्त थयो षट् खंड में आण बरताई, तेहने ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोड़ा, ८४ लाख रथ, ९६ क्रोड़ पायक, २५ हजार देवता, ३२ हजार मुकुट बन्ध राजा सेवा करे नव निधान, १४ रत्न, २० हजार सोने रूपैना आगार ४२ भोमिया देवता ना निपाया रत्न जड़ित म्हैला-यत, १९२००० मनोहर रूपवन्त अन्तेवर पटराणी श्री देवी उत्कृष्टो रूप लावण्य जोबन नी धरणहार परम रति विलासनी उपजावन हार, सर्व ऋतु में

सुखदायनी, तेहनो शरीर स्पर्श्यां रोग उपशमै, एहवा स्त्री-संघाते सुख भोगवी, छः खण्ड नो राज्य भोगवी, सात सौ वर्ष नो आउखो पाली, कर्म उपार्जी सातमी नर्क तेतीस सागर ने आउखे गयो, सात सौ वर्षां में २८ क्रोड़ ५२ क्रोड़ ३८ लाख ८० हजार, श्वास उश्वास लिया, एके की श्वास उश्वास ऊपर नारकी नी मार केहवी, ११ लाख पल, ५३ हजार पल, ६०० सौ पल, २५ पल, एक पल नो तीजो भाग जाझेरो एतली वेदना भोगव्यां एक श्वासोश्वास ने सुखानी कर्मानी फारगति होवै।

रे जीव एहवा खिण मात्रना सुख अनै बहु काल ना दुःख रे जीव तूं देवलोक गयो तिहां एहवा सुख भोगव्या रत्न जड़ित म्हलायत पांच सौ योजन चिहुं दिश बाग महा रलियामणा, हजार सूरज थकी पिण तेज ते म्हलांनो उद्योत घणो, वैक्रिय शरीर महा सुन्दर अद्भुत रूप जोत कांतना धणी, महा शक्तिवन्त इच्छित रूप करवा

समर्थ, पहले देवलोक दोय सागर नो आउखो देवतानो, एक देवता रे आठ देवाङ्गना एकेकी देवी सोलह सोलह हजार महा अद्भुत आश्चर्यकारी ज्योति कान्ति मनोहर भेष लावण्य जोबन नी धरनहार शिणगार नो घर एहवा उतर वैक्रीय रूप बैक्रिय करै, एतला रूप देवता करे ते देवी केतली भोगवे २२ क्रोड़ा क्रोड़ ८५ लाख क्रोड़ ७१ हजार क्रोड़ ४०० सै क्रोड़ २८ क्रोड़ ५७ लाख १४ हजार २८० देवी भोगवै तो पिण तृप्ति न हुवो तो रे जीव ए मिनखनों उदारिक शरीर सम्बन्धी महा सूगला अल्प कालना सुख थी स्यूं तृप्त हुसी। इम ज़ाणी ने रुचि उतारवी।

रे जीव आरज खेत्र उत्तम कुल दीर्घ आउखो पूरी इन्द्री सतगुरांनी संगत वीतराग ना बचना नो सांभलवो वीतराग ना वचन केहवा छै सत्य छै, उत्तम निर्मल निर्दोष सकल कारज नी सिद्धि ना करणहार जन्म मरण ना मिटावण हार एकान्त हितकारी—रे जीव ज्यां लग जरा नहीं रोग नहीं

चक्षु इन्द्रीनो बल हीण न पड़ै त्यां लग धर्म नो ओसर जाणी संजम तप ने विषै पराक्रम फोड़वो ज्यूं परम सुख महासुख पामिये। इसी करणी कौण कीधी श्री धन्नो काकंदीवासी बतीस स्त्रियां छांडी दीक्षा लेई नौ महीनां में वेले २ पारणो पारणे २ आंबिल न्हाखीतो आहार अभिग्रह सहित लियो घणी उत्कृष्टी करणी कीधी नौ मास में तीन क्रोड़ पांच लाख इकसठ हजार तीन सै श्वास उश्वास लेई स्वारथ सिद्ध पहुंता तेतीस सागर ने आउखे एक श्वास उश्वास ऊपर सुख दोय सै क्रोड़ पल सात क्रोड़ पल सताणवे लाख पल छिनमें हजार पल नौ सै पल अट्ठाणमें पल एक पल नो छट्ठो भाग माठेरो एतला सुख पुद्गलिक एकेका श्वास ऊपर भोगवे पिछै मिनख थई मोक्ष जासी ते मोक्षना आत्मिक सुख सदा इक धारा छै एहवा अनन्त आत्मिक सुख साधु पणा थी पामियै।

॥ इति श्री कर्मचन्दजी स्वामी कृत ध्यान ॥

साधु मुनिराजके २२ परीषह।

११ परीषह वेदनी कर्मके—

क्षुधा १ तृषा २ सीत ३ उष्ण ४ डंस मसक ५ चर्या (चालने का) ६ शैय्या (बैठने का) ७ बध (छेदन भेदन का) ८ रोग ९ जलमैल १० तृण स्पर्श ११

२ ज्ञानावरणी के—

अज्ञान (सीखने सूं बोल चढ़े नहीं) १ प्रज्ञा (जाण पणे को अभिमान न करे)

मोहनी के ८—

१ दर्शन मोहनी को—

दर्शन (वीतराग प्ररूपित धर्म सच्चा जानें) १

७ चारित्र मोहनी के—

अरति (धर्म में राजी रहै अरतिपणो न लावै) १ अचेल (वस्त्र मोटो मिलै अथवा नहीं मिले तो सम भाव रक्खे) २ स्त्री (स्त्री देखकर चित्त वश में राखै) ३ निषद्या (ध्यान करतां

विघ्न उपजै तेहने खमै) ४ याचना (नहीं मिलने से सम भाव राखे) ५ आक्रोश (करड़ा वचन कहै तो समभावे सहन करै) ६ सत्कार पुरस्कार (आदरमान विनय करै उसका मद नहीं करै) ७

१ अन्तराय को—

अलाभ (नहीं मिलने से सन्तोष राखे) १

अथ इग्यारे गणधरांको स्तवन।

श्री इन्द्रभुतीजीरो लीजे नाम, तो मन वंछित सीझे काम। मोटा लब्ध तणा भण्डार, वन्दू इग्यारे गणधार ॥ १ ॥ अगनभुती गौतमजीरा भाई, वीरजी ने दीठां समता आई। ऋद्धि त्याग लियो संजम भार ॥ वां० ॥ २ ॥ वायभूती मोटा मुनि-राय, ए तीनूं ही सग्गा भाय। पांच पांच से निकल्या लार ॥ वां० ॥ ३ ॥ विगत स्वामीजी चौथा

जाणं, भजन क्रियां होय- अमर विमाण। देव लोक सुखरा भिणकार ॥ वां० ॥ ४ ॥ स्वामी सुधर्मा वीरजी रे पाट, जनम मरण सेवगरा काट। मुझने आप तणो आधार ॥ वां० ॥ ५ ॥ मण्डी पुत्रने मोरीज पूत, मुक्त जावणरा कीधा सूत। त्रिविधे त्यागा पाप अढार ॥ वां० ॥ ६ ॥ अकम्पित ने अचलज भ्राता, वीरजीने वचने रह्याज राता। चवदै पूरवना भण्डार ॥ वां० ॥ ७ ॥ मेतारजने श्रीप्रभास, मोक्ष नगर में कीधो वास। जपतां हुवै जयजयकार ॥ वां० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मण जात, चम्पालीसे निकल्या साथ। ज्यां कर दीनो खेवो पार ॥ वां० ॥ ९ ॥ इण नामे सहु आशा फलै, दोषी दुशमन दूरे टलै। ऋद्ध वृद्ध पामे सुखसार ॥ वां० ॥ १० ॥ इण नामे सब न्हासे पाप, नितरो जपिये भवियण जाप। चित्त चोखे हिरदा में धार ॥ वां० ॥ ११ ॥ समत अठारे तयालीसे जाण, पूजं जेमलजीरी अमृत वाण। चौमासे स्तवन कियो पिपाड़ ॥ वां० ॥ १२ ॥ असाढ़ सुद सातम

रे दीन, गणधरजी ने गायो इक मन। आशकरण जी भणे अणगार ॥ वां० ॥ १३ ॥

तपस्वी श्री श्री सिरेमलजी महाराजके गुणों की ढाल।

तपसी श्री श्री सिरेमलजी महाराज, गुणारा भण्डार, क्षम्मां सागर जी ॥ ए आंकड़ी ॥ गांव आपको शहर जसुन्दावाद, दीक्ष्या लीनी चित्त चोखे से, मन में घणो रे वैराग २ ॥ क्ष० ॥ १ ॥ निज कुल धर्म दीपायो आप, बारै महीना २ आडो आसण आप कियो नांय, आंबिल तपस्या करी घणेरी, कहतां न आवै पार २ ॥ क्ष० ॥२॥ उत्कृष्टाई आपकी, जाणै केवल ज्ञान। जैन धर्म दीपायो खूब, आपके गुणा को आवै नहीं पार २ ॥ क्ष० ॥ ३ ॥ सिमरथमलजी पण्डितराज, सूत्र का है जाण। गुणारा भण्डार ॥ क्ष० ॥ ४ ॥ वैरागी सौभाग-

मलजी ने दीख्या आप दीनी शहरे बलुन्दे रे मांही। समत उगणीसै चौणमेरा आखा तीज तिंवार ॥ क्ष० ॥ ५ ॥ कहवै चान्दमल चरणारो चाकर मुझ पर महर करीज्योजी। मैं अज्ञानी कठिन कठोर। छः काया को छेदनहार। सर्व पाप केरा करस्यूं त्याग। वोह दिन होसी म्हारो परम कल्याण ॥ क्ष० ॥ ६ ॥

तेरह ढाल की बड़ी साधु वंदना।

दोहा।

अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमतां कोड़ कल्याण। साधु तणा गुण गायसां, मनमें आनन्द आण ॥ १ ॥ गुण गाऊं गिरुवां तणा, मन मोटे मंडाण। गिरुवा सहजे गुण करे, सीझै बंछित काम ॥ २ ॥ इणहिज अढी द्वीपमें, जयवंता जगदीश। भाव करी बंदना करूं, उच्छुक मन अति लीन ॥ ३ ॥ भाव प्रधान कह्यो तिसै, सबमें भावज जाण। ते भावे सबकूं नमूं, अनन्त चौवीसी नाम ॥ ४ ॥ उठ प्रभात समरो सदा, साधु बंदना सार। गुण गावो मोटा तणा, पाप रोग सब जात ॥ ५ ॥

ढाल १ ली।

॥ चाल चौपाईनी ॥

पंच भरत पंच ऐरव जाण, पंच महाबिदेह

बखाण। जेह अनंत हुआ अरिहंत, कर जोड़ी प्रणमूं ते संत ॥ १ ॥ जे हिवड़ां विचरै जिन चन्द, क्षेत्र बिदेह सदा सुखकन्द। कर जोड़ी प्रणमूं तसु पाय, आरत बिघन सहु टल जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनन्ता पनरै भेद, ते प्रणमूं मन धरिय उमेद। आचारज प्रणमूं गणधार, श्री उवज्झाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सदा प्रणमूं केवली, काल अनादि अनंत बली। जे हिवड़ां बिचरै गुणवंत, साधु साधवी सहु भगवंत ॥ ४ ॥ ते सहु पणमूं मन उल्लास, अरिहंत सिद्ध नै साधु प्रकाश। साधु बंदना करूं हितकार, ते सांभलज्यो सहु नरनार ॥ ५ ॥

दोहा।

इणही जम्बू द्वीप में, भरतज नामे क्षेत्र। जिनवर वचन लही करी, निरमल कीधा नेत्र ॥ ॥ १ ॥ तिहां चौबीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर। पूर्व भव करी प्रणमिये, पामीजै भव

तीर ॥ २ ॥ पूर्वभव चक्रवर्त्त थया, ऋषभ देव निरभीक। अजितादिक तेवीस जिण, राजा सहु मंडलीक ॥ ३ ॥ व्रत लेई पूरव चवदै, ऋषभ भण्या मनरंग। पूरव भव तेवीस जिन, भण्या इग्यारै अंग ॥ ४ ॥ वीस स्थानक तिहां सेविया, बीजै भव सुर राय। तिहां थी चवि चौवीस जिण, ते हुवा प्रणमूं पाय ॥ ५ ॥

ढाल २ जी।

॥ नमणी खमणी एदेशी ॥

श्री चक्रवर्त्त पूरव भव जाण, वैरनाभ तिहां नाम वखाण। ऋषभ देव प्रणमूं जग भाण, गुण गावतां हुवै जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ विमराई पूर्व भव नाम, अजित जणेसर करूं प्रणाम। विमल-वाहन पूर्व भव राय, श्री संभव प्रणमूं चित्त लाय ॥ २ ॥ पूर्व भव धर्मसी राजान, अभिनंदन प्रणमूं शुभ ध्यान। पूरव भव थया सुमत प्रसिद्ध, सुमत जिणेश्वर प्रणमूं सिद्ध ॥ ३ ॥ पूर्व भव

राजा धर्ममित, पद्म प्रभुजी नै वांदूं नित्त। पूर्व भव जे सुन्दर वाहु. तेह सुपास प्रणमूं जग नाहु ॥ ४ ॥ पूर्व भव द्रगवाहु मुनीश, चंद्र प्रभु प्रणमूं निशदीस। जुगवाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं सुविध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लहुबाहु पूर्वभव जास, श्री शीतल प्रणमूं हुलास। दीन राई कुल तिलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥ इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवंत, वासुपूज्य बांदूं भगवंत। पूर्वभव सुन्दर बडभाग, बांदूं विमल धरी मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्द, तेह अनंत जिन प्रणमूं सुखकंद। साधु शिरोमण सिंहरथ राय, धर्मनाथ बांदूं चित्तलाय ॥ ८ ॥ पूर्वभव मेघरथ गुण गाऊं, शान्तिनाथ जिनवर चितलाऊं। पूरवभव रूपी मुनि कहियै, कुंथुनाथ प्रणम्यां सुख लहियै ॥ ९ ॥ राय सुदर्शण मुनि विख्यात, बांदूं अरजिन त्रिभुवन तात। पूरवभव नन्दन मुनिचंद, ते प्रणमूं श्री मल्लि जिनंद ॥ १० ॥ सिंह गिरि पूरव भव सार,

मुनिसुव्रत जिन जग आधार। अदीनशत्रु मुनि वर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमूं नमिनाथ ॥११॥ शंख नरेसर साधु सुजान, रहनेमी प्रणमूं गुण-खाण। राय सुदर्शण जेह मुनीश, पार्श्वनाथ प्रणमूं निशदीस ॥ १२ ॥ छट्ठे भव पोटिल मुनि जाण, क्रोड़ बरस चारित्र प्रमाण। चौथे भव नन्दन राजान, कर जोड़ी प्रणमूं बर्द्धमान ॥ ॥ १३ ॥ चौवीसे जिनवर भगवंत, ज्ञान दर्शण चारित्र अनंत। वारंवार करूं परणाम, अष्टकर्म क्षय करिवा काम ॥ १४ ॥

दोहा।

मेरु थकी उत्तर दिशें, एहिज जम्बूद्वीप।
ईरव खेत्र सुहामणो, जिण विध मोती सीप ॥१॥
जिहां चौवीसे जिन हुवा, चद्रानन वारिषेण।
एही चौवीसी में सही, ते प्रणमूं समसेण ॥ २ ॥

ढाल ३ जी।

॥ चाल—राग वेलावली ॥

चंद्रानन जिन प्रथम जिनेश्वर, दूजा श्रीसुचंद भगवन्तक। अगियसेण तीजा तीर्थङ्कर, चौथा श्री नन्दसेण अरिहंतक॥ त्रिकर्ण शुद्ध सदा जिन प्रणमूं ॥ १ ॥ ऐरव खेत्र तणारे चौवीसक, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समै जन्म्या जगदीशक ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पंचमा इसिदिण्ण थुणीजै, ववहारी छठा जिनरायक। सौमचंद सातमा जिन समरूं, जुत्तिसेन आठमा सुपसायक ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजियसेण जिन प्रणमूं, दशमा श्री शिवसेण उदारक। देव समा इग्यारमा ध्याऊं, बारमा निक्खित सत्थ सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमा असंजल जिन तारक, चवदमा श्री जिननाथ अनन्तक। पनरमा उपशान्त नमीजै, सोलमां श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सतरमा अतिपास सुणीजै, प्रणमूं

अठारमा श्री सुपासक। उगणीसमा मरुदेव मनोहर, बीसमा श्रीधर प्रणमूं हुलासक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ इकवीसमा समकोठ सुहंकर, बावीसमा प्रणमूं अग्गिसेणक। तेवीसमा अग्गिपुत्त अनोपम, चोवीसमा प्रणमूं बारीषेणक ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ चौथे अङ्ग थकी ए भाष्या, अड़तालीस जिणेसर नामक। छठे अङ्ग कह्या मुनि सुव्रत, सुख बिपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ जिन पचास ए प्रबचन बचने, एम अनंत हुवा अरिहंतक। बहरमान बली जिनवर विचरै, केवली साध सहू भगवंतक ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ सिद्ध थया वले संप्रति बिचरै, कर जोड़ी प्रणमूं तसु पायक। ह्वि जै आगम नाम सुणीजै, ते मुनिवर कहिस्यूं चित्त लायक ॥ त्रि० ॥ १० ॥ प्रथमज जिनवर गणधर समणी, चक्रवर्त्ती हलधर बलि तेहक। पूरब भव तसु नामज गायस्युं, चौथा अङ्ग थकी गुण तेहक ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ चौवीसे जिन तीरथ अंतर, कोड़ असंख्या हुवा मुनि सिद्धक। कर

जोड़ी प्रणमूं ते पोह सम, नाम कहूं हिव जे परसिद्धक ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

ढाल ४ थी।

॥ राग धन्यासरी पदेशी।

पोह सम प्रणमूं ऋषभ जिणेश्वरु, श्री मरुदेवा सिद्ध सुहंकरु। चौरासी गणधार सिरोमणि, उसभ सेण मुनिवर प्रणमूं सुखभणि ॥ १ ॥ ॥ उल्लालो० ॥ सुखभणी प्रणमूं बाहुबल मुनि, सहंस चौरासी मुनि। वीस सहंस प्रणमूं केवली वले, सिद्ध थया त्रिभुवन धणी ॥ तीन लाख समणी धुर नमूं, नित नाम ब्राह्मी सुन्दरी। सहंस चालीसे केवली वले, नमूं श्रमणी चित्त धरी ॥ २ ॥ आरीसै घर भरत नरेसरु, ध्यान बले कर केवल लहे बरु। सहंस दसे संघाती नरपति, विचरे जगमें प्रणमूं शुभ मति ॥ ३ ॥ ॥ ऊ० ॥ शुभ मति जम्बूद्वीप पन्नती वखाणियै, भरतनी परे लहे केवल क्षेत्र इरव जाणिये ॥

वन्दियै चक्री इरवौ मुनि भाव सूं नित मनरली।
हिवै भरत पाटै आठ अनुक्रम वन्दिये नृप केवली
॥ ४ ॥ श्री आईजश महाजश केवली, अइवल
महिवल तेजविरिय वली। कीरतविरिय दंड
विरिय ध्याइयै, जल विरिये मुनि नित गुण गाइयै
॥ ५ ॥ ऊ० ॥ गाइये ठाणा अङ्ग मुनिवर, एह
भाष्या संजती। श्री ऋषभ ने वले अजित अंतर,
हिवै कहूं सुणो शुभ मति। पचास लाख कोड़
सागर, तिहां असंख्या केवली। जे थया मुनिवर
तेह प्रणमूं, अशुभ दुरगति निरदली ॥ ६ ॥
अजित जिनेसर नेउ गणधरू, धुर प्रणमूं सिंहसेण
सुहंकरू। प्रह समे प्रणमूं फग्गु साहुणी, हर्ष सूं
वांदूं सगड़ महामुनि ॥ ७ ॥ ऊ० ॥ महामुनि
सगड़ तीस लाखै, कोड़ अंतर जे थया। केवली
मुनिवर तेह प्रणमूं, दोय कर जोड़ी सया॥ श्री
संभव चारूं मुनिवर, चित सामा ते गुण रमूं।
लाख दशेही कोड सागर, अंतरै सिद्ध सहु नमूं॥
८॥ श्री अभिनन्दन प्रणमूं गणपति, बैरनाभ मुनि

अजिया राणी सती। सागर लाखै नवकोड़ अंतरे, केवली जे थया वन्दिये शुभ परे। शुभ परे सुमत जिणेसर गणधर, चमरकासवि अज्जया। नेऊ सहंस कोड़ सागर, विच नमूं जे सिद्ध थया॥ श्रीपद्म-प्रभु शिष्य नामी, सुव्वय, ऋषि वन्दिये, साहुणी ते रई नामे, प्रणम्यां दुख दूर निकन्दिये॥ १०॥ कोड़ सहंस नव सागर विच वली, प्रणमूं मुनिवर जे थया केवली। श्री सुपास विदर्भ गुणदधि प्रणमूं सोमा समणी गुण निधि॥ ११॥ ऊ०॥ गुण निधि नवसे कोड़ सागर, अंतरै जे केवली। तेह प्रणमूं भाव स्यूं ए, दुःख जावै सहु टली॥ श्रीचन्द्र प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये। नेऊ सागर कोड़ अंतरै, केवली गुण गाइये॥१२॥

ढाल ५ मी।

॥ सफल संसार अवतार ए हूं गिणूं—एदेशी॥

सुवध जिणेश मुनिवरा ए, साहुणी वन्दिये चित्त उछाह ए। अंतरो कोड़ नव सागर सहु

जिहां, कालिक सूत्रनो बोह भाखी तिहां ॥ १ ॥
स्वामी शीतल जिन साध आनन्द ए, सती
सुलसा नमूं चित्त आनन्द ए। एक सागर कोड़
तणो अंतरो कह्यो, एकसौ सागर ऊणो कर
संग्रह्यो ॥ २ ॥ सहंस छाबीस छ्यासठ लाख
ऊपरै, कालिक सूत्र नो छेद इण अंतरै। श्रीश्रेयांस
मुनि गोथुभ ध्याइये, धारणी साहुणी वले चरण
चित्त लाइये ॥ ३ ॥ पूर्व भव गुरु कहूं साधु
संभूत ए, विश्वनन्दी बले सुगुण संयुत ए।
अचल मुनिवर नमूं पढम हलवरा ए, बंधन
त्रिपृष्ट केशव सिरधरा ए ॥ ४ ॥ चौपन सागर
बिच थया केवली, बन्दियै सूत्रनो बोह भाख्यो
वली। इम विछेद बिच सात जिण अन्तरै,
जाणिये शान्ति जिनवर लग इण परे ॥ ५ ॥
स्वामी वासुपूज्य जिन साधु सुधर्मधर, साहुणी
वले जिहां धरणि उपद्रव हर। सुगुरु सुभद्र सु
बंधव बखाणिये, बिजै मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि
जाणिये ॥ ६ ॥ तीस सागर बिच अन्तरे जे

थया, केवली वंदिये भाव भगते सया। विमल जिन वन्दिये साध सिमन्धर वली, समणी धरणी धरा आगम सांभली ॥ ७ ॥ गुरु सुदरशन मुनि सागर दत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिव पत्त ए। नव सागर बिच अंतरे केवली, जे थया ते सहू वंदिये वलि वलि ॥ ८ ॥ स्वामी अनंत जिन प्रणमिये जसु गणी, समणी पोमा नमूं सुगुरु श्रेयांस मुनि। शीश अशोक भववीय सुप्रभ जति, भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ॥९॥ सागर च्यार नो अंतरो भाखिये, केवली वंदिने शिवसुख चाखिये। जिणवर धर्म अरिष्ट गणधर कहूं, सती श्रमणी शिवा वान्दी शिव सुख लहूं ॥ १०॥ पूर्व भव कृष्ण गुरु ललित सु शिष्य ए, राम प्रणमूं सुदरशण निश दीस ए। बंधव पुरुष सिंह केशव भयो, आस्रव पंच सुमर पुढवी गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बिच आंतरे भाखिये, पूण पल्योपम ऊणो करि दाखिये। तिहां कृष्ण राय ऋषि मघव मुनिवर भयो, जे धन छोडिनै